✳Website : www.kalamlok.com✳



वर्ष - 10 अंक - 182

कलम लोक

बक्सर, सोमवार 02 नवम्बर 2026

पृष्ठ - 8
मूल्य 2 रू.

"हमारे सुख-दुःख का कारण दूसरे व्यक्ति या परिस्थितियाँ नहीं अपितु हमारे अच्छे या बुरे विचार होते हैं।

रामलीला मैदान से राहुल गांधी की चेतावनी

नरेंद्र मोदी कहीं नहीं जा सकते, हम नहीं जाने देंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)।



लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को रामलीला मैदान में एक बड़ी रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सीधी चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी अब कहीं नहीं जा सकते, हम उन्हें जाने नहीं देंगे। राहुल गांधी ने कहा कि देश की आत्मा, लोकतंत्र और संविधान पर हमला हुआ है और वे इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने रैली में सरकार, निर्वाचन आयोग और कुछ बड़े उद्योगपतियों पर जमकर हमला बोला। राहुल गांधी ने दावा किया कि 2024 का चुनाव गलत और चोरी का चुनाव था। उन्होंने कहा कि ज्ञानेश कुमार को पद से हटाया जाएगा और उसके बाद वे मोदी और अमित शाह के खिलाफ खड़े होंगे। राहुल गांधी ने साफ कहा कि यह देश नफरत का नहीं, मोहब्बत का देश होना चाहिए।

राहुल गांधी ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार का नाम लेकर कहा कि उन्हें अपने पद से हटाया जाएगा और वे जेल जाएंगे। उन्होंने कहा कि यह कोई साधारण चोरी नहीं है कि कोई दुकान से छोटी चीज चुरा ले और उसे जेल हो जाए। उन्होंने कहा कि यह सामान्य चोरी नहीं, बल्कि हिंदुस्तान के हर नागरिक की आवाज की चोरी है। उन्होंने कहा कि कानूनी भाषा में इसे 'रेयरेस्ट ऑफ रेयर' केस कहा जाता है। राहुल गांधी ने इसे देशद्रोह बताया। उन्होंने दावा किया कि ज्ञानेश कुमार के बिना नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री नहीं बन सकते थे और अमित शाह गृह मंत्री नहीं बन सकते थे। उन्होंने कहा कि देश को सही पटरी पर लाने का पहला कदम ज्ञानेश कुमार को पद से हटाना है।

मोदी-शाह को चेतावनी

इस दौरान राहुल गांधी ने कहा कि नरेंद्र मोदी कहीं नहीं जा सकते, हम उन्हें जाने नहीं देंगे। उन्होंने कहा कि ज्ञानेश कुमार के बाद वे मोदी और शाह के खिलाफ खड़े होंगे। राहुल गांधी ने कहा कि यह देश नफरत का देश नहीं है। उन्होंने कहा कि वे मोदी, शाह और ज्ञानेश कुमार से नफरत नहीं करते। लेकिन इन तीनों ने देश की आत्मा, लोकतंत्र और संविधान पर हमला किया है। राहुल गांधी ने कहा कि उनके लिए धर्म से ज्यादा जरूरी चीज नागरिक की आवाज है। उन्होंने कहा कि वे संविधान को नष्ट नहीं होने देंगे।

मोहब्बत वाले देश की मांग

राहुल गांधी ने कहा कि इनकी नफरत से देश को नुकसान हो रहा है। उन्होंने कहा कि लोग मांग रहे हैं कि उन्हें मोहब्बत वाला देश चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि वे देश को नफरत से नहीं, बल्कि प्यार और बराबरी वाले रास्ते पर ले जाना चाहते हैं।

राहुल गांधी ने कहा कि इस देश में अंबानी और अडानी का पैसा दो मिनट में माफ हो जाता है, लेकिन गरीब का बेटा अगर कोई छोटा कर्ज लेता है तो उसे जूते मारकर जेल में डाल दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा हिंदुस्तान बिल्कुल नहीं चाहिए। उन्होंने अपना सपना बताया कि वे शिव की बारात जैसा हिंदुस्तान चाहते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे देश में किसान का बेटा मेहनत करे तो उसे उसकी मेहनत का पूरा फल मिले। अगर कोई छात्र 18 घंटे मेहनत करे तो उसे भी उसका फल जरूर मिले। उन्होंने कहा कि वे दो-तीन लोगों का देश नहीं चाहते। राहुल गांधी ने कहा कि अडानी जी जो चाहें वह काम कर रहे हैं और जो सिस्टम चाहें वह ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि हर एयरपोर्ट छीन लिया जा रहा है, रेलवे छीन लिया जा रहा है, बिजली का सिस्टम उड़ाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ड्रोन, हथियार और सारा का सारा देश अडानी का हो रहा है। राहुल गांधी ने साफ कहा कि वे ऐसा देश नहीं चाहते और ऐसा होने नहीं देंगे।

सार-संसार

जर्मनी और फ्रांस में हिंसक प्रदर्शन: लोगों ने दुकानें लूटीं, पुलिस पर पेट्रोल बम फेंके

बर्लिन/पेरिस (एजेंसी)। यूरोप के कुछ देशों में लगातार दूसरे हफ्ते सरकार विरोधी प्रदर्शन जारी हैं। बीते दिन फ्रांस और जर्मनी में सैकड़ों लोग सड़कों पर उतर आए। इस दौरान जर्मनी में प्रदर्शनकारी हिंसक हो गए। उन्होंने दुकानों को लूटा और पुलिस पर पेट्रोल बम फेंके। जेनरेशन जेड रेगेल्ट नामक समूह द्वारा आयोजित किए गए ये प्रदर्शन बर्लिन, फ्रैंकफर्ट और म्यूनिख सहित जर्मनी के 34 शहरों में हुए। इस दौरान हजारों लोग शामिल हुए। सूत्रों ने एक प्रत्यक्षदर्शी के हवाले से बताया कि फ्रैंकफर्ट में कम से कम 2 दुकानों में लूटपाट हुई और कई अन्य को नुकसान पहुंचा। पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद स्थिति पर काबू पाया। हैम्बर्ग में प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेड्स में आग लगा दी। यहां पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर मिर्च स्प्रे का इस्तेमाल किया। बर्लिन में भी प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर बोतलें और अंडे फेंके। कई जगहों पर लोगों ने पुलिस के खिलाफ आतिशबाजी का भी इस्तेमाल किया। फ्रांस में 3.20 लाख प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतरे। पेरिस के पोर्ट डे चैरेंटन के पास प्रदर्शनकारियों ने कांच की बोतलें और पटाखे फेंके, जिसके बाद पुलिस ने स्टन ग्रेनेड और आंसू गैस का इस्तेमाल किया। लियोन में भी प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर पत्थर फेंके, जिसके बाद अधिकारियों ने आंसू गैस के गोले दागे।

मोजतबा खामेनेई बोले- हर खतरे का तत्काल जवाब देंगे

वाशिंगटन/तेहरान (एजेंसी)। ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव के बीच दोनों देशों के शीर्ष नेताओं के तीखे बयान सामने आए हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका को अभी भी ईरान के एक या दो ठिकानों का हिसाब बाकी रखना है और वह इन्हें महज 10 मिनट में नष्ट कर सकता है। वहीं, ईरान के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई ने अमेरिका और इजरायल को नए हमलों की चेतावनी देते हुए अपनी सेना को किसी भी खतरे का तत्काल और प्रभावी जवाब देने का निर्देश दिया है।

ट्रंप ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि अमेरिका ईरान के परमाणु संयंत्रों को पहले ही नष्ट कर चुका है। हालांकि, अभी भी एक या दो ठिकाने ऐसे हैं, जिन्हें निशाना बनाया जाना बाकी है। उन्होंने कहा कि अमेरिका इन ठिकानों को 10 मिनट के भीतर नष्ट करने की क्षमता रखता है। ट्रंप ने पिकैक्स माउंटेन का उल्लेख करते हुए कहा कि इस स्थान पर भी ध्यान देने की जरूरत है और अमेरिका यह कार्रवाई बहुत कम समय में कर सकता है। जब ट्रंप से पूछा गया कि क्या अमेरिका इसी सप्ताह ईरान पर हमला करेगा, तो उन्होंने इस सवाल का सीधा जवाब देने से इनकार कर दिया। उनके इस बयान के बाद दोनों देशों के बीच संभावित सैन्य टकराव को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं।

उत्तरकाशी में केदारताल ट्रेक पर हिमस्खलन, 8 ट्रेकर्स बर्फीले रास्ते में फंसे

उत्तरकाशी (एजेंसी)। उत्तराखंड के उच्च हिमालयी क्षेत्र में स्थित केदारताल ट्रेक पर अचानक आए भीषण हिमस्खलन (एवलांच) ने पर्वतारोहियों और ट्रेकर्स की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। भोजखड़क से आगे भारी हिमस्खलन और ग्लेशियर टूटने की वजह से सात ट्रेकर्स और एक सपोर्टिंग स्टाफ समेत कुल आठ लोग बर्फीले इलाके में फंस गए हैं। गनीमत यह रही कि दल के साथ गए चार लोग जिनमें तीन पोर्टर और एक कुक शामिल हैं- कच्ची ढांग के पास पूरी तरह सुरक्षित खोज लिए गए हैं। बर्फीले तूफान और दुर्गम पहाड़ियों के बीच फंसे बाकी आठ लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए शनिवार सुबह से युद्धस्तर पर साझा राहत व बचाव अभियान शुरू किया गया है।

शादी का जश्न पड़ा फीका, खाना खाते ही दूल्हा-दुल्हन समेत 31 मेहमान अस्पताल में भर्ती

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई के नाहुर वेस्ट इलाके में एक शादी समारोह के दौरान फूड पॉइजनिंग की आशंका के चलते दूल्हा-दुल्हन समेत कम से कम 31 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस अभय सिंह देशमुख के अनुसार, यह शादी समारोह 1 नवंबर को नाहुर वेस्ट के नालंदा बुद्ध विहार हॉल में आयोजित किया गया था, जिसमें लगभग 400 से 500 मेहमान शामिल हुए थे।

उन्होंने बताया कि आखिरी राउंड में खाना खाने वाले लगभग 70 से 100 मेहमानों की तबीयत खराब हो गई। बीमारी और बेचैनी की शिकायत के बाद, कई मेहमानों को इलाज के लिए नजदीकी अस्पतालों में ले जाया गया। अधिकारियों ने बताया कि प्रभावित लोगों में से 22 को मुलुंड के एमटी अग्रवाल अस्पताल में, चार छोटे बच्चों को मुलुंड के कामगार अस्पताल में और पांच अन्य लोगों को विक्रोली के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अधिकारियों ने कहा, 'फिलहाल सभी मरीजों की हालत स्थिर है और उनका इलाज चल रहा है। संबंधित एजेंसियां स्थिति पर नजर रख रही हैं और जरूरी कार्रवाई कर रही हैं।' अस्पताल में भर्ती एक व्यक्ति ने बताया, 'शादी नालंदा बुद्ध विहार हॉल में हुई थी। अंत में, जब हम खाना खाने बैठे, तो दूल्हा-दुल्हन समेत सभी की तबीयत खराब हो गई। हमारे पड़ोस के लगभग 30 से 40 लोग वहां मौजूद थे और वे सभी बीमार पड़ गए।

पूर्व सीजेआई के बेटों को सुप्रीम कोर्ट से झटका

आयकर विभाग फिर खंगालेगा कमाई का हिसाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश के बेटों को सुप्रीम कोर्ट से झटका लगा है। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में आयकर विभाग से जुड़े एक मामले में पूर्व सीजेआई के बेटों के खिलाफ इनकम टैक्स विभाग की जांच को सही ठहराया दे दी है। शीर्ष अदालत ने इस दौरान दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश को बरकरार रखा है। इस आदेश के मुताबिक आयकर विभाग को पूर्व मुख्य न्यायाधीश वाई के सभरवाल के बेटों की कमाई का मूल्यांकन करने की मंजूरी दी गई थी।

एक रिपोर्ट के मुताबिक सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई करते हुए जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस के विनोद चंद्रन की पीठ ने सभरवाल भाइयों की अपील को खारिज कर दिया। SC ने कहा कि आयकर विभाग ने 2015 में जो नोटिस जारी किया वह पूरी तरह से वैध था। सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने वित्तीय लेन-देन की डिटेल दर्ज करते हुए कहा, 'हमारी यह स्पष्ट राय है कि 31 मार्च 2015 को आयकर अधिनियम की धारा 148 के तहत एसेसिंग ऑफिसर द्वारा जारी नोटिस पूरी तरह वैध था। यह नोटिस ठोस तथ्यों और DGIT इनवेस्टिगेशन यूनिट नोएडा की रिपोर्ट पर आधारित था। 'रिपोर्ट के मुताबिक जांच में यह सामने आया कि दो कंपनियों, 'पवन इम्पेक्स (पी) लिमिटेड' और 'एसवीआईआईटी सॉफ्टवेयर (पी) लिमिटेड' के शेयरों का मूल्य उनकी जमीन और इमारतों की लागत की तुलना में काफी बढ़ाकर दिखाया गया था। बताया जा रहा है कि चेतन सभरवाल और उनके भाई नितिन सभरवाल ने दो अन्य शेयरधारकों के साथ मिलकर 'GYS रियल एस्टेट प्रा लि' के साथ शेयर बिक्री समझौता किया था।

न्याय पाने के लिए दिल्ली आने की नहीं पड़नी चाहिए जरूरत, सीजेआई सूर्यकांत का बड़ा बयान



नई दिल्ली (एजेंसी)। चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने कहा है कि न्यायिक प्रक्रिया को और अधिक तेज, पारदर्शी और प्रभावी बनाने की जरूरत पर विचार किया जाना चाहिए। हाई कोर्ट में लंबित मामलों की जल्द सुनवाई के लिए लगातार सुप्रीम कोर्ट का रुख करने वाले याचिकाकर्ताओं की संख्या बढ़ रही है। यह इस बात पर सोचने का मौका है कि न्याय व्यवस्था में सुधार की कितनी गुंजाइश है। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या जरूरी मामलों की पहचान बेहतर तरीके से की जा सकती है? क्या सुनवाई की तारीख तय करने की प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और भरोसेमंद बनाया जा सकता है? क्या तकनीक की मदद से ऐसे मामलों को प्राथमिकता दी जा सकती है, जिनमें देरी से किसी पक्ष को ऐसा नुकसान हो सकता है, जिसकी भरपाई संभव न हो।

सीजेआई ने रविवार को कोच्चि में केरल हाई कोर्ट की स्थापना के 75 साल पूरे होने पर आयोजित समारोह में यह बात कही। सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने हमेशा हाई कोर्ट की संस्थागत स्वतंत्रता और अपने मामलों की सुनवाई का क्रम तय करने के अधिकार का सम्मान किया है। इसके बावजूद हाई कोर्ट में लंबित मामलों की जल्द सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट पहुंचने की बढ़ती प्रवृत्ति पर विचार करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति को समय पर न्याय पाने के लिए दिल्ली तक आने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए। भारत में संवैधानिक न्याय व्यवस्था सिर्फ नई दिल्ली तक सीमित नहीं है।

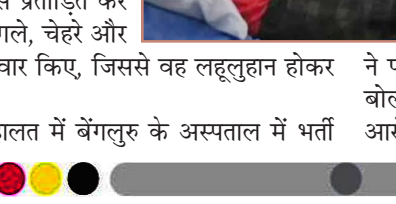
केरल हाई कोर्ट के 75 साल के सफर का जिक्र करते हुए ष्टछ्ठड्ड ने कहा कि केरल राज्य और हाई कोर्ट दोनों की स्थापना 1956 में हुई थी। पिछले सात दशकों में दोनों का विकास एक-दूसरे से जुड़ा रहा है। इस दौरान हाई कोर्ट ने राज्य के संवैधानिक विकास में अहम भूमिका निभाई। इसके फैसलों ने नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करने के साथ यह भी सुनिश्चित किया कि सरकारी शक्तियों का इस्तेमाल कानून के दायरे में हो। उन्होंने कहा कि केरल हाई कोर्ट की न्यायिक परंपरा राज्य के गठन से भी पुरानी है। मौजूदा केरल क्षेत्र में पहले त्रावणकोर और कोचीन की अदालतें थीं। इसके बाद 1887 में त्रावणकोर हाई कोर्ट और 1949 में त्रावणकोर-कोचीन हाई कोर्ट की स्थापना हुई। इन संस्थाओं ने मौजूदा हाईकोर्ट की नींव तैयार करने में योगदान दिया।

अदालतों की जिम्मेदारी नागरिक अधिकारों की रक्षा करना

सूर्यकांत ने कहा, 'देशभर में मौजूद 25 हाई कोर्ट इसकी मजबूती का आधार हैं। इन अदालतों की जिम्मेदारी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना और कानून का शासन बनाए रखना है। हाई कोर्ट स्थानीय लोगों की भाषा, क्षेत्रीय समस्याओं और सरकारी फैसलों के असर को बेहतर तरीके से समझते हैं। संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत उन्हें अलग-अलग कानूनी, प्रशासनिक और सरकारी मामलों में प्रभावी राहत देने का अधिकार मिला है।' उन्होंने कहा कि कई बार न्याय मिलने का फैसला अंतिम सुनवाई से पहले इस बात पर निर्भर करता है कि जरूरत के समय अदालत ने अंतरिम राहत दी या नहीं।

पुलिस थाने में ड्यूटी के दौरान 20 साल की महिला के साथ रेप, 15 पुलिसकर्मियों को किया सस्पेंड

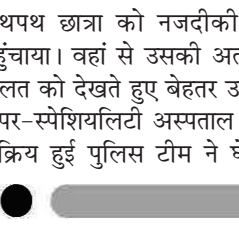
सरायकेला (एजेंसी)। झारखंड के एक पुलिस थाने के अंदर महिला के साथ कथित रेप के मामले में रविवार को एक पुलिस सब-इंस्पेक्टर और एक कांस्टेबल को गिरफ्तार किया गया है। इस मामले में अब तक गम्हरिया थाना प्रभारी समेत 15 पुलिसकर्मियों को निलंबित किया है। 29 अक्टूबर की रात हुई इस घटना के बाद, शनिवार को एक कांस्टेबल को गिरफ्तार किया गया था। वहीं, ड्यूटी में लापरवाही बरतने के आरोप में गम्हरिया पुलिस थाने के प्रभारी अधिकारी समेत 15 पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया गया।



घटना की जांच के लिए, सरायकेला-खरसावां के पुलिस अधीक्षक मनोज स्वर्गियारी के आदेश पर घटना के अगले दिन ही एक विशेष जांच दल का गठन किया गया था। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, शनिवार को सौंपी गई SIT की रिपोर्ट और SP के निर्देश के आधार पर, रविवार को सस्पेंड किए गए सब-इंस्पेक्टर मनोज साहू और कांस्टेबल संतोष राय को गिरफ्तार कर लिया गया। इससे एक दिन पहले, SP ने ड्यूटी में लापरवाही बरतने के आरोप में गम्हरिया पुलिस थाने के प्रभारी अधिकारी (इंस्पेक्टर) संजय प्रसाद, सब-इंस्पेक्टर मनोज साहू और अनिरुद्ध सिंह, हवलदार मुनेश्वर कुमार और कांस्टेबल संतोष राय को सस्पेंड कर दिया था। बयान में कहा गया है कि रविवार को स्क्क ने ड्यूटी में लापरवाही, सतर्कता की कमी और पुलिस की छवि खराब करने के आरोप में सब-इंस्पेक्टर अजय पासवान और ललन रविदास, असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर विशु उरांव, मुकेश कुजूर, मुकेश रविदास और सीताराम सिंह पाहन, हवलदार पीतांबर महतो और बहादुर हांसदा, तथा कांस्टेबल मनोज गोराई को सस्पेंड कर दिया।

जम्मू-कश्मीर सीएम उमर अब्दुल्ला ने पत्रकार निधि राजदान से किया निकाह

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और जानी-मानी वरिष्ठ पत्रकार निधि राजदान एक निजी समारोह में शादी के बंधन में बंध गए हैं। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' (X) पर शादी की खूबसूरत तस्वीरें साझा करते हुए इस नए सफर की औपचारिक जानकारी दी। तस्वीरों के साथ अंगूठी की इमोजी साझा करते हुए उन्होंने निधि राजदान को टैग किया और लिखा कि कल से एक नई खूबसूरत यात्रा की शुरुआत हुई है। राजनीति और मीडिया जगत के दो बेहद चर्चित चेहरों के इस परिणय सूत्र में बंधने के बाद उन्हें सोशल मीडिया पर चारों तरफ से बधाइयों का तांता लग गया है।



यह दोनों ही शख्सियतों के जीवन की दूसरी शादी है। भारतीय राजनीति के प्रमुख चेहरों में शुमार 54 वर्षीय उमर अब्दुल्ला की पहली शादी पायल नाथ से हुई थी। हालांकि, लंबे समय तक अलग रहने और लंबी कानूनी प्रक्रिया के बाद कुछ समय पहले ही दोनों के बीच औपचारिक तलाक हुआ था। वहीं, दूसरी ओर 48 वर्षीय पत्रकार निधि राजदान की भी यह दूसरी शादी है। इससे पहले उनका विवाह जाने-माने पत्रकार और लेखक नीलेश मिश्रा के साथ वर्ष 2005 में हुआ था, लेकिन निजी कारणों के चलते यह रिश्ता महज दो साल ही चल सका और 2007 में दोनों ने आपसी सहमति से तलाक ले लिया था। तलाक के बाद निधि ने अपना पूरा ध्यान अपने पत्रकारिता करियर पर केंद्रित कर रखा था। भारतीय टेलीविजन पत्रकारिता का जाना-पहचाना नाम रहीं निधि राजदान मूल रूप से कश्मीरी पंडित परिवार से ताल्लुक रखती हैं। उनके पिता कृष्ण राजदान भी वरिष्ठ पत्रकार रह चुके हैं। निधि ने दिल्ली के प्रतिष्ठित लेडी श्रीराम कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद भारतीय जनसंचार संस्थान से पत्रकारिता की डिग्री हासिल की।

'प्यार' की जिद में भांजी पर चलाई आरी, क्लासरूम में दरिंदगी करने वाला निकला रिश्ते में मामा

अमरावती (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले से एक रोंगटे खड़े कर देने वाला मामला सामने आया है, जहां एक सरकारी स्कूल के क्लासरूम में घुसकर 10वीं की नाबालिग छात्रा पर इलेक्ट्रिक कटर आरी से जानलेवा हमला कर दिया गया। पुलिस जांच में आरोपी को लेकर बेहद चौंकाने वाला खुलासा हुआ है।



वारदात को अंजाम देने वाला युवक रिश्ते में पीड़िता का मामा लगता है, जो तथाकथित एकतरफा 'प्यार' का ढोंग रचकर लंबे समय से छात्रा को मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहा था। आरोपी ने छात्रा के गले, चेहरे और पीठ पर आरी से ताबड़तोड़ वार किए, जिससे वह लहूलुहान होकर मौके पर ही गिर पड़ी।

छात्रा को बेहद गंभीर हालत में बेंगलुरु के अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां वह जिंदगी की जंग लड़ रही है। यह खौफनाक वारदात अनंतपुर के रपटाडू स्थित जिला परिषद (जेडपी) हाई स्कूल में शनिवार सुबह करीब 10:30 बजे घटी। उस समय 15 वर्षीय पीड़िता कक्षा में अन्य सहपाठियों के साथ मौजूद थी और शिक्षक क्लास ले रहे थे।

इसी दौरान श्री सत्य साईं जिले के नागालुरु निवासी आरोपी हेमंत उर्फ डुम्मू अचानक हाथ में चालू इलेक्ट्रिक आरी लेकर क्लास में दाखिल हुआ। जब तक शिक्षक या छात्र कुछ समझ पाते, आरोपी ने पीड़िता पर झपटते हुए उसके गले और पीठ पर आरी से हमला बोल दिया। पास बैठी एक अन्य छात्रा ने बहादुरी दिखाते हुए जब आरोपी को रोकने का प्रयास किया, तो वह भी इस हमले में घायल हो गई। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी तेजी से स्कूल परिसर से बाहर भाग निकला। पुलिस और पीड़िता के परिजनों के अनुसार, आरोपी हेमंत अनंतपुर में अपनी बड़ी बहन के घर पर ही रह रहा था और रिश्ते में नाबालिग का मामा लगता था। परिवार का आरोप है कि वह पिछले काफी समय से छात्रा का पीछा कर रहा था और एकतरफा प्रेम का दावा कर उसे परेशान कर रहा था। हमले के तुरंत बाद स्कूल प्रशासन और स्थानीय लोगों ने खून से लथपथ छात्रा को नजदीकी अस्पताल पहुंचाया। वहां से उसकी अत्यंत नाजुक हालत को देखते हुए बेहतर उपचार के लिए फौरन बेंगलुरु के एक सुपर-स्पेशियलिटी अस्पताल रेफर कर दिया गया। घटना के बाद सक्रिय हुई पुलिस टीम ने घेराबंदी करते हुए आरोपी हेमंत को गिरफ्तार कर लिया है और उससे गहन पूछताछ की जा रही है। इस वीभत्स घटना पर आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने गहरा दुख और कड़ा आक्रोश व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर बयान जारी करते हुए कहा कि स्कूल के सुरक्षित माहौल में बच्चियों पर इस तरह का बर्बर हमला करने वाले अपराधियों के लिए सभ्य समाज में कोई जगह नहीं है। उन्होंने पुलिस प्रशासन को आरोपी के खिलाफ सख्त कानूनी धाराओं के तहत त्वरित कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि वह स्वयं छात्रा के स्वास्थ्य की निगरानी कर रहे हैं और अस्पताल प्रबंधन को पीड़िता को सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर हर संभव उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के आदेश दिए गए हैं।



चचरी पुल बहा और पीपा पर आवाजाही बंद, बेमौसम बारिश से बागमती उफनाई; लाखों लोग प्रभावित

औराई/कटरा (संवाददाता)। बिहार में बेमौसम बारिश से बागमती नदी के जलस्तर में बढ़ोतरी हो गई है। मुजफ्फरपुर जिले में औराई-कटरा इलाके में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। शनिवार की देर रात से रविवार दोपहर तक नदी के जलस्तर में करीब दो से ढाई फीट बढ़ गई। हालांकि, शाम से जलस्तर स्थिर बताया जा रहा है। फिलहाल, औराई के कटौझा में बागमती खतरे के निशान से 40 सेमी ऊपर बह रही है। बाढ़ के कारण जहां औराई के मधुबन प्रताप में बनाया जा रहा चचरी पुल बह गया है। वहीं, कटरा के बकुची में नदी पर बना पीपा पुल के दोनों तरफ एप्रोच मार्ग पर पानी चढ़ने से वाहनों का परिचालन एक बार फिर ठप हो गया है।



औराई के मधुबन प्रताप में इससे पहले आई बाढ़ में भी चचरी पुल ध्वस्त हो गया था। ग्रामीण आवागमन के लिए फिर से चचरी पुल बनाना शुरू किया था। डेढ़ सौ फीट तक निर्माण हो चुका था, लेकिन फिर पानी बढ़ने से अर्धनिर्मित पुल बह गया। वहीं, अतरार में औराई-गरहां सड़क पुल निर्माण कंपनी द्वारा बागमती की दक्षिणी उपधारा में बनाए गए लोहे के अस्थायी पुल पर भी दबाव बढ़ गया है, जिससे निर्माण कार्य फिर बाधित हो गया है। औराई-कटरा सीमा पर मोहनपुर स्लुईस गेट खुला होने से बागमती का रिवर्स पानी पश्चिम से पूरब की ओर औराई व कटरा के चौर में फैलने लगा है। देर शाम तक इसे बंद करने का प्रयास चलता रहा। कई जगह चौर में पानी फैलने से तैयार धान की फसल को नुकसान पहुंचने का अंदेशा है। इधर, कटरा के बकुची में पीपा पुल के दोनों तरफ एप्रोच पथ पर पानी चढ़ने के बाद राहगीर जान जोखिम में डालकर इसके किसी तरह से पैदल पार कर रहे हैं। पुल के उत्तरी भाग में पानी चढ़ने से प्रखंड की उत्तरी 14 पंचायतों के लाखों लोगों की आवाजाही बाधित है। बरैठा स्थित उत्तरी तटबंध के स्लुईस गेट से पानी लखनदेई होते हुए खंगूरा, पहसौल, डुमरी, सहनौली, धोबौली में तेजी से फैल रहा है। बकुची निवासी महेशी भगत, श्याम महतो ने बताया कि पिछले साल भी अंत में आई बाढ़ से धान की फसल नष्ट हो गई थी और रबी की बुआई समय पर नहीं हो सकी थी।

इस बार भी वही डर सता रहा है। पहले अर्नब तूफान से धान को नुकसान हुआ था, अब बेमौसम बाढ़ से तेलहन, दलहन की बुआई और गेहूं समेत रबी फसल पर ग्रहण लग गया है। औराई में सीतामढ़ी से आने वाली कई नदियों, जोंका और बिना तटबंध वाली लखनदेई के कारण हर साल खरीफ फसल जोखिम में रहती है। किसान संगठनों ने व्यापक क्षति को देखते हुए सरकार से मुआवजे की मांग की है।

मां के अवैध संबंध का विरोध करता था बेटा, प्रेमी से बोल करवा दी हत्या; बिहार में सनसनीखेज वारदात

आरा (संवाददाता)। बिहार में एक मां ने अपने ही बेटे की हत्या करवा दी। दरअसल यह बेटा अपनी मां के अवैध संबंधों का विरोध करता था। जिसके बाद मां ने अपने प्रेमी से बोल कर बेटे की हत्या करवा दी। हैरान कर देने वाली यह वारदात भोजपुर जिले के आरा की है। यहां तरारी थाना क्षेत्र के दुर्गपुर गांव निवासी आठवीं के छात्र मोहित राज की हत्या की गुत्थी पुलिस ने सुलझा ली है। अवैध संबंध का विरोध करने पर मां की ओर से ही उसकी हत्या करा दी गयी है। उनके इशारे पर प्रेमी संतोष कुमार सिंह ने अन्य लोगों के साथ मिलकर मोहित राज की हत्या करा दी। पुलिस ने मोहित की मां मानती देवी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस की पूछताछ में मानती देवी ने अपना गुनाह भी कबूल कर लिया है। उसके प्रेमी सहित हत्या में शामिल अन्य लोगों की गिरफ्तारी को ले पुलिस की ओर से छापेमारी की जा रही है। पीरो एसडीपीओ कन्हैया कुमार की ओर से रविवार को प्रेस वार्ता यह जानकारी दी गई।



उन्होंने बताया कि दुर्गपुर गांव निवासी सत्येंद्र सिंह उर्फ अलगू के 14 वर्षीय पुत्र मोहित राज की मंगलवार की रात पीटकर हत्या कर दी गयी थी। उसका शव बुधवार की सुबह करथ गांव स्थित बिरहर करहा के पास से बरामद किया गया था। सत्येंद्र सिंह उर्फ अलगू के बयान पर प्राथमिकी दर्ज कर घटना की छानबीन की जा रही थी। तकनीकी व वैज्ञानिक और मानवीय जांच के क्रम में यह बात सामने आयी कि मोहित राज की मां का गांव के ही संतोष कुमार सिंह नामक एक व्यक्ति से अवैध संबंध चल रहा था। मोहित इसका विरोध करता था, जिसे लेकर दोनों के बीच विवाद चल रहा था। ऐसे में प्रेम में बाधा बन रहे बेटे को हटाने के लिए मां मानती देवी की ओर से अपने प्रेमी के साथ मिलकर मोहित राज को रास्ते से हटाने की साजिश रची गयी। मां मानती देवी के इशारे पर उसके प्रेमी संतोष कुमार सिंह की ओर से अन्य लोगों के साथ मोहित राज की हत्या कर दी गयी। मामले में त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करते हुए मोहित राज की मां मानती देवी को गिरफ्तार कर लिया गया।

एसडीपीओ ने बताया कि हत्या में शामिल अभियुक्तों की पहचान कर ली गयी है। मानती देवी के प्रेमी संतोष कुमार सिंह और अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी को लेकर छापेमारी की जा रही है। बता दें कि मंगलवार 27 अक्तूबर की शाम दुर्गपुर गांव निवासी मोहित राज एटीएम से रुपये निकालने करथ गांव गया था। बुधवार की सुबह उसका शव बरामद किया गया था। उसके पिता सत्येंद्र सिंह उर्फ अलगू ने बताया था कि मोहित मंगलवार की शाम सात बजे करथ गांव स्थित एटीएम बूथ में रुपये निकालने गया था। एटीएम से उसने छह हजार रुपये की निकासी की और घर लौट रहा था।

पटना में विवादित जमीन पर निर्माण रोकने गए दारोगा को कुत्ते से कटवाया, केस दर्ज

पटना (संवाददाता)। पटना में दबंगों ने पुलिस को खुलेआम चुनौती दी है। इस बार एक दारोगा को कुत्ते से कटवाया गया। बताया जा रहा है कि बुद्धा कॉलोनी थानांतर्गत उत्तरी मंदिरी में एक विवादित जमीन पर न्यायालय के आदेश के विरुद्ध किए जा रहे निर्माण कार्य को रुकवाने पहुंचे दारोगा को आरोपित ने पालतू कुत्ते से कटवा कर घायल कर दिया। पीड़ित की शिकायत पर बुद्धा कॉलोनी थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई है। थानेदार दिनेश कुमार के मुताबिक, कुत्ते ने पीड़ित के बायें हाथ में काट लिया था। मामला दर्ज कर लिया गया है।



आरोपित के घर दो बार पुलिस बल को भेजा गया लेकिन वो नहीं मिला। जानकारी के मुताबिक भोजपुर के बड़हरा थाना क्षेत्र के बखोरापुर निवासी दारोगा विकास कुमार सिंह बुद्धा कॉलोनी थाने पदस्थापित हैं। उन्होंने आवेदन में बताया कि बीते 24 अक्तूबर की दोपहर थानाध्यक्ष ने फोनकर सूचना दी कि नवीन सिन्हा पथ सुधा बूथ के पास विवादित जमीन है। न्यायालय के स्थगनादेश के बावजूद कोई कार्य कर रहा है। मौके पर उन्होंने देखा कि नई ईंट गिरी हुई है। वहीं पर संजय कुमार उर्फ पिंकू साव अपने मित्र संजय जायसवाल और पालतू कुते के साथ बैठा था। पूछताछ की तो पिंकू साव अपने कुत्ते को इशारा कर मेरे ऊपर हमला करवा दिया।

इधर बाढ़ में आवारा कुत्तों का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है। दो दिनों में आवारा कुत्तों ने 36 लोगों को काटकर जख्मी कर दिया है। घायलों में अधिकतर बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग शामिल हैं। जानकारी के अनुसार, शनिवार को बाढ़ स्टेशन रोड में एक कुत्ते ने अचानक हमला कर छह लोगों को घायल कर दिया। नगर परिषद के वार्ड सदस्य देवराज शर्मा उर्फ भोला शर्मा भी इसके शिकार हो गए। वहीं रविवार को दो दर्जन से ज्यादा लोगों को कुत्तों ने काटकर गंभीर रूप से जख्मी किया। मलाही गांव में छह वर्षीय डोमन कुमार, पांच वर्षीय अभिराज कुमार, आठ वर्षीय सोहन कुमार और 12 वर्षीय परमित कुमार को कुत्तों ने काटकर घायल कर दिये हैं।

वहीं अकबरपुर, जलगोविंद, चकजलाल, पोथमा पर, डुमरिया, लेमुआबाद, लंगरपुर, सलालपुर, बुढाउद्दीन चक और सिकंदरा गांव में भी कुत्तों का कहर जारी है। कई पागल कुत्ते बच्चों को अपना शिकार बना रहे हैं।

सभी घायलों का इलाज बाढ़ अनुमंडल अस्पताल में कराया गया, जहां तीन बच्चों की हालत चिंताजनक होने पर उन्हें बेहतर इलाज के लिए पीएमसीएच रेफर किया गया है। इधर बाढ़ अनुमंडल अस्पताल में प्रतिदिन 35 से 40 लोगों को ओपीडी और इमरजेंसी में रेबीज के टीके लगाए जा रहे हैं। राणा बीघा पीएचसी से भी 22 मरीजों को रेफर किया गया है।

चंबल एक्सप्रेस में 2.92 करोड़ की लूट

गया जी (संवाददाता)। हावड़ा-इंदौर चंबल एक्सप्रेस में सफर कर रहे सोना कारोबारी के कर्मचारी से डीआरआई अधिकारी बनकर करीब 2.92 करोड़ रुपये मूल्य के सोना लूट हुई। इस मामले में पुलिस ने बरेली से तीन अपराधियों को गिरफ्तार किया है। अपराधियों के ठिकानों पर की गई छापेमारी में 612.74 ग्राम सोना भी बरामद किया गया है। दो अन्य आरोपित फरार है, जिनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस उत्तर प्रदेश में छापेमारी कर रही है।

सोना लूट की यह घटना गया- पीपीडीयू रेलखंड के भभुआ रोड रेलवे स्टेशन पर 22 अक्तूबर को हुई थी। बरेली के कारोबारी संजय कुमार खंडेलवाल की फर्म संकल्प गोल्ड प्राइवेट लिमिटेड का कर्मचारी संजीव चौहान कोलकाता से चंबल एक्सप्रेस से बरेली लौट रहा था। इसी दौरान भभुआ रोड स्टेशन पर अपराधियों ने खुद को डीआरआई अधिकारी बताकर उसे ट्रेन से उतार लिया। इसके बाद दो किलो छह सौ ग्राम सोना और मोबाइल लेकर फरार हो गए। अपराधियों ने कर्मचारी को जेल भेजने और उसके मालिक के घर छापेमारी करने की धमकी देकर डराया था।

पटना में इस सीजन डेंगू से तीसरी मौत, 23 साल के युवक ने PMCH में तोड़ा दम; संक्रमितों की संख्या 500 पार

पटना (संवाददाता)। राजधानी पटना में इस सीजन में डेंगू से तीसरी मौत हुई है द्य बुद्ध मार्ग स्थित कमला नेहरू नगर निवासी 23 वर्षीय मंजीत कुमार ने पीएमसीएच में इलाज के दौरान दम तोड़ा। मंजीत करीब एक महीने से बुखार से पीड़ित था। शुक्रवार को तबीयत बिगड़ने पर उसे पीएमसीएच में भर्ती कराया गया, जहां देर रात मौत हो गई। हालांकि, डेंगू से मौत होने की आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है। स्थानीय लोगों ने दावा किया कि कमला नेहरू नगर में डेंगू से यह दूसरी मौत है। इससे पहले 10 सितंबर को 28 वर्षीय मोहम्मद खुशियाल की मौत हुई थी।

इधर, जिला डेंगू-मलेरिया पदाधिकारी सुभाष प्रसाद के अनुसार, पटना में अब तक डेंगू संक्रमितों की संख्या 537 के पार पहुंच चुकी है। पिछले 24 घंटे में पांच नए मरीजों में संक्रमण की पुष्टि हुई है। सिविल सर्जन डॉ. योगेन्द्र प्रसाद मंडल ने बताया कि प्रभावित इलाकों में टीमें तैनात हैं। बुखार से पीड़ित लोगों की पहचान के लिए फीवर सर्वे कराया जा रहा है। संदिग्ध मरीजों की जांच की जा रही है।



बारिश और ठंडी हवा चलने के कारण मौसम में हुए अचानक बदलाव के कारण खांसी, सर्दी, ब्रोंकाइटिस और अस्थमा का अटैक बढ़ने का खतरा बढ़ गया है। साथ ही वायरल बुखार और डेंगू का संक्रमण बढ़ सकता है। डॉक्टरों का कहना है कि मौसम में अचानक हुआ यह बदलाव सेहत पर भारी पड़ सकता है। इसलिए सेहत को लेकर सतर्क रहें। खासतौर पर मधुमेह, हाइपरटेंशन से पीड़ित लोग, बच्चे व बुजुर्गों को अधिक सतर्क रहने की जरूरत है। डॉक्टरों ने कहा कि बारिश होने के कारण एक तो तापमान अचानक ज्यादा कम हो गया है। इस वजह से ठंड बढ़ गई है। ऐसे में जिन लोगों में शरीर के तापमान को नियंत्रित करने की क्षमता कमजोर है उनकी समस्या बढ़ सकी है। मौसम में हुए अचानक बदलाव से एलर्जी की समस्या बढ़ जाती है। इस वजह से ब्रोंकाइटिस व अस्थमा के मरीजों में सांस की परेशानी बढ़ने लगती है। इसलिए सांस के पुराने मरीजों को अपनी दवाओं का ध्यान रखना चाहिए और घर में ही रहना चाहिए। बारिश होने के कारण जगह-जगह पानी जमा होने से मच्छरों की उत्पत्ति बढ़ सकती है।

बिहार में बर्थडे पार्टी के बहाने महिला डांसर को बुला कर गैंगरेप, थाने से कुछ ही दूरी पर वारदात; 4 अरेस्ट

बिहारशरीफ (संवाददाता)। बिहार में महिला डांसर से हैवानियत किए जाने का मामला सामने आया है। बिहारशरीफ जिले के लहेरी थाने क्षेत्र में शनिवार की रात बर्थ डे पार्टी के बहाने बुलायी गयी डांसर से गैंगरेप करने का मामला सामने आया है। किराये के मकान में यह घटना हुई। पीड़िता ने दो युवकों पर दुष्कर्म का आरोप लगाया है। सूचना पाकर रविवार सुबह मौके पर पहुंची पुलिस ने पीड़िता को सुरक्षा में ले लिया। इस मामले में आठ आरोपितों के खिलाफ एफआईआर करायी गयी है। इनमें चार को गिरफ्तार कर लिया गया। किराये के मकान में कुछ लड़के रहते हैं।

मकान मालिक नहीं रहते हैं। इन्हीं लड़कों में से एक का बर्थ डे था। बिचौलिये के माध्यम से दो डांसर को बुलाया गया था। पीड़िता ने बताया कि जब वह कमरे में पहुंची तो पहले से सात लड़के मौजूद थे। डांस के दौरान ही एक लड़की वहां से निकल गई। इसके बाद दो लड़कों ने उससे दुष्कर्म किया। उसने विरोध करने का प्रयास किया तो डरा-धमका कर उसे चुप करा दिया। सदर डीएसपी-वन अमरनाथ ने बताया कि पीड़िता की मेडिकल जांच कराई गई है। एफएसएल की टीम ने भी साक्ष्य जमा किये हैं। अन्य आरोपितों की तलाश छापेमारी जारी है।

नालंदा जिले में लहेरी थाना क्षेत्र के शिवपुरी मोहल्ले में शनिवार की रात बर्थ डे पार्टी के बहाने बुलायी गयी डांसर से गैंगरेप करने का मामला सामने आने के बाद पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठने लगे हैं। सबसे हैरानी की बात यह है कि थाने से महज कुछ दूरी पर ही नाच का प्रोग्राम चल रहा था, पर पुलिस को भनक भी नहीं लगी। इधर, सदर डीएसपी-वन अमरनाथ ने बताया कि सुबह सात बजे पुलिस को घटना की जानकारी मिली। सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष अनिल कुमार पांडेय व अन्य पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे। पीड़िता को पुलिस ने अपनी सुरक्षा में ले लिया। डीएसपी ने बताया कि इस मामले में अन्य आरोपितों को गिरफ्तार करने का प्रयास किया जा रहा है। इस मामले में कई राज खुलने की संभावना है।

किराये पर रहकर क्या करते थे युवक

स्थानीय लोग इस मामले में तरह-तरह के सवाल खड़े कर रहे हैं। उनकी मानें तो पढ़ने के लिए किराये पर रहने वाले लड़के इतना खर्च कैसे कर रहे हैं। डांसर बुलाने व बर्थ डे पार्टी में अच्छे-खासे रुपये खर्च हुए। पढ़ने वाले लड़के इतने रुपये कहां से ला सकते हैं। पुलिस अभी गिरफ्तार आरोपितों के नामों का खुलासा नहीं कर रही है।

बनारस से कोलकाता जा रहे थे 1 युवक, 2 युवतियां, पुलिस को देख भागने लगे; ड्रेस और बैग से निकले 66.5 लाख

सासाराम (संवाददाता)। एनएच-19 पर शिवसागर के पास पुलिस ने एक एसयूवी से 66 लाख 50 हजार रुपये नगद बरामद करने के साथ-साथ परिवार के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है। ये रुपये लेकर वाराणसी से कोलकाता जा रहे थे। इनमें पति-पत्नी समेत एक अन्य महिला शामिल है। पुलिस जांच के दौरान गाड़ी मोड़कर भागने की कोशिश करने पर तीनों पकड़े गए। नगदी के वैध स्रोत का संतोषजनक ब्योरा नहीं देने पर आयकर विभाग को सूचना दी गई है।

एसडीपीओ वन विप्लव कुमार ने रविवार की शाम प्रेसवार्ता में बताया कि शनिवार रात करीब सवा आठ बजे शिवसागर थानाध्यक्ष रितेश कुमार को गुप्त सूचना मिली कि वाराणसी की ओर से आ रही एक एसयूवी में भारी मात्रा में नगदी लेकर कुछ लोग कोलकाता जा रहे हैं। इसके बाद विशेष टीम ने एनएच-19 पर वाहनों की जांच शुरू की। इसी दौरान वाराणसी की ओर से आ रही एक्सयूवी-300 को रुकने का इशारा किया गया। पुलिस को देख चालक ने गाड़ी मोड़कर भागने का प्रयास किया, लेकिन टीम ने तत्परता दिखाते हुए उसे पकड़ लिया। तलाशी लेने पर कुल 66.50 लाख रुपये बरामद हुए। चालक चंदन कुमार (32 वर्ष) के पास रखे झोले से 4.50 लाख रुपये मिले। वहीं, पूनम कुमारी (34 वर्ष) के कपड़ों में छिपाकर रखे 36 लाख और ज्योति कुमारी (30 वर्ष) के पास से 26 लाख रुपये बरामद किए गए। तीनों नगर थाना क्षेत्र के नवरतन बाजार सासाराम के रहने वाले हैं। ज्योति चंदन की पत्नी है, जबकि पूनम के पति का नाम परमानंद सोनी है।

73 हजार करोड़ रुपये से बनेगा गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस-वे, बिहार के 8 जिलों से होकर गुजरेगा; 4 राज्यों को मिलेगा बड़ा फायदा

पटना (संवाददाता)। गोरखपुर से सिलीगुड़ी तक बनने वाले महत्वाकांक्षी एक्सप्रेस-वे की निर्माण लागत बढ़कर अब 73 हजार करोड़ रुपये हो गई है। इस महत्वपूर्ण सड़क परियोजना से उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम के बीच आवागमन पहले की तुलना में अधिक सुगम, तेज और सुविधाजनक होने की उम्मीद है। खास बात यह है कि यह एक्सप्रेस-वे बिहार के आठ जिलों से होकर गुजरेगा, जिससे सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क संपर्क मजबूत होने के साथ आर्थिक और व्यावसायिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा। परियोजना को लेकर भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने संशोधित विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर ली है। अब इसे सार्वजनिक निजी भागीदारी मूल्यांकन समिति (पीपीपी-एसी) के समक्ष प्रस्तुत करने की तैयारी है। उम्मीद जताई जा रही है कि नवंबर महीने में होने वाली समिति की बैठक में परियोजना को मंजूरी मिल सकती है। इसके बाद प्रस्ताव को केंद्रीय कैबिनेट की स्वीकृति के लिए भेजा जाएगा।

गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस-वे के निर्माण पर होने वाले खर्च का नए सिरे से आकलन किया गया है। पहले निर्धारित लागत की तुलना में अब परियोजना का कुल बजट बढ़ गया है। संशोधित आकलन के अनुसार, एक्सप्रेस-वे के निर्माण पर लगभग 45 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। वहीं, शेष करीब 28 हजार करोड़ रुपये जमीन अधिग्रहण और अन्य आवश्यक कार्यों पर खर्च होने का अनुमान है। इस तरह परियोजना की कुल लागत लगभग 73 हजार करोड़ रुपये निर्धारित की गई है। इससे पहले पीपीपी-एसी की बैठक में परियोजना की विस्तृत रिपोर्ट को दोबारा तैयार करने का निर्देश दिया गया था। इसके बाद एनएचएआई ने लागत, निर्माण कार्य और अन्य संबंधित पहलुओं का नए सिरे से आकलन कर संशोधित रिपोर्ट तैयार की है। अब इस रिपोर्ट को समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा, जहां परियोजना के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के बाद आगे की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस-वे का निर्माण जन-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के तहत प्रस्तावित है। इस मॉडल के अंतर्गत परियोजना के निर्माण और वित्तीय व्यवस्था में निजी क्षेत्र की भागीदारी भी सुनिश्चित की जाएगी। पीपीपी-एसी की स्वीकृति मिलने के बाद परियोजना को केंद्रीय कैबिनेट के समक्ष रखा जाएगा। वहां से अंतिम मंजूरी मिलने के बाद निर्माण से संबंधित आगे की औपचारिक प्रक्रियाएं पूरी की जा सकेंगी। केंद्र सरकार इस परियोजना को वित्तीय वर्ष 2026-27 की वार्षिक योजना में शामिल करने पर पहले ही सहमति दे चुकी है। ऐसे में उम्मीद जताई जा रही है कि परियोजना को लेकर केंद्र की ओर से जल्द ही अंतिम निर्णय लिया जा सकता है। एक्सप्रेस-वे के निर्माण से पूर्वी भारत के महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बीच सड़क परिवहन का एक नया और बेहतर विकल्प उपलब्ध होगा।

गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस-वे की शुरुआत उत्तर प्रदेश के गोरखपुर स्थित जगदीशपुर से होगी। वहां से यह देवरिया जिले के रास्ते बिहार में प्रवेश करेगा। इसके बाद बिहार के विभिन्न जिलों से गुजरते हुए पश्चिम बंगाल की ओर बढ़ेगा और अंततः सिलीगुड़ी तक पहुंचेगा। इस मार्ग के तैयार होने से उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम के बीच सड़क संपर्क को व्यापक मजबूती मिलने की संभावना है। वर्तमान में इन क्षेत्रों के बीच लंबी दूरी की यात्रा में यात्रियों और मालवाहक वाहनों को कई स्थानों पर यातायात संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। एक्सप्रेस-वे बनने के बाद यात्रा का समय कम होने के साथ परिवहन व्यवस्था अधिक प्रभावी हो सकेगी। इससे व्यापारियों, उद्योगों, परिवहन कारोबारियों और आम यात्रियों को सीधा लाभ मिलने की उम्मीद है।

गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस-वे बिहार के आठ जिलों से होकर गुजरेगा। इनमें पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, शिवहर, मधुबनी, सुपौल, अररिया और किशनगंज शामिल हैं। इन जिलों के लिए यह परियोजना सड़क संपर्क के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। खासकर बिहार के सीमावर्ती और ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन सुविधाओं को बेहतर बनाने में एक्सप्रेस-वे की अहम भूमिका हो सकती है। सड़क के निर्माण से स्थानीय लोगों को लंबी दूरी की यात्रा में सहूलियत मिलेगी। इसके अलावा कृषि उत्पादों, व्यापारिक वस्तुओं और औद्योगिक सामानों की आवाजाही भी तेज होने की संभावना है। बेहतर सड़क संपर्क से इन जिलों में आर्थिक गतिविधियों के विस्तार और नए व्यावसायिक अवसरों के सृजन का रास्ता खुल सकता है। एक्सप्रेस-वे के निर्माण के लिए जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया पहले ही शुरू की जा चुकी है। पथ निर्माण विभाग के अधिकारियों के अनुसार, परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक भूमि की उपलब्धता सुनिश्चित करने की दिशा में काम किया जा रहा है। पीपीपी-एसी से मंजूरी मिलने के बाद जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया में तेजी लाई जाएगी। इसके बाद निर्माण कार्य से जुड़ी अन्य औपचारिकताओं को पूरा किया जाएगा।

परियोजना के लिए जमीन अधिग्रहण एक महत्वपूर्ण चरण है, क्योंकि इसके पूरा होने के बाद ही निर्माण कार्य को निर्धारित गति से आगे बढ़ाया जा सकेगा। सरकार की ओर से इस परियोजना को जल्द धरातल पर उतारने की तैयारी की जा रही है, ताकि निर्धारित प्रक्रिया पूरी होने के बाद निर्माण शुरू किया जा सके। गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस-वे को फिलहाल चार लेन में विकसित करने का प्रस्ताव है। हालांकि, बिहार सरकार ने भविष्य में वाहनों की बढ़ती संख्या और यातायात के दबाव को देखते हुए इसे चार लेन से बढ़ाकर छह लेन करने का अनुरोध किया है।

राज्य सरकार का बड़ा निर्णय, प्रदेश में 360 नए धान उपार्जन केंद्रों को स्वीकृति

धान खरीदी केंद्रों की संख्या 2,740 से बढ़कर हुई 3,100, किसानों को मिलेगी लंबी कतारों से राहत

रायपुर (एजेंसी)।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार ने खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 में धान खरीदी को अधिक सुगम, पारदर्शी और किसान हितैषी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। प्रदेश के किसानों को धान बेचने के लिए लंबी दूरी तय न करनी पड़े, उपार्जन केंद्रों में अनावश्यक प्रतीक्षा से राहत मिले और कम समय में अधिक किसान अपनी उपज का विक्रय कर सकें, इस उद्देश्य से राज्य सरकार ने प्रदेश में 360 नए धान उपार्जन केंद्रों को स्वीकृति प्रदान की है। इसके साथ ही प्रदेश में धान उपार्जन केंद्रों की संख्या 2,740 से बढ़कर 3,100 हो गई है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा है कि अन्नदाता किसानों की मेहनत का सम्मान और उनकी सुविधाओं का विस्तार राज्य सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है। धान खरीदी की प्रक्रिया में किसानों को किसी प्रकार की अनावश्यक परेशानी न हो, इसके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि नए उपार्जन केंद्रों की स्वीकृति का उद्देश्य केवल केंद्रों की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि किसानों के लिए धान विक्रय की पूरी प्रक्रिया को अधिक सरल, सुलभ और सुविधाजनक बनाना है। राज्य सरकार द्वारा 360 नए उपार्जन केंद्रों की स्वीकृति से प्रदेश में धान खरीदी की व्यवस्था का व्यापक विस्तार होगा। नए केंद्रों के प्रारंभ होने से किसानों को अपने गांव अथवा आसपास के क्षेत्रों में धान विक्रय की सुविधा मिलेगी। इससे धान लेकर दूरस्थ उपार्जन केंद्रों तक जाने की आवश्यकता कम होगी और परिवहन पर होने वाले खर्च में भी बचत होगी।

अब तक जिन उपार्जन केंद्रों पर अधिक संख्या में किसानों के पहुंचने के कारण भीड़ और प्रतीक्षा की स्थिति बनती थी, वहां भी नए केंद्रों के प्रारंभ होने से दबाव कम होगा। किसानों का आवागमन विभिन्न केंद्रों में विभाजित होने से धान की तौल, गुणवत्ता परीक्षण और अन्य आवश्यक प्रक्रियाओं को व्यवस्थित ढंग से पूरा करने में सहायता मिलेगी।

इस निर्णय से किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए कम समय देना पड़ेगा और वे अपने कृषि कार्यों तथा अन्य आवश्यक गतिविधियों के लिए अधिक समय निकाल सकेंगे। विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत किसानों को इससे सुविधा मिलने की अपेक्षा है। प्रदेश में स्वीकृत 360 नए धान उपार्जन केंद्रों से दो लाख से अधिक पंजीकृत किसानों को सीधा लाभ मिलेगा। इन किसानों को नए केंद्रों के माध्यम से टोकन प्राप्त करने और निर्धारित अवधि में धान विक्रय करने की सुविधा उपलब्ध होगी। नए उपार्जन केंद्रों के संचालन से धान खरीदी की क्षमता का विस्तार होगा। एक ही समय में अधिक केंद्रों पर खरीदी होने से अधिक संख्या में किसानों का धान निर्धारित अवधि के भीतर खरीदा जा सकेगा। इससे पुराने केंद्रों पर किसानों की निर्भरता कम होगी और धान विक्रय के लिए अनावश्यक प्रतीक्षा की समस्या में कमी आएगी।



राज्य सरकार का प्रयास है कि धान खरीदी की व्यवस्था ऐसी हो, जिसमें किसानों को कम दूरी तय करनी पड़े, कम समय लगे और उनकी उपज का विक्रय सुचारू रूप से संपन्न हो। राज्य सरकार ने खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 के लिए धान खरीदी की अवधि 15 नवंबर 2026 से 15 जनवरी 2027 तक निर्धारित की है। निर्धारित अवधि में प्रदेश के पंजीकृत किसानों से धान की खरीदी की जाएगी। धान खरीदी प्रारंभ होने से पहले उपार्जन केंद्रों पर आवश्यक तैयारियां पूरी करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, ताकि किसानों को शुरुआत से ही व्यवस्थित सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। नए केंद्रों की स्वीकृति से खरीदी कार्य को अधिक विकेंद्रीकृत बनाने में सहायता मिलेगी। इससे सीमित केंद्रों पर किसानों की भीड़ एकत्र होने के बजाय विभिन्न केंद्रों पर धान खरीदी की प्रक्रिया समानांतर रूप से संचालित हो सकेगी। धान विक्रय के लिए किसानों को समितियों में बार-बार आने और टोकन प्राप्त करने के लिए लंबी कतारों में खड़े होने की आवश्यकता कम करने के उद्देश्य से इस वर्ष भी 'तुंहर टोकन' मोबाइल एप के माध्यम से ऑनलाइन टोकन की व्यवस्था की गई है।

किसान अपने मोबाइल फोन से घर बैठे धान विक्रय के लिए टोकन प्राप्त कर सकेंगे। यह सुविधा 24 घंटे उपलब्ध रहेगी। इससे किसानों को अपनी सुविधा के अनुसार टोकन प्राप्त करने का अवसर मिलेगा और टोकन लेने के लिए निर्धारित समय में समिति पहुंचने की बाध्यता नहीं रहेगी। ऑनलाइन टोकन व्यवस्था से किसानों को धान विक्रय की पूर्व तैयारी करने में भी सुविधा होगी। वे निर्धारित तिथि के अनुसार धान के परिवहन एवं विक्रय की योजना बना सकेंगे। इससे उपार्जन केंद्रों पर अनावश्यक भीड़ कम करने और खरीदी कार्य को व्यवस्थित बनाए रखने में सहायता मिलेगी। धान खरीदी व्यवस्था के सुचारू संचालन के लिए राज्य सरकार ने अग्रिम तैयारियों पर विशेष जोर दिया है। इसके अंतर्गत 2 नवंबर से 5 नवंबर 2026 तक समितियों में ट्रायल रन आयोजित किया जाएगा। इस दौरान टोकन संबंधी प्रक्रियाओं और आवश्यक तकनीकी व्यवस्थाओं का परीक्षण किया जाएगा, ताकि वास्तविक खरीदी प्रारंभ होने से पहले संभावित समस्याओं की पहचान कर उनका समाधान किया जा सके। किसानों के लिए 10 नवंबर 2026 से टोकन प्राप्त करने की व्यवस्था प्रारंभ होगी। इससे किसानों को 15 नवंबर से शुरू होने वाली धान खरीदी के लिए पहले से तैयारी करने का पर्याप्त अवसर मिलेगा। नए उपार्जन केंद्रों की स्थापना का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य धान विक्रय से जुड़े किसानों के अतिरिक्त खर्च को कम करना भी है। दूरस्थ उपार्जन केंद्रों तक धान पहुंचाने के लिए किसानों को परिवहन की व्यवस्था करनी पड़ती है। अधिक दूरी होने पर परिवहन खर्च बढ़ता है और समय भी अधिक लगता है। नए केंद्रों के माध्यम से धान विक्रय की सुविधा नजदीक उपलब्ध होने पर किसानों को इन दोनों स्तरों पर राहत मिलेगी। इसी प्रकार, खरीदी केंद्रों पर भीड़ कम होने से किसानों को धान विक्रय के लिए लंबे समय तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। इससे उनकी श्रमशक्ति और समय की बचत होगी।

राज्य सरकार की मंशा है कि किसानों को धान का निर्धारित मूल्य मिलने के साथ ही विक्रय प्रक्रिया में होने वाले अनावश्यक खर्च और परेशानियों से भी राहत मिले। धान खरीदी के बाद निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार समयबद्ध भुगतान सुनिश्चित करने पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ के किसान प्रदेश की अर्थव्यवस्था की मजबूत आधारशिला हैं। उनकी मेहनत से खेतों में उपजने वाला धान प्रदेश की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ऐसे में यह आवश्यक है कि किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए सरल, पारदर्शी और भरोसेमंद व्यवस्था उपलब्ध हो। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार किसानों को केवल उनकी उपज का उचित मूल्य देने तक सीमित नहीं है, बल्कि धान विक्रय की पूरी प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए भी निरंतर कार्य कर रही है। 360 नए उपार्जन केंद्रों की स्वीकृति, ऑनलाइन टोकन की सुविधा और खरीदी से पहले व्यवस्थाओं का परीक्षण इसी दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारा स्पष्ट संकल्प है कि प्रदेश का कोई भी अन्नदाता धान बेचने के लिए अनावश्यक परेशानी का सामना न करे। किसानों के समय, श्रम और धन की बचत हो तथा उन्हें अपनी मेहनत का पूरा सम्मान मिले। हमारी सरकार धान खरीदी की पूरी प्रक्रिया को किसान हितैषी बनाकर प्रत्येक अन्नदाता को सुविधाजनक और संतोषजनक अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से रूबरू हुईं छत्तीसगढ़ की महिला उद्यमी हीना

गुजरात के एकता नगर में आयोजित भारत पर्व में प्रधानमंत्री को बताई बिहान से आर्थिक सशक्तिकरण की कहानी, कोरिया मिलेट्स कैफे से 37 महिलाओं को मिला रोजगार

रायपुर (एजेंसी)।



छत्तीसगढ़ की ग्रामीण महिलाएं आज अपनी मेहनत, उद्यमशीलता और आत्मविश्वास के बल पर सफलता की नई इबारत लिख रही हैं। इसकी एक प्रेरणादायक झलक गुजरात के एकता नगर में आयोजित भारत पर्व 2026 में देखने को मिली, जब कोरिया जिले की महिला उद्यमी एवं मिलेट्स कैफे की संचालिका श्रीमती हीना को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से रूबरू होने और अपनी सफलता की कहानी साझा करने का अवसर मिला। उन्होंने प्रधानमंत्री को बताया कि किस प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन 'बिहान' से जुड़कर ग्रामीण महिलाएं आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी से संवाद के दौरान श्रीमती हीना ने बताया कि कोरिया जिले में उनके द्वारा संचालित मिलेट्स कैफे ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम बन गया है। इस कैफे से जुड़कर 37 महिलाएं विभिन्न आजीविका गतिविधियों के माध्यम से नियमित आय अर्जित कर रही हैं। कभी सीमित आजीविका के साधनों पर निर्भर रहने वाली ग्रामीण महिलाएं आज अपने हुनर और सामूहिक प्रयासों से स्वरोजगार की नई पहचान बना रही हैं। श्रीमती हीना ने बताया कि छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन 'बिहान' ने महिलाओं को संगठित होकर आगे बढ़ने और अपनी क्षमताओं को उद्यम में बदलने का अवसर प्रदान किया है। कोरिया मिलेट्स कैफे इसी सामूहिक उद्यमशीलता का सफल उदाहरण है। श्रीमती हीना ने प्रधानमंत्री को बताया कि कोरिया मिलेट्स कैफे में मोटे अनाज अर्थात श्री अन्न से विभिन्न प्रकार के पौष्टिक एवं पारंपरिक छत्तीसगढ़ी व्यंजन तैयार किए जाते हैं। इसके माध्यम से एक ओर पोषणयुक्त खानपान को प्रोत्साहन मिल रहा है, वहीं दूसरी ओर छत्तीसगढ़ की समृद्ध खाद्य संस्कृति और स्थानीय व्यंजनों को नई पहचान मिल रही है। उन्होंने बताया कि भारत पर्व में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक मिलेट्स व्यंजनों का स्टॉल लगाया गया है। इस स्टॉल के माध्यम से देश के विभिन्न राज्यों से आने वाले आगंतुकों को छत्तीसगढ़ के पारंपरिक स्वाद, स्थानीय खाद्य संस्कृति और ग्रामीण महिलाओं की उद्यमशीलता से परिचित कराया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि गुजरात के एकता नगर में 30 अक्टूबर से 15 नवंबर 2026 तक भारत पर्व का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों के शिल्पकार, उद्यमी और स्व-सहायता समूह अपनी पारंपरिक कला, हस्तशिल्प, स्थानीय व्यंजनों एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन कर रहे हैं। इस राष्ट्रीय आयोजन में कोरिया जिले की महिला उद्यमी श्रीमती हीना का प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से संवाद छत्तीसगढ़ की ग्रामीण महिलाओं के बढ़ते आत्मविश्वास और आर्थिक सशक्तिकरण का गौरवपूर्ण उदाहरण है।

सरगुजा में पांच दिन बारिश के आसार किसानों को सतर्क रहने की सलाह

कटाई की गई धान की फसल को सुरक्षित स्थान पर रखें, गरज-चमक और आकाशीय बिजली से बचाव की अपील

रायपुर (एजेंसी)।

सरगुजा जिले में 31 अक्टूबर से 4 नवंबर तक आसमान में बादल छाए रहने और बीच-बीच में बारिश होने की संभावना है। कृषि मौसम विज्ञान इकाई (एएमएफयू), अंबिकापुर के अनुसार, इस दौरान प्रतिदिन 10 से 15 मिलीमीटर तक वर्षा हो सकती है। अधिकतम तापमान 28 से 29 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 19 से 20 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है। 31 अक्टूबर, 1 नवंबर और 3 नवंबर को गरज-चमक के साथ आकाशीय बिजली गिरने की आशंका है। वहीं, 3 नवंबर को तेज झोंकेदार हवाएं भी चल सकती हैं।

मौसम की संभावित परिस्थितियों को देखते हुए किसानों को कटी हुई धान की फसल और अन्य कृषि उपज को खुले खेतों में नहीं छोड़ने की सलाह दी गई है। फसल को तत्काल सुरक्षित, सूखे और ढके हुए स्थानों पर रखें। वर्षा के दौरान कटाई, मड़ाई और अनाज सुखाने का कार्य करने से बचें। उपज को बारिश से बचाने के लिए जलरोधी तिरपाल से ढकें तथा भंडारण स्थल पर पानी प्रवेश न करने दें। तेज हवाओं और बारिश से खेतों में खड़ी, विशेषकर पककर तैयार धान की फसल के गिरने की आशंका है। ऐसे में किसान मौसम अनुकूल होने पर परिपक्व फसल की कटाई जल्द पूरी करें। खेतों में अतिरिक्त पानी की निकासी के लिए नालियां बनाएं, ताकि जलभराव से फसलों को होने वाले नुकसान को रोका जा सके। सब्जियों, दलहनी और तिलहनी फसलों में अधिक नमी के कारण फफूंदजनित रोगों का प्रकोप बढ़ सकता है। किसानों को फसलों की नियमित निगरानी करने और रोग के लक्षण दिखाई देने पर कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार पौध संरक्षण उपाय अपनाने की सलाह दी गई है। बागवानी फसलों में तेज हवाओं और गरज-चमक से फूलों एवं फलों के झड़ने तथा कोमल शाखाओं को नुकसान पहुंचने की संभावना है। किसानों को पशुधन की सुरक्षा पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है। पशुओं को सूखे, सुरक्षित और ढके हुए स्थानों पर रखें तथा उनके लिए स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करें। कृषि मौसम विज्ञान इकाई ने किसानों से अपील की है कि गरज-चमक और आकाशीय बिजली के दौरान खुले खेतों में काम न करें। ऐसी स्थिति में तत्काल कृषि कार्य रोककर किसी सुरक्षित पक्के भवन के भीतर चले जाएं। अकेले पेड़ों, बिजली के खंभों और खुले शेड के नीचे आश्रय लेने से बचें।

महतारी वंदन से बेटी पढ़ाओ को मिल रहा संबल, सुकन्या समृद्धि खातों में जमा कर रहीं राशि

छत्तीसगढ़ सरकार की आर्थिक सहायता से घरेलू खर्च के साथ बेटियों की पढ़ाई और भविष्य के लिए बचत कर रही महिलाएं







धनंजय राठौर, संयुक्त संचालक, जनसंपर्क रायपुर
रायपुर (एजेंसी)।

प्रदेश में महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन तथा उनके स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर मे सतत सुधार तथा परिवार में उनकी निर्णायक भूमिका सुदृढ़ करने हेतु, समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव, असमानता एवं जागरूकता की कमी को दूर करने, स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सुधार करने तथा आर्थिक स्वावलंबन एवं महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ में महतारी वंदन योजना लागू किया गया है, जिसके अंतर्गत पात्र विवाहित महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। छत्तीसगढ़ सरकार की महतारी वंदन योजना की शुरुआत आधिकारिक रूप से 1 मार्च 2024 को हुई थी और इसका औपचारिक शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 10 मार्च 2024 को किया गया था। प्रधानमंत्री ने कहा है कि मोदी की गारंटी का मतलब होता है, गारंटी पूरी होने की गारंटी।

यह योजना के तहत राज्य की सभी पात्र विवाहित महिलाओं को लाभ प्रदान की जा रही है इसके अलावा विधवा, तलाकशुदा और परित्यक्ता महिलाएं भी इस योजना का लाभ ले रही हैं। छत्तीसगढ़ की महतारी वंदन योजना की आर्थिक सहायता महिलाओं के लिए घरेलू जरूरतें पूरी करने के साथ बेटियों के भविष्य को संवारने का जरिया बन रही है। योजना से मिलने वाली राशि का एक हिस्सा वे सुकन्या समृद्धि खातों में जमा कर रही हैं, ताकि आगे चलकर बेटियों की उच्च शिक्षा और अन्य जरूरतों के लिए आर्थिक संबल मिल सके। यह पहल प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के संकल्प को जमीनी स्तर पर मजबूती दे रही है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने कहा कि मातृशक्ति का सम्मान और उनका आर्थिक सशक्तिकरण हमारी सरकार के लिए केवल एक योजना या कार्यक्रम नहीं, बल्कि सुशासन की प्रमुख प्राथमिकता है। हमारा विश्वास है कि जब परिवार की महिला आर्थिक रूप से सशक्त होती है, तो उसका सकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। बच्चों की शिक्षा और पोषण से लेकर परिवार के स्वास्थ्य और भविष्य से जुड़े निर्णयों तक उसकी भागीदारी और मजबूत होती है। इसलिए महतारी वंदन योजना के माध्यम से सरकार माताओं-बहनों के हाथों में आर्थिक सामर्थ्य देकर उन्हें अपने निर्णय स्वयं लेने का आत्मविश्वास दे रही है।

दंतेवाड़ा जिले के बोडरी गांव की प्रमिला पोतामी के लिए बेटी की पढ़ाई के लिए बचत करना पहले आसान नहीं था। महतारी वंदन योजना से मिलने वाली नियमित मासिक सहायता ने उनके लिए बचत की राह खोली है। प्रमिला कहती हैं, 'हमारी आमदनी इतनी नहीं है कि कुछ बचाकर रख सकें। महतारी वंदन योजना से मिलने वाली राशि बड़ी मददगार है। इस राशि का कुछ हिस्सा मैं सुकन्या समृद्धि खाते में जमा करती हूं जो आगे चलकर बेटी की पढ़ाई में काम आएंगे। 'दक्षिण बस्तर का दंतेवाड़ा लंबे समय तक नक्सल हिंसा से प्रभावित रहा है। ऐसे क्षेत्र में बेटी की शिक्षा के लिए बचत का यह प्रयास बदलती आकांक्षाओं और बेहतर भविष्य को नई उम्मीद दे रहा है। प्रमिला की तरह कुछ अन्य महिलाएं भी मासिक सहायता का हिस्सा बेटियों के नाम बचत करने में लगा रही हैं। इस योजना से महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में मदद मिल रही है, इससे महिलाएं अपनी आय के स्रोत विकसित कर कर अपने परिवार का आर्थिक रूप से सहयोग कर रही हैं। इस योजना से महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद मिल रही है, इससे महिलाओं को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होने और उन्हें प्राप्त करने में मदद मिल रही है। रायपुर जिले के रावेली गांव की मीना निषाद ने भी अपनी बेटी महिमा के लिए सुकन्या समृद्धि खाता खुलवाया है। वह कहती हैं, 'महतारी वंदन योजना से हर महीने एक हजार रुपये मिलते हैं। मैं यह राशि अपनी बेटी के सुकन्या समृद्धि खाते में जमा करती हूं। मैं चाहती हूं कि आगे चलकर यह बचत उसकी पढ़ाई और भविष्य की जरूरतों में काम आए। 'सूरजपुर जिले के प्रतापपुर विकासखंड के परी गांव की अंजू कुशवाहा भी इसी तरह बचत कर रही हैं। वह मासिक सहायता की कुछ राशि बेटी के सुकन्या खाते में जमा करती हैं और शेष रकम घरेलू खर्चों पर लगाती हैं। उनके मुताबिक, नियमित आर्थिक मदद से भविष्य के लिए थोड़ी-बहुत बचत कर पाने का भरोसा बढ़ा है। वहीं, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले के बघमरा गांव की दीपाली मरकाम इस राशि का इस्तेमाल बच्चों की स्कूली जरूरतों और बेटी के भविष्य के लिए बचत करने में कर रही हैं। उनका कहना है कि हर माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा हासिल करें और जीवन में आगे बढ़ें, लेकिन सीमित घरेलू संसाधनों के बीच भविष्य के लिए पैसे बचाना आसान नहीं होता। मासिक सहायता से उन्हें बच्चों की पढ़ाई में योगदान देने और बेटी के लिए बचत करने में मदद मिल रही है। सुशासन की सरकार महतारी वंदन योजना के माध्यम से हर माह 1,000 यानी सालाना 12,000 की आर्थिक सहायता देकर प्रदेश की माता-बहनों के सम्मान, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता को नई मजबूती प्रदान कर रही है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने 8 अक्टूबर 2026 को योजना की 32 वीं किस्त के रूप में 67 लाख से अधिक महिलाओं के खातों में डी बी टी के माध्यम से 632.40 करोड़ से अधिक की राशि अंतरित की गई है। अब तक 20,708 करोड़ से अधिक की राशि महतारी वंदन योजना के माध्यम से माता-बहनों को प्रदान की जा चुकी है। महतारी वंदन योजना से रायपुर जिले के 5 लाख 13 हजार 534 हितग्राही, बिलासपुर जिले के 4 लाख 11 हजार 310 हितग्राही, दुर्ग के 3 लाख 89 हजार 507 हितग्राही, बलौदाबाजार-भाटापारा के 3 लाख 19 हजार 815 हितग्राही और महासमुंद जिले के 3 लाख 12 हजार 162 हितग्राहियों के खातों में डी बी टी के माध्यम से सुशासन की सरकार राशि अंतरित कर माताओं-बहनों को आर्थिक रूप से सक्षम बना रही है। वर्ष 2015 में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत शुरू की गई सुकन्या समृद्धि योजना बालिकाओं के भविष्य के लिए बचत का अवसर देती है। इसके माध्यम से मां-बाप बेटियों की शिक्षा और विवाह जैसी भविष्य की जरूरतों के लिए धन जमा कर सकते हैं। इन महिलाओं के अनुभव बताते हैं कि नियमित आर्थिक सहायता से बेटियों की शिक्षा और भविष्य के लिए योजनाबद्ध बचत की शुरुआत करना संभव हो रहा है।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत 2 नवंबर को जाएंगे झारखंड, देवघर में बाबा बैद्यनाथ के दर्शन के बाद रांची में करेंगे ई-परियोजनाओं का शुभारंभ

रांची (एजेंसी)। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत दो दिवसीय दौरे पर 2 नवंबर को झारखंड पहुंचेंगे। मुख्य न्यायाधीश का पदभार संभालने के बाद यह उनका पहला झारखंड दौरा होगा। इस दौरान वे देवघर और रांची में आयोजित धार्मिक एवं आधिकारिक कार्यक्रमों में शामिल होंगे। उनके दौरे को लेकर झारखंड उच्च न्यायालय और न्यायिक प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी हैं।

मुख्य न्यायाधीश 2 नवंबर को दिल्ली से विमान के जरिए देवघर पहुंचेंगे। यहां वे बाबा बैद्यनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना करेंगे। इसके बाद राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) की ओर से आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। देवघर में कार्यक्रमों में शामिल होने के बाद वे शाम को विमान से रांची पहुंचेंगे।

रांची पहुंचने पर मुख्य न्यायाधीश झारखंड उच्च न्यायालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगे। इस दौरान वे उच्च न्यायालय के आंकड़ा केंद्र का उद्घाटन करेंगे। साथ ही न्यायिक व्यवस्था को अधिक आधुनिक, पारदर्शी और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई कई इलेक्ट्रॉनिक परियोजनाओं का भी शुभारंभ करेंगे।

इन परियोजनाओं के शुरू होने से न्यायिक कामकाज में डिजिटल तकनीक का उपयोग बढ़ेगा। इससे अदालतों की कार्यप्रणाली को अधिक सुविधाजनक बनाने, सूचनाओं के आदान-प्रदान में तेजी लाने और न्यायिक प्रक्रियाओं को प्रभावी बनाने में मदद मिलने की उम्मीद है। इस अवसर पर सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति अपरेश



कुमार सिंह और न्यायमूर्ति एस. चंद्रशेखर के अलावा झारखंड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एम.एस. सोनक सहित अन्य न्यायाधीश भी उपस्थित रहेंगे। मुख्य न्यायाधीश के दौरे और कार्यक्रमों के व्यवस्थित संचालन के लिए झारखंड उच्च न्यायालय प्रशासन ने विशेष तैयारियां की हैं। इसी क्रम में उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार (प्रशासन) विश्वनाथ शुक्ला ने आधिकारिक पत्र जारी कर 16 न्यायिक अधिकारियों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी हैं।

इन अधिकारियों में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की विशेष अदालतों में पदस्थ अधिकारी, परिवार न्यायालय, लैंगिक अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम से संबंधित विशेष अदालतों तथा दीवानी और न्यायिक मजिस्ट्रेट स्तर के अधिकारी शामिल हैं। जिम्मेदारी सौंपे गए अधिकारियों में अतिरिक्त न्यायिक आयुक्त योगेश कुमार, देबाशीष महापात्र, ओंकार नाथ चौधरी, अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश सौमेंद्र नाथ सिकदर, पॉक्सो अदालत के विशेष न्यायाधीश बिरेंद्र कुमार श्रीवास्तव और अतिरिक्त न्यायिक आयुक्त पवन कुमार सहित अन्य अधिकारी शामिल हैं। रजिस्ट्रार (प्रशासन) की ओर से जारी पत्र में सभी नामित न्यायिक अधिकारियों को 2 नवंबर 2026 को शाम ठीक छह बजे झारखंड उच्च न्यायालय परिसर में उपस्थित होने का निर्देश दिया गया है। सभी अधिकारियों को उच्च न्यायालय के केंद्रीय परियोजना समन्वयक और ई-अदालत परियोजना के समक्ष अपनी उपस्थिति दर्ज करानी होगी। यह व्यवस्था मुख्य न्यायाधीश की मौजूदगी में होने वाले आंकड़ा केंद्र के उद्घाटन और इलेक्ट्रॉनिक परियोजनाओं के शुभारंभ कार्यक्रम को सुचारू एवं व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से की गई है। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत 2 नवंबर की रात रांची में ही विश्राम करेंगे। इसके बाद 3 नवंबर को भी राजधानी में आयोजित एक कार्यक्रम में शामिल होंगे। दो दिवसीय झारखंड प्रवास पूरा करने के बाद वे दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे।

हरदीप सिंह पुरी ने राज्यसभा उपचुनाव के लिए दाखिल किया नामांकन, सीएम मोहन यादव रहे मौजूद

भोपाल (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने मध्य प्रदेश से राज्यसभा की रिक्त सीट के लिए होने वाले उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन दाखिल किया। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल सहित पार्टी के कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति ने 28 अक्टूबर को हरदीप सिंह पुरी को मध्य प्रदेश से राज्यसभा उपचुनाव के लिए पार्टी का उम्मीदवार घोषित किया था।



नामांकन के अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने हरदीप सिंह पुरी का स्वागत करते हुए कहा कि उन्होंने केंद्रीय मंत्री के रूप में मध्य प्रदेश को कई महत्वपूर्ण सौगातें दी हैं। उनके अनुभव और योगदान से प्रदेश को आगे भी लाभ मिलेगा।

वहीं, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि यह मध्य प्रदेश के लिए सौभाग्य की बात है कि हरदीप सिंह पुरी ने राज्य की रिक्त राज्यसभा सीट से अपना नामांकन दाखिल किया है। उन्होंने इसे दीपावली से पहले प्रदेश के लिए एक बड़ा उपहार बताया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हरदीप सिंह पुरी का संसदीय और प्रशासनिक अनुभव काफी लंबा रहा है। उनके प्रयासों से मध्य प्रदेश को रिफाइनरी और स्मार्ट सिटी जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं का लाभ मिला है। मुख्यमंत्री ने स्वच्छता सर्वेक्षण का उल्लेख करते हुए कहा कि हरदीप सिंह पुरी के नेतृत्व में देश में स्वच्छता सर्वेक्षण की शुरुआत हुई थी। इस अभियान में मध्य प्रदेश के कई शहरों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने विश्वास जताया कि हरदीप सिंह पुरी के निर्वाचित होने के बाद उनके अनुभव और नेतृत्व का लाभ देश के साथ-साथ मध्य प्रदेश को भी मिलेगा। मुख्यमंत्री ने उन्हें शुभकामनाएं दीं। गौरतलब है कि पूर्व केंद्रीय मंत्री एल. मुरुगन के इस्तीफे के बाद मध्य प्रदेश की यह राज्यसभा सीट रिक्त हुई थी। उन्होंने 14 अक्टूबर 2026 को अपने पद से इस्तीफा दिया था। राज्यसभा में उनका कार्यकाल मूल रूप से 2 अप्रैल 2030 तक निर्धारित था। इसके बाद भारत निर्वाचन आयोग ने 22 अक्टूबर को इस सीट पर उपचुनाव का कार्यक्रम घोषित किया था। निर्वाचन आयोग द्वारा घोषित कार्यक्रम के अनुसार, उपचुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि 2 नवंबर 2026 निर्धारित की गई है।

बेंगलुरु के पांच सितारा होटल के स्विमिंग पूल में उतरा करंट, दो विदेशी नागरिकों की मौत

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु के एक पांच सितारा होटल में बड़ा हादसा हो गया। यहां स्थित कॉनराड होटल के तरणताल में अचानक बिजली का करंट उतरने से दो विदेशी नागरिकों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य लोग घायल हो गए। घायलों में एक अमेरिकी नागरिक और होटल का भारतीय कर्मचारी शामिल है। दोनों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के अनुसार, फिलहाल उनकी हालत खतरे से बाहर है।

पूर्वी बेंगलुरु के पुलिस उपायुक्त ने बताया कि हादसा हलासुरू स्थित कॉनराड होटल की तीसरी मंजिल पर बने तरणताल में हुआ। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, पानी में अचानक बिजली का करंट फैल गया, जिसकी चपेट में आने से दो विदेशी नागरिकों की मौत हो गई। मृतकों में एक जर्मनी और दूसरा स्लोवाकिया का नागरिक था।

मृतकों की पहचान 57 वर्षीय अलेक्जेंडर मैक्सिमिलियन थीस और 45 वर्षीय जुराज होरवाट के रूप में हुई है। अलेक्जेंडर मैक्सिमिलियन थीस जर्मनी के नागरिक थे और विमानन कंपनी लुफ्थांसा के चालक दल के सदस्य थे। वहीं, जुराज होरवाट स्लोवाकिया के निवासी थे और सूचना प्रौद्योगिकी कंपनी आईबीएम में परियोजना प्रबंधक के पद पर कार्यरत थे।

हादसे के दौरान दोनों विदेशी नागरिकों को बचाने की कोशिश में दो अन्य लोग भी करंट की चपेट में आकर घायल हो गए। इनमें होटल में ठहरा एक अमेरिकी नागरिक और होटल का भारतीय तरणताल सहायक शामिल है। दोनों घायलों को मणिपाल अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका उपचार जारी है। चिकित्सकों के अनुसार, दोनों की स्थिति स्थिर है और वे खतरे से बाहर हैं।

घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। प्रारंभिक तौर पर हादसे की वजह तरणताल में बिजली का करंट उतरना बताई जा रही है। हालांकि, करंट फैलने के वास्तविक कारणों का पता लगाने के लिए जांच की जा रही है। होटल की विद्युत व्यवस्था और सुरक्षा इंतजामों की भी जांच की जाएगी। घटना के बाद होटल में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल उठने लगे हैं।

एसआईआर के बाद भी मतदाता सूची में जुड़वा सकेंगे नाम, सुप्रीम कोर्ट ने दी राहत

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर जारी बहस के बीच सर्वोच्च न्यायालय ने महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया पूरी होने का मतलब यह नहीं है कि मतदाता सूची में नए नाम जोड़ने का रास्ता बंद हो जाएगा। प्रारूप मतदाता सूची से जिन लोगों के नाम हटाए गए हैं, वे निर्धारित प्रक्रिया के तहत दोबारा अपना नाम जुड़वाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। न्यायालय ने हालांकि केरल, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश में एसआईआर को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए पुनरीक्षण की समय-सीमा बढ़ाने से इनकार कर दिया।

मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने सुनवाई के दौरान कहा कि मतदाता सूची में नाम जोड़ने की प्रक्रिया लगातार जारी रहती है। इसलिए एसआईआर की समय-सीमा अलग से बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। वरिष्ठ अधिवक्ता डी.एस. नायडू ने अदालत को बताया कि प्रारूप मतदाता सूची में जिन लोगों के नाम शामिल नहीं हैं, वे निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार आवेदन कर सकते हैं।

चुनाव में उम्मीदवारों के नामांकन की अंतिम तिथि तक मतदाता सूची में नाम जुड़वाने का विकल्प उपलब्ध रहता है। इससे पुनरीक्षण के दौरान नाम कटने से प्रभावित लोगों को राहत मिल सकती है।

सुनवाई के दौरान निर्वाचन आयोग ने स्वीकार किया कि उत्तर प्रदेश में अधिकारियों की ओर से बड़ी संख्या में फॉर्म-7 स्वीकार किए जाने के मामले में



अनियमितताएं हुई थीं। फॉर्म-7 का इस्तेमाल मतदाता सूची में किसी व्यक्ति का नाम हटाने के संबंध में आपत्ति दर्ज कराने के लिए किया जाता है।

निर्वाचन आयोग ने न्यायालय को बताया कि इस मामले में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं। साथ ही गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने का आश्वासन भी दिया। इस पर सर्वोच्च न्यायालय ने याचिकाकर्ताओं को छूट दी कि वे इस तरह की शिकायतें सीधे निर्वाचन आयोग के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। आयोग इन शिकायतों की जांच कर आवश्यक सुधार कर सकेगा।

सुनवाई के दौरान केरल की मतदाता सूची का मामला भी उठा। निर्वाचन आयोग ने बताया कि राज्य में एसआईआर की प्रक्रिया फरवरी में पूरी हो गई थी और इसके बाद हुए विधानसभा चुनाव में इसी मतदाता सूची का इस्तेमाल किया गया था।

वहीं, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) की ओर से पेश अधिवक्ता जी. प्रकाश ने दावा किया कि केरल में करीब 24 लाख मतदाताओं के नाम अब भी सूची से बाहर हैं। इस पर न्यायालय ने पार्टी से ऐसे लोगों का पूरा विवरण मांगा, जो समय की कमी या अन्य कारणों से अपने आवेदन पत्र जमा नहीं कर पाए थे। अदालत ने कहा कि संबंधित मतदाताओं की जानकारी मिलने के बाद निर्वाचन आयोग उनके मामलों की जांच कर आवश्यक सुधार कर सकता है।

सुनवाई के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता राजू रामचंद्रन ने एक अन्य याचिकाकर्ता की ओर से पक्ष रखते हुए आरोप लगाया कि केरल में विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए हैं। उन्होंने मांग की कि प्रक्रिया पूरी होने के बावजूद निर्वाचन आयोग इस संबंध में विस्तृत हलफनामा दाखिल करे और बताए कि मतदाताओं के नाम हटाने के क्या कारण थे।

इस पर सर्वोच्च न्यायालय ने निर्वाचन आयोग को संबंधित याचिका और राजू रामचंद्रन की ओर से प्रस्तुत लिखित टिप्पणी, दोनों पर अपना जवाब दाखिल करने को कहा।

वाराणसी-नई दिल्ली के बीच वंदे भारत शयनयान सेवा शुरू, योगी और अश्विनी वैष्णव ने दिखाई हरी झंडी

वाराणसी (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बनारस रेलवे स्टेशन से वाराणसी-नई दिल्ली के बीच वंदे भारत शयनयान एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर बनारस-प्रयागराज रामबाग और बनारस सिटी-राजातालाब के बीच मेमू रेल सेवाओं का भी शुभारंभ किया गया। इन नई सेवाओं से वाराणसी और आसपास के क्षेत्रों में रेल संपर्क बेहतर होने के साथ लंबी दूरी की रात्रिकालीन यात्रा अधिक सुविधाजनक होगी।



कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण और यात्री सुविधाओं के विस्तार को प्राथमिकता दी जा रही है। वाराणसी को एक वंदे भारत शयनयान रेलगाड़ी और 10 मेमू सेवाओं की सौगात मिली है। उन्होंने कहा कि वंदे भारत शयनयान सेवा से वाराणसी और राष्ट्रीय राजधानी के बीच रात्रिकालीन रेल संपर्क मजबूत होगा। लंबी दूरी की रात की यात्रा करने वाले यात्रियों को आधुनिक, आरामदायक और सुविधाजनक विकल्प मिलेगा।

उन्होंने कहा कि मेमू सेवाओं के विस्तार से वाराणसी और आसपास के क्षेत्रों में स्थानीय रेल संपर्क बेहतर होगा। इसका लाभ दैनिक यात्रियों, विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों और आम नागरिकों को मिलेगा। प्रधानमंत्री की पहल पर कम दूरी की यात्रा को सुगम बनाने के लिए मेमू सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है। इससे वाराणसी के विभिन्न क्षेत्रों को आपस में जोड़ने के साथ प्रयागराज से भी बेहतर रेल संपर्क उपलब्ध होगा। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि वंदे भारत शयनयान रेलगाड़ी में यात्रियों के साथ-साथ रेल चालक और अन्य कर्मचारियों की सुविधाओं तथा सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखा गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की प्राथमिकता है कि गरीब और मध्यम वर्ग के यात्रियों को बेहतर रेल सुविधाएं मिलें। इसी उद्देश्य से रेलगाड़ी का किराया भी किफायती रखा गया है।

मेमू सेवाओं से विद्यार्थियों को विशेष लाभ मिलने की उम्मीद है। विद्यार्थियों के लिए मासिक सीजन टिकट की दर वाराणसी क्षेत्र में 95 रुपये और वाराणसी से प्रयागराज के लिए 220 रुपये निर्धारित की गई है। इससे विद्यार्थियों को कम खर्च में नियमित आवागमन की सुविधा मिलेगी। अश्विनी वैष्णव ने देश में तीव्र गति रेल नेटवर्क के विस्तार की योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि प्रस्तावित बुलेट ट्रेन के उत्तरी गलियारे के तहत दिल्ली, आगरा, कानपुर, लखनऊ, पटना और गुवाहाटी जैसे प्रमुख शहरों को जोड़ने की योजना है। उन्होंने प्रस्तावित यात्रा समय का उल्लेख करते हुए कहा कि इस परियोजना के पूरा होने पर दिल्ली से कानपुर की दूरी लगभग एक घंटे 45 मिनट, दिल्ली से आगरा 59 मिनट और दिल्ली से लखनऊ दो घंटे 12 मिनट में तय की जा सकेगी। इसी तरह वाराणसी से लखनऊ की यात्रा एक घंटे 21 मिनट, वाराणसी से पटना लगभग एक घंटे और वाराणसी से दिल्ली करीब तीन घंटे 33 मिनट में पूरी हो सकेगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इस परियोजना पर तेजी से काम किया जा रहा है और इसमें स्वदेशी निर्माण को प्राथमिकता दी जाएगी। यह देश की आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण सुविधा साबित होगी।

एयर चीफ मार्शल आशुतोष दीक्षित बने भारतीय वायुसेना के नए प्रमुख, एपी सिंह की ली जगह

नई दिल्ली (एजेंसी)। एयर चीफ मार्शल आशुतोष दीक्षित ने भारतीय वायुसेना के नए प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने एयर चीफ मार्शल एपी सिंह का स्थान लिया है, जो 43 वर्षों की गौरवशाली सैन्य सेवा के बाद सेवानिवृत्त हो गए। नए वायुसेना प्रमुख आशुतोष दीक्षित को रणनीतिक योजना बनाने और सैन्य अभियानों के दौरान सूझबूझ से निर्णय लेने की क्षमता के लिए जाना जाता है। इससे पहले वह भारतीय वायुसेना के उप-प्रमुख के पद पर कार्यरत थे।

उप-प्रमुख बनने से पहले एयर चीफ मार्शल दीक्षित ने एकीकृत रक्षा स्टाफ मुख्यालय में एकीकृत रक्षा स्टाफ प्रमुख के रूप में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई थी। वह चीफ ऑफ इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इस पद पर रहते हुए उन्होंने तीनों सेनाओं के बीच समन्वय और संयुक्त सैन्य योजना से जुड़े कार्यों में योगदान दिया।

एयर चीफ मार्शल दीक्षित कुशल लड़ाकू विमान पायलट होने के साथ-साथ प्रायोगिक परीक्षण पायलट भी हैं। उन्हें विभिन्न प्रकार के लड़ाकू और परिवहन विमानों को उड़ाने का व्यापक अनुभव है। उन्होंने मिराज-2000, जगुआर, मिग विमानों के विभिन्न संस्करणों, स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस, हॉक, किरण, एएन-32 और आईएल-78 जैसे विमानों पर 3,500 घंटे से अधिक उड़ान भरी है।

एयर चीफ मार्शल दीक्षित भारतीय सशस्त्र बलों के कई महत्वपूर्ण सैन्य अभियानों का हिस्सा रहे हैं। इनमें कारगिल युद्ध के दौरान चलाया गया 'ऑपरेशन सफेद सागर', 'ऑपरेशन रक्षक', 'कोप इंडिया' और 'ऑपरेशन सिंदूर' प्रमुख हैं। इन अभियानों में उनकी भूमिका ने उन्हें सैन्य संचालन और रणनीतिक योजना के क्षेत्र में व्यापक अनुभव प्रदान किया है। दीक्षित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के छात्र रहे हैं। उन्होंने बांग्लादेश के रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज और भारत के राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय से उच्च सैन्य शिक्षा प्राप्त की है।

कांग्रेस के 'वोट चोरी' आरोपों के जवाब में भाजपा ने शुरू किया 'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' अभियान

जयपुर (एजेंसी)। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के बीच राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई है। कांग्रेस की ओर से लगाए जा रहे 'वोट चोरी' के आरोपों के जवाब में भाजपा ने 'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' अभियान शुरू किया है। इसी सिलसिले में जयपुर स्थित भाजपा प्रदेश मुख्यालय में केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने पत्रकार वार्ता कर कांग्रेस नेतृत्व और विशेष रूप से राहुल गांधी पर निशाना साधा।

प्रह्लाद जोशी ने कहा कि जब भी चुनाव में कांग्रेस को जनता नकार देती है, तब पार्टी संवैधानिक संस्थाओं, अदालतों और देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर सवाल उठाने लगती है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस देश में भ्रम, भय और अस्थिरता का माहौल बनाने का प्रयास कर रही है। उनके अनुसार, कांग्रेस नेतृत्व एक ऐसे असफल राजनीतिक अभियान को बार-बार नए रूप में जनता के सामने पेश करने की कोशिश कर रहा है, जिसे लोग पहले ही खारिज कर चुके हैं।

केंद्रीय मंत्री ने दावा किया कि प्रशांत भूषण और राहुल गांधी के करीबी लोग खुले तौर पर सत्ता परिवर्तन और शासन व्यवस्था में बदलाव की चर्चा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में सरकार बदलने का एकमात्र संवैधानिक रास्ता चुनाव है। भारत की लोकतांत्रिक परंपराएं देश के मूल्यों में शामिल हैं और सत्ता का परिवर्तन मतदाताओं के फैसले से ही संभव है।

जोशी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस की ओर से सत्ता परिवर्तन के संदर्भ में बांग्लादेश का उदाहरण दिया जा रहा है और राहुल गांधी भी ऐसे विचारों का समर्थन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ हिंसा और अत्याचार की घटनाएं सामने आ रही हैं। ऐसे में वहां की परिस्थितियों का उदाहरण देकर भारत में राजनीतिक अस्थिरता की बात करना उचित नहीं है।

राहुल गांधी की ओर से लगातार लगाए जा रहे 'वोट चोरी' के आरोपों पर सवाल उठाते हुए जोशी ने कहा कि कांग्रेस को चुनाव आयोग और देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर भरोसा करना चाहिए। उन्होंने कर्नाटक विधान परिषद के चुनावों का उल्लेख करते हुए दावा किया कि वहां मतपत्रों से हुए चुनाव में कांग्रेस चारों सीटें हार गई। इसी तरह 28 विधानसभा सीटों पर हुए चुनाव में पार्टी को केवल एक सीट पर जीत मिली।

उन्होंने कहा कि इन चुनावों में सरकारी कर्मचारियों को भी मतदाता सूची में शामिल किया गया था, इसके बावजूद कांग्रेस को अपेक्षित सफलता नहीं मिली। उन्होंने त्रिपुरा के स्थानीय निकाय चुनावों का भी हवाला देते हुए कहा कि वहां मतपत्रों से मतदान होने के बावजूद कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा।

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण पर उठाए जा रहे सवालों के जवाब में जोशी ने कहा कि कांग्रेस का आरोप है कि लगभग 13 करोड़ मतदाताओं के नाम सूची से हटा दिए गए हैं। उन्होंने सवाल किया कि क्या इन सभी नामों को बिना सत्यापन के दोबारा मतदाता सूची में शामिल कर दिया जाना चाहिए?

जोशी के अनुसार, हटाए गए नामों में बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जिनकी मृत्यु हो चुकी है, जो स्थायी रूप से दूसरी जगह जा चुके हैं या जिनके वर्तमान पते का पता नहीं चल पाया है। उन्होंने कांग्रेस से पूछा कि क्या ऐसे लोगों के नाम भी मतदाता सूची में बनाए रखने चाहिए? उन्होंने कहा कि पात्र नागरिकों के नाम जोड़ने की प्रक्रिया अभी भी जारी है और वे ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। कांग्रेस को लोगों को भ्रमित करने के बजाय मतदाता सूची को शुद्ध बनाने की प्रक्रिया में सहयोग करना चाहिए। केंद्रीय मंत्री ने कांग्रेस के चुनाव आयोग के खिलाफ लगातार सवाल उठाने पर भी आपत्ति जताई। उन्होंने पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्तों एम.एस. गिल, टी.एन. शेषन और नवीन चावला का उल्लेख करते हुए कांग्रेस के शासनकाल और उस दौरान चुनाव आयोग के प्रति पार्टी के रवैये पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उद्देश्य चुनावी संस्थाओं को स्वतंत्र और निष्पक्ष बनाए रखना है। उनके अनुसार, संस्थाओं पर किसी प्रकार का दबाव नहीं है और लोकतांत्रिक व्यवस्था संवैधानिक दायरे में काम कर रही है।

न्यायपालिका को लेकर कांग्रेस के रवैये पर टिप्पणी करते हुए जोशी ने कहा कि जब अदालत का फैसला कांग्रेस के पक्ष में आता है तो पार्टी उसे सही बताती है, लेकिन फैसला खिलाफ आने पर न्यायपालिका पर सवाल उठाने लगती है। उन्होंने पूछा कि क्या कांग्रेस को देश की संवैधानिक संस्थाओं और न्यायिक व्यवस्था पर भरोसा नहीं है?

कांग्रेस के विरोध प्रदर्शनों के समय पर भी प्रह्लाद जोशी ने सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को दीपावली के अलावा प्रदर्शन करने का कोई दूसरा समय नहीं मिलता। उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसे प्रदर्शनों से व्यापारिक गतिविधियां प्रभावित होती हैं और व्यापारियों को करीब 20 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। जोशी ने कहा कि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद देश की अर्थव्यवस्था 7.8 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज कर रही है और भारत में 2.40 लाख से अधिक नवाचार आधारित नए उद्यम हैं। ऐसे समय में व्यापारिक गतिविधियों को बाधित करने वाले कदम उचित नहीं हैं।

केंद्रीय मंत्री ने राहुल गांधी के राजनीतिक कार्यक्रमों और विदेश यात्राओं को लेकर भी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी देश में लोकतंत्र और मतदाता सूची को लेकर अभियान चलाते हैं, लेकिन इसी दौरान विदेश यात्रा पर चले जाते हैं। उन्होंने सवाल किया कि राहुल गांधी विदेश में किन लोगों से मिलते हैं और क्या बातचीत करते हैं, इसकी जानकारी सार्वजनिक क्यों नहीं की जाती? उन्होंने यह भी पूछा कि सुरक्षा व्यवस्था छोड़कर बार-बार विदेश जाने की क्या वजह है?

अपने राजस्थान प्रभारी रहने के अनुभव का उल्लेख करते हुए जोशी ने कहा कि संगठनात्मक जिम्मेदारी के दौरान वे लगातार प्रदेश में सक्रिय रहे। उन्होंने कांग्रेस की चुनावी हार के लिए पार्टी कार्यकर्ताओं की मेहनत में कमी के बजाय नेतृत्व की कार्यशैली को जिम्मेदार ठहराया। उनका आरोप था कि कांग्रेस नेतृत्व न तो स्वयं पर्याप्त मेहनत करता है और न ही कार्यकर्ताओं को संगठन में आगे बढ़ने का अवसर देता है।

उन्होंने कांग्रेस विधायक के बेटे से जुड़े एक चुनावी मामले का भी उल्लेख किया और फर्जी अदालती आदेश तथा दो स्थानों पर मतदाता बनने की कथित कोशिश के आरोप लगाए।

चुनाव आयोग के खिलाफ महाभियोग लाने को लेकर विपक्ष में चल रही चर्चा पर सवाल उठाते हुए जोशी ने कहा कि चुनावी हार का जवाब संवैधानिक संस्थाओं को निशाना बनाकर नहीं दिया जा सकता। उन्होंने कहा कि भाजपा का 'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' अभियान इसी मुद्दे पर जनता को जागरूक करने के लिए शुरू किया गया है।

जोशी ने कहा कि भाजपा कांग्रेस की ओर से लोकतंत्र और चुनावी प्रक्रिया पर उठाए जा रहे सवालों का जवाब तथ्यों के साथ देती रहेगी। उन्होंने दावा किया कि ऐसे राजनीतिक अभियानों के जरिए कांग्रेस सत्ता में वापसी नहीं कर पाएगी।

सबका प्यारा हो घर

रॉक अरेंजमेंट मन भाए:-

क्लस्टर फ्रेम्स घर के किसी भी दीवार पर अच्छे लगते हैं। आप यहां नए-पुराने फ्रेम भी लगा सकते हैं। राजस्थानी फड़, बनी-ठनी और मिनिएचर पेंटिंग बहुत रंग-बिरंगी है। ड्राइंग रूम यदि अधिक भरना न चाहते हों, तो एक फ्रेम में इन्हें लगा सकते हैं। एक बड़ी-सी पेंटिंग ड्रॉइंग रूम को आकर्षक बनाने के लिए काफी है। सेंटर टेबल के नीचे मीडियम साइज कारपेट लगाकर रखें। यदि आपके पास ऑरनामेंटल कारपेट है तो उसे अपने ड्राइंग रूम में लगाकर उसके नीचे प्लांटर्स रखें। बजरी में बहुत से गोल पत्थर निकल आते हैं, उन्हें साबुन से धो लें और रगड़कर गमलों के आसपास रखें, इनके बीच में रॉक लिट (जो पत्थर जैसी लगती है, फाइबर ग्लास की बनी होती है) रखें। यह रॉक अरेंजमेंट घरों के अंदर बहुत अच्छा लगता है। इनके पास टेराकोटा के बने घोड़ें रखें, तो आपके अरेंजमेंट में चार चांद लग जाएंगे।

इंडियन कल्चरल लुक:- राजस्थानी कलरफुल कांच वाले कुशन अपने सोफे पर कैजुअली थ्रो करें। इससे ड्रॉइंग रूम में चमक आ जाएगी। दीवान पर गाव-तकिए और कुशन लगाएं।



इनके पास फैंसी छतरी, उसमें लैंप लगाएं। नीचे फ्लोर पर दरी लगाएं। रूम या एरिया को इंडियन लुक देने वाले रंगों का चयन करें जैसे- गेरू, यलो ऑकर, ब्राइट ग्रीन, टरकाइज ब्लू। ऐसे रंगों के कुशन या नैपकिन और टेबल मैट्स लगाने से किसी भी कॉर्नर की शोभा बढ़ जाती है।

बुजुर्गो के लिए:- बुजुर्गो के कमरे में रिमोट कंट्रोल परदे लगाए जा सकते हैं। उनके लिए वायरलैस घंटी रखें। उनका कमरा हमेशा चीयरफुल रंगों से डेकोरेट करें, ताकि वे स्वस्थ और खुश रहें।

पेट्स:- जिन लोगों के घर में पेट्स हैं, वे बारिश के मौसम में उनका खास ध्यान रखें। पैट्स घर के सदस्य की तरह होते हैं, वे भी सफाई और कूल इंटीरियर पसंद करते हैं। घर में 1-2 जगह साफ बोरी रखें, जिससे वे उसको अपनी जगह समझकर उसी पर बैठें, ताकि पूरा घर गंदा न हो।

किड्स रूम:- बच्चों के कमरे में पिन-अप बोर्ड जरूर लगवाएं और उन्हें उसको डेकोरेट करने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके कमरे में रंग-बिरंगे फोटो और पेंटिंग फ्रेम बहुत अच्छे लगते हैं। स्ट्राइप्स के बेड कवर के साथ चेक के कुशन रखें। इससे पैटर्न कॉम्बीनेशन निखरकर आता है।

ओ ब्लड ग्रुप रोकता है गर्भधारण

ओ ब्लड ग्रुप की महिलाओं के लिए गर्भवती होना मुश्किल होता है। किसी महिला का एक विशेष ब्लड ग्रुप होने से यह उसकी प्रजनन क्षमता को प्रभावित करता है और उसके मां बनने के अवसरों को भी सीमित करता है। शोध में पाया गया कि ओ ब्लड ग्रुप की महिलाओं के लिए गर्भवती होना मुश्किल होता है क्योंकि उनके गर्भाश्य में कम अंडे बनते हैं और वे भी खराब गुणवत्ता के। लेकिन इसके विपरीत जिन महिलाओं का ब्लड ग्रुप ए होता है उनकी प्रजनन संभावनाएं बेहतर होती हैं।

याले यूनिवर्सिटी और न्यूयार्क के अल्बर्ट आइंसटाइन कालेज आफ मेडिसिन के शोधकताकर्ताओं ने गर्भधारण करने के लिए उपचार हासिल कर रही 560 महिलाओं का परीक्षण किया जिनकी औसत आयु 35 वर्ष थी। शोधकर्ताओं ने प्रजनन क्षमता का मापदंड माने जाने वाले फोलिकल स्टिमुलेटिंग हार्मोन (एफएचएच) का स्तर जांचने के लिए इन महिलाओं के रक्त के नमूने लिए। एफएसएच का स्तर दस से अधिक होने से पता चलता है कि महिला को गर्भ धारण करने में दिक्कत होगी। एफएसएच का उच्च स्तर इस बात का संकेतक है कि गर्भाश्य में अंडों की संख्या बेहद कम है और उपलब्ध अंडे भी अच्छी गुणवत्ता के नहीं हैं। शोध में यह भी पाया गया कि किसी अन्य ब्लड ग्रुप की महिलाओं के मुकाबले ओ ब्लड ग्रुप की महिलाओं का एफएसएच स्तर दस से अधिक होने की आशंका अधिक रहती है। प्रकाशित रिपोर्ट में बताया गया है कि ब्रिटेन की 44 फीसदी आबादी का ब्लड ग्रुप ओ है। प्रमुख शोधकर्ता डा.एडवड नेजात ने बताया कि प्रजनन उपचार हासिल कर रही दोनों रक्त समूहों की महिलाओं में से ओ रक्त समूह की महिलाओं का एफएसएच स्तर दस से अधिक होने की दोगुनी संभावना थी। उन्होंने बताया कि हमने पाया कि ए और ए बी निगेटिव समूह की महिलाएं गर्भ में अंडों की कम संख्या के प्रभाव से मुक्त थीं। ब्रिटिश फर्टिलिटी सोसायटी के अध्यक्ष टोनी रदरफोर्ड के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया है,यह पहली बार है कि जब मुझे पता चला है कि शोधकर्ताओं ने प्रजनन क्षमता और रक्त समूह के बीच संबंध बताया है।



व्यंजन



शाही लवंग लता

सामग्री :- मैदा 50 ग्राम, खोवा 25 ग्राम, नारियल पावडर आधा चम्मच, खसखस आधा चम्मच, लौंग 5 पीस, इलायची 1 पीस, गुलाब एसेंस 4 से 5 बूँद, घी 200 ग्राम।

विधि :-

50 ग्राम आटे में एक टी स्पून घी का मोयन लें। इस आटे में कम पानी मिलकर मुलायम गूँथ लें। दूसरी तरफ एक पैन में खोवे को हल्का सुनहरा होने तक भून लें। खोवे में एक चम्मच नारियल पावडर, पीसी इलायची, भूनी खसखस और चाहे तो 10 से 15 टुकड़े कटा मेवा मिला लें।

इसके बाद 50 ग्राम शक्कर में 25 एमएल पानी डालकर एक तार की चाशनी बना लें। इसमें 4 से 5 बूँद गुलाब एसेंस मिलाएँ। आटे की छोटी-छोटी लोई बनाकर इसे पतला बेल लें। इसमें खोवे का तैयार मिश्रण भरें और चारों तरफ से पोटली के आकार में मोड़ कर ऊपर लौंग लगा दें। फिर गर्म घी में बादामी रंग होने तक डीप फ्रॉय करें। इस पोटली को तैयार की गई चाशनी में 15 मिनट तक मिलाएँ और ठंडा होने के बाद चाँदी का वर्क लगाकर सर्व करें।

नोट :- 50 ग्राम मैदा में 7 से 8 पीस लवंग लता तैयार होती है। इसे हफ्ते भर एयरटाइट डिब्बे में बंद रखा जाता है।

लाखों को गिरा रहीं हाई हील्स

अपनी लंबाई को थोड़ा ज्यादा दिखाने के लिए हाई हील्स पहनना महिलाओं के लिए आम बात है लेकिन यह अनेक परेशानियों का सबब भी बन सकती है। हाल ही में हुए एक अध्ययन की मानें तो हाई हील्स पहनने की वजह से होने वाली दिक्कतों के चलते तीस लाख से ज्यादा महिलाओं को इलाज कराने की नौबत आ चुकी है।

हाई हील्स की वजह से दिक्कतों का आलम यह है कि इनमें से कई महिलाएं गिरकर अपने दांत और कलाइयां तोड़ चुकी हैं। वहीं, कुछ ऐसी भी हैं जिन्हें इसकी वजह से टखने मुड़ने जैसी तकलीफों से दो-चार होना पड़ रहा है। लेकिन फैशन की दीवानगी का आलम यह है कि ज्यादातर महिलाएं हाई हील से तौबा करने के लिए तैयार नहीं हैं। तकरीबन 60 फीसदी महिलाओं का मानना है कि तमाम तकलीफों के बावजूद वे हाई हील्स पहनना जारी रखेंगी क्योंकि ये उनकी पर्सनैलिटी को निखारता है और लोग उनकी तारीफ करते हैं। इस अध्ययन में 18 से 65 साल के बीच करीब 3,000 महिलाओं को शामिल किया गया।

वाह ! इतनी खूबसूरती

जन्म से सुंदर होने के बावजूद युवावस्था में कील-मुहांसे, झाइयां, आंखों के नीचे कालापन, बालों का झडना जैसी समस्याएं होने लगती हैं। बालों की समस्याओं के लिए खाने और लगाने में ग्वारपाठे (एलोवेरा) का उपयोग कर सकते हैं। बालों के ऊपर एलोवेरा का पल्प (गूदा) सरसों, नारियल या तिल के तेल के साथ बालों में हल्के हाथों से बीस मिनट तक मसाज करें। फिर एक घंटे तक दोनों को लगाकर छोड़ दें। इसके बाद एलोय जोजोबा शैंपू से धो लें। महीने भर में ही आपको बाल गिरने, टूटने, झड़ने से तो निजात मिल ही जाएगी, साथ ही वे काले और घने भी हो जाएंगे।

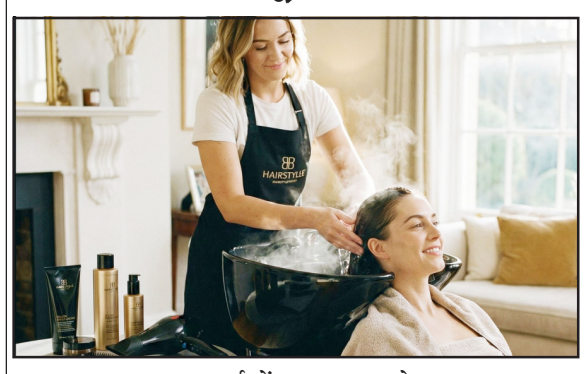


एलोवेरा का इस्तेमाल:- एलोवेरा एंटी फंगल भी होता है। चेहरे के कील-मुंहासे, दाग-धब्बे हटाने के लिए एलोय पल्प (गूदे) को शहद के साथ चेहरे और गर्दन पर लगाएं। 35-40 मिनट बाद हल्के हाथों से मैल छुडाने की तरह इसे हटाएं, रगडे नहीं। इससे आपके कील-मुंहासे, झाइयां, दाग-धब्बे खत्म हो जाएंगे। रंग भी निखरेगा। गोरेपन के लिए आप एलोय पल्प में शहद, जायफल, जौ, आटा मिलाकर अच्छी तरह फेंटकर पैक की तरह लगाएं। चालीस मिनट बाद कच्चे दूध में फेस क्लीन करें। आपका चेहरा चमक उठेगा। एलोवेरा पल्प को गुलाबजल के साथ भी चेहरे पर लगा सकते हैं। गोरेपन के साथ-साथ ये आंखों के नीचे कालेपन को खत्म करेगा। खाना खाने से आधा घंटे पहले 50 एमएल सुबह, 50 एमएल रात को एलोवेरा जूस नेक्टर का सेवन करें। फिर खूब पानी पीएं। इससे आपके शरीर के टॉक्सिन निकल जाएंगे। एलोवेरा नेक्टर आंतों में जमा मल को भी बाहर निकाल देता है। आंवले का पाउडर भी प्रतिदिन रात को सोने से पहले एक चम्मच गुनगुने पानी के साथ ले सकते हैं। आंवला भी त्वचा, बालों और आंखों को बेहतर बनाता है।

साफ मिट्टी का लेप:- साबुन से नहाने से त्वचा खुश्क होती है, कारण कास्टिक का साबुन में होना। इसलिए आप साबुन की बजाय शुद्ध और साफ मिट्टी इस्तेमाल करें। मिट्टी जितनी ज्यादा चिकनी होगी, उतना ही अच्छा रहेगा। बालू रेत या बिखरने वाली मिट्टी न लें।

मिट्टी को रात को भिगो दें। चाहें तो इसे कपड़े से छान भी सकते हैं। उसमें एलोवेरा पल्प, आधा चम्मच हल्दी, दो चम्मच नीम पाउडर यदि संभव हो तो एक चम्मच चंदन पाउडर भी मिला लें। अब आप रातभर उस मिश्रण को किसी मिट्टी के बर्तन में भीगने दें। सुबह नहाने के समय इस मिश्रण को दुबारा अच्छी तरह मिला लें और अपने पूरे शरीर पर मल लें।

आपकी किचन, ब्यूटी पार्लर से कम नहीं



- एक चम्मच मलाई में एक चम्मच सेब का रस का रस मिलाकर, हल्के हाथ से चेहरे पर मलने से कुछ ही दिनों में रंग साफ होने लगता है और त्वचा में निखार आ जाता है।

- मलाई में समुद्री फेन का पाउडर मिलाकर लगाने से चेहरे चेहरे के मुंहासे ठीक हो जाते हैं।

- संतरे के छिलकों पीसकर, मलाई मिलाकर उबटन लगाने से स्किन साफ और मुलायम होती है।

- तीन-चार बादाम, दस-बारह देशी गुलाब की पत्तियां पीसकर और इसमें एक चम्मच मलाई मिलाकर चेहरे पर लगाने से झुर्रियां और त्वचा के धब्बे दूर हो जाते हैं।

- एक चम्मच मलाई में नींबू का रस मिलाकर रोज चेहरे और होंठो पर लगाने से ये फटते नहीं।

- मुल्तानी मिट्टी को पीसकर, मलाई में मिलाकर चेहरे तथा कोहनियों में लगाने में लगाने से रंग में निखार आता है।

- जैतून के तेल में दूध की मलाई मिलाकर चेहरे और गर्दन पर लगाने से चेहरे और गर्दन की त्वचा नम, नर्म और चमकदार हो जाती है। गुलाब जल में नींबू का रस मिला कर चेहरे पर लगाने से चेहरे का रंग साफ हो जाता है।

चुकंदर की जड़ के जूस से भगाएं डिमेंशिया



डिमेंशिया को दूर रखना चाहते हैं तो जनाब रोज एक गिलास चुकंदर के जड़ के रस का सेवन कीजिए। डिमेंशिया से बचाव में चुकंदर की जड़ का रस बेहद लाभकारी हो सकता है। डिमेंशिया भूलने से संबंधित बीमारी है। एक नए अध्ययन में बताया गया है कि अधेड़ लोगों में डिमेंशिया से बचाव में चुकंदर की जड़ का रस बेहद लाभकारी हो सकता है। इसके सेवन से दिमाग में खून का प्रवाह बढ़ता है और उम्र से जुड़ी बीमारियों पर ब्रेक लगता है।

अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि अजवाइन, पालक और बंदगोभी की तरह चुकंदर में भी काफी मात्रा में नाइट्रेट पाया जाता है। उनके मुताबिक, जब लोग नाइट्रेट वाले खाद्या पदार्थ का सेवन करते हैं तो मुंह का बैक्टीरिया उन्हें नाइट्राइट में बदल देता है। अनुसंधान में पाया गया कि नाइट्राइट शरीर में खून के प्रवाह को बढ़ा देता है। खबर में बताया गया है कि उत्तरी कारोलिना के वेक फॉरेस्ट यूनिवर्सिटी में पहली बार नाइट्रेट से भरे जूस का खून के प्रवाह से सीधा रिश्ता जोड़ा गया। अपने प्रयोग में वैज्ञानिकों ने पाया कि नाइट्रेट के उंचे स्तर वाले जूस के पीने से अधेड़ उम्र के व्यक्तियों के दिमाग में खून का प्रवाह बढ़ गया।

खाना खजाना

रम केक



सामग्री : 100 ग्राम काजू, 50 ग्राम किशमिश, 100 ग्राम गुलाब कतरी, 50 ग्राम ऑरेंज पील, 50 ग्राम लेमन पील, 50 ग्राम चिरौंजी, 50 ग्राम खजूर, 50 ग्राम स्वीट जिंजर, 50 ग्राम ब्लैक किशमिश, 3 कप रम। केक के लिए- 250 ग्राम शक्कर, 250 ग्राम छना हुआ मैदा और 6 अंडे।

विधि : केक बनाने से दो दिन पहले सभी प्रकार के मेवों को बारीक काटकर आवश्यकतानुसार रम में भिगो दें। एक बड़े कटोरे में अंडे फोड़कर डालें और फेटे। अब इनमें शक्कर व मैदा डालकर अच्छी तरह से फेंट लें। शक्कर के अच्छी तरह घुल जाने पर रम में भीगे हुए मेवे व 1/4 कप रम मिलाएं। मिश्रण को पुन: एकसार करें। तैयार मिश्रण को चिकनाई लगे सांचे में डालें। सांचे को पहले से गर्म ओवन में 160 डिग्री पर रखें। करीब 40-45 मिनट तक केक बेक करें और ठंडा होने पर सांचे से सावधानीपूर्वक निकालें। स्वादिष्ट रम केक तैयार है

विटामिन ए से भरपूर पुदीने का सेवन है काफी लाभकारी

पुदीना विटामिन ए से भरपूर होने के साथ-साथ बहुत ही गुणकारी एवं शरीर के लिए लाभकारी है। पुदीना का स्वाद अदभुत है और इसकी सुगंध मिलते ही व्यक्ति काफी तरोताजा महसूस करता है।

इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी होता है। यह पेट के विकारों में काफी फायदेमंद होता है। पुदीना के कई फायदे हैं। एक गिलास पानी में 8-10 पुदीने की पत्तियां, थोड़ी-सी काली मिर्च और जरा सा काला नमक डालकर उबालें। 5-7 मिनट उबालने के बाद पानी को छान लें। फिर इसे पीने के बाद यह खांसी, जुकाम और बुखार से काफी राहत पहुंचाता है।

यदि हाजमा खराब हो तो एक गिलास पानी में आधा नींबू निचोड़ें, उसमें थोड़ा-सा काला नमक डालें और पुदीने की 8-10 पत्तियां पीसकर मिलाएं। अब पीड़ित व्यक्ति को इसे पिलाएं, तुरंत लाभ मिलेगा। जब हिचकियां न रुकें तो पुदीने की कुछ पत्तियां लेकर उन्हें पीसें और उनका रस निकालकर पिलाएं, हिचकी आनी बंद हो जाएगी। मुंह की दुर्गंध दूर करने के लिए पुदीने की सूखी पत्तियों को पीसकर उसका चूर्ण बना लें। अब इस चूर्ण को मंजन की तरह दांतों पर रगड़ें। मुंह की दुर्गंध तो दूर हो ही जाएगी, मसूड़े भी मजबूत होंगे। गर्मी के मौसम में लू लगने से बचने के लिए पुदीने की चटनी को प्याज डालकर बनाएं। अगर इसका सेवन नियमित रूप से किया जाए तो लू लगने की आशंका खत्म हो जाती है। मुंहासे दूर करने के लिए पुदीने की कुछ पत्तियां लेकर पीस लें। अब उसमें 2-3 बूंदे नींबू का रस डालकर इसे चेहरे पर कुछ देर के लिए लगाएं। फिर चेहरा ठंडे पानी से धो लें। कुछ दिन ऐसा करने से मुंहासे तो ठीक हो ही जाएंगे, चेहरे पर चमक भी आ जाएगी। पुदीने को सूखाकर पीस लें। अब इसे कपड़े से छानकर बारीक पाउडर बनाकर एक शीशे में रख लें। सुबह-शाम एक चम्मच चूर्ण पानी के साथ लें। यह फेफड़ों में जमे हुए कफ के कारण होने वाली खांसी और दमा की समस्या को दूर करता है।

घरेलू जिम्मेदारियों और काम के दबाव में बढ़ रही महिलाओं की मानसिक परेशानी, जानिए तनाव दूर करने के 7 असरदार उपाय

सुबह-सुबह बच्चों को तैयार कर स्कूल भेजना, पति के लिए नाश्ता और टिफिन तैयार करना, बाकी लोगों के लिए नाश्ता बनाना...दौड़ते-भागते पूरा दिन यों ही बीत जाता है। अगर आप कामकाजी हैं, तो इन सब कामों को निपटाने के बाद खुद भी दौड़ते-भागते ऑफिस पहुंचना यानी घर और बाहर दोनों के बीच सामंजस्य बिठाने की जुगत में आप सुपर वुमन तो बन जाती हैं, मगर इस भागदौड़ का असर आपकी मानसिक सेहत पर पड़ने लगता है। अधिक काम के बोझ से आप अनावश्यक चिंता की शिकार हो जाती हैं और आपको इस बात का भान भी नहीं होता। बात-बात पर चिड़चिड़ापन, बेचैन रहना, किसी तरह के भय का अहसास बना रहना, नींद न आना, छोटी-छोटी बातों को लेकर तनाव में आ जाना, यह सब आपकी चिंता का ही परिणाम होते हैं।

घर में रहें या ऑफिस में, नौकरी, घर, बच्चे, रिश्तेदार और शॉपिंग जैसी सभी चीजें एक साथ महिलाओं के दिमाग में चलती रहती हैं। इनमें जरा भी डिसबैलेंस होता है, तो वे खुद को चिंता से घिरा पाती हैं। अपनी समस्याओं को गुनते रहना महिलाओं की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, जो चिंता का रूप धर लेती है। और यही आगे चलकर तनाव, अवसाद, फोबिया, माइग्रेन जैसी मानसिक समस्याओं का कारण बनती है। जीवनशैली की व्यस्तता और खानपान में लापरवाही से यह समस्या और बढ़ती ही जाती है। वाकई आपको सबकी चिंता है, तो सबसे पहले खुद की चिंता कीजिए। जब आप स्वस्थ रहेंगी, तभी औरों का ख्याल रख पाएंगी।

पग-पग पर मुश्किलें हैं: एक रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं में तनाव का स्तर पुरुषों से अधिक होता है। क्योंकि गृहस्थी का बोझ उठाने वाली महिलाओं में निराशा ज्यादा देखने को मिलती है। कभी आर्थिक तंगी कलह का विषय होती है, तो कभी बच्चों की परवरिश और कभी पत्नी का सोशल न हो पाना आदि। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में महिलाएं नकारात्मक सोच की शिकार होती जाती हैं। दिमाग में उल्टे सीधे ख्यालात आते रहते हैं। और यहीं से शुरू होती है चिंता की कहानी। यह समस्या महिलाओं में प्रेग्नेंसी और मेनोपॉज के समय ज्यादा बढ़ जाती है। क्योंकि इस समय कुछ हारमोनल बदलाव होते हैं, जो तनाव के स्तर को बढ़ा देते हैं।

आप जागेंगी, टेंशन भागेगा: अपनी जिम्मेदारियों को पूरा जरूर करें, लेकिन इसके लिए अपने मन का चैन न खोएं। यह समझ लें कि आपकी क्षमताओं की भी सीमा है। आप यह समझेंगी, तो तनाव भी आपसे दूर रहेगा।

एक्सरसाइज करें: फिजिकल एक्सरसाइज से बॉडी को फायदा करने वाले हारमोन्स का स्राव होता है। अगर आप भी अपनी नियमित दिनचर्या में से 30 से 40 मिनट फिजिकल एक्सरसाइज के लिए निकाल लेती हैं, तो यह आपके लिए फायदे का सौदा साबित हो सकता है। प्राणायाम या वॉकिंग आदि से शरीर फिट तो रहता ही है, मानसिक तौर पर भी आप अच्छा फील करेंगी।

योग व मेडिटेशन : चिंता को दूर करने के लिए आप योग या मेडिटेशन की भी मदद ले सकती हैं। चित्त को शांत रखने में योग या मेडिटेशन का जवाब नहीं है। कम से कम 15 मिनट के लिए भी आप डीप ब्रीदिंग या ध्यान का अभ्यास जरूर करें। संभव हो, तो मॉर्निंग वॉक के लिए भी जाएं। खुली धूप का आनंद भी लें।

सोशल एक्सरसाइज: चूल्हे-चौके को अपना नियति मान उसी में धुलते रहना कहां की बुद्धिमानी है। इससे आप खुद का ही नुकसान करती हैं।

अगर आप स्मार्ट दिखना चाहती हैं, तो सोशल एक्सरसाइज आपके लिए बहुत जरूरी है। कहने का मतलब आपके किसी शौक से है। अगर आपको कोई शौक हो, तो उसे जरूर करें। मसलन, बागवानी करना, पेंटिंग, डांसिंग या सिंगिंग आदि।

दिल की कहें भी : अकसर महिलाएं काम के बोझ के तले दबती जाती हैं, मगर अपने दिल की बात सबके साथ शेयर नहीं कर पातीं। ऐसा कर वे कई बीमारियों को न्यौता भी दे देती हैं। माइग्रेन, तनाव, अवसाद आदि इसी का परिणाम है। किसी भी बात को मन में दबाने से अच्छा है कि आप इसे अपने दोस्त या पार्टनर से शेयर करें। कोई ऐसा दोस्त बनाएं, जिससे दिल की बात कह सकें।

रूटीन बनाएं: अपने काम को समयबद्ध एवं क्रमवार तरीके से करें। यह तनाव से बचने का सबसे बेहतरीन तरीका है। अपनी प्राथमिकताएं तय करें और उसमें अपने मनपसंद काम के लिए समय निकालें। याद रखें अगर आप अपने पॉजिटिव पहलुओं और पूरी तैयारी के साथ तनाव से लड़ेंगीं, तो इसमें जीत आपकी ही होगी।

बैलेंस डाइट: खानपान का असर शरीर पर ही नहीं मन पर भी होता है। इसलिए सही और संतुलित डाइट आपके लिए बहुत जरूरी है। जंक, ऑयली और आर्टिफिशियल फूड से तौबा करें। खाने में हरी साग-सब्जियों के अलावा लो फैट दूध-दही लें। फल या जूस पर्याप्त मात्रा में लें। पानी खूब पिएं। रोजाना कम से कम 6-8 घंटे की नींद अवश्य लें।

हजारों टेंशन हैं, वाइफ की लाइफ में : रिलेशनशिप काउंसलर गीतांजलि शर्मा कहती हैं, सामाजिक तौर-तरीके का अभाव, पति का दुर्व्यवहार, मानसिक या शारीरिक परेशानी, प्यार में धोखा, पति की बेवफाई, दहेज प्रताड़ना, अकेलापन, बच्चों की तकलीफ आदि की वजह से महिलाएं ज्यादा परेशान रहती हैं।

संपादकीय

इससे हासिल क्या होगा?

श्रम सर्वे अगर गिग कर्मियों और घरेलू काम में लगी महिलाओं की केवल गिनती करता है, जबकि उन्हें सामाजिक सुरक्षा मुहैया कराने का कानूनी ढांचा तैयार नहीं होता, तो इस डेटा संग्रह का लाभ संदिग्ध ही रहेगा। नरेंद्र मोदी सरकार ने रोजगार की समझ बदलने की औपचारिक पहल कर दी है। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय जनवरी 2027 से अपने आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) में यह बदलाव लागू करेगा। इसके तहत गिग और प्लेटफॉर्म को कर्मियों तथा घरेलू काम में अवैतनिक योगदान करने वाली महिलाओं को रोजगारशुदा गिना जाएगा। इस परिवर्तन के पक्ष में तर्क है कि जोमैटो, स्विगी, ओला, अर्बन कंपनी आदि जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर लाखों लोग काम कर रहे हैं। नए सर्वे से उनकी संख्या मालूम होगी। पता चलेगा कि वे कितने घंटे काम करते हैं। इसी तरह कारोबार में महिलाओं के योगदान को भी मान्यता मिलेगी। इसका एक और परिणाम होगा कि पीएलएफएस के आंकड़ों में श्रम बल में मौजूद लोगों और रोजगारशुदा लोगों की संख्या बढ़ी हुई दिखेगी। 'विकास का कथानक' लिखने के लिहाज से ये आंकड़े काम के साबित होंगे! लेकिन बड़ा सवाल है कि क्या उन आंकड़ों से संबंधित कर्मियों के हालात बदलेंगे? गिग वर्कर्स को प्लैटफॉर्म कंपनियां 'कर्मचारी' नहीं, बल्कि 'स्वतंत्र ठेकदार' मानती हैं। इसलिए उन्हें ना न्यूनतम वेतन की गारंटी मिलती है, ना स्वास्थ्य बीमा, और ना ही पेंशन। सरकार के सोशल सिक्योरिटी कोडके तहत अपेक्षित सुविधाएं शायद ही कहीं धरातल पर अमल में आई हैं। ऐसे में सर्वे अगर केवल उनकी गिनती करता है और उन्हें सामाजिक सुरक्षा मुहैया कराने का कानूनी ढांचा तैयार नहीं होता, तो इस डेटा संग्रह का लाभ संदिग्ध ही रहेगा। महिलाएं रोज अपने कई घंटे बच्चों-बुजुर्गों की देखभाल, और घरेलू कार्यों में बिना किसी वित्तीय मुआवजे के लगाती हैं। बहरहाल, नए सर्वे में उनके अवैतनिक श्रम को दर्ज करने का प्रतीकात्मक महत्त्व चाहे जो हो, उससे महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधरने की कोई संभावना नहीं बनेगी। जब तक बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल का मजबूत सार्वजनिक इंफ्रास्ट्रक्चर (जैसे क्रेच और केयर सेंटर्स) तैयार नहीं होता, अवैतनिक कार्य का बोझ महिलाओं के कंधों से नहीं हट पाएगा। इसलिए असल चुनौती आंकड़े इकट्ठा करने की नहीं, बल्कि श्रम कानूनों में गिग कर्मियों के अनुकूल संशोधन और महिलाओं को आर्थिक संबल देने की योजनाओं को लागू करने की है। इस मामले में सरकार चुप है!

12 साल बाद भारतीय राजनीति में नई हलचल

सवाल है कोई पार्टी यदि सत्ता में बैठकर भी विपक्ष की तरह लड़ती रहे और विपक्ष में पहुँचकर भी कोई पार्टी खुद को सत्ताधारी समझती रहे तो लोकतंत्र का क्या होगा? पिछले बारह वर्षों की भारतीय राजनीति का यह अजीब किस्सा है। भाजपा सरकार चलाते हुए भी कांग्रेस से ऐसे लड़ती रही मानो देश अभी उसी के कब्जे में हो। कांग्रेस विपक्ष में बैठी रही, लेकिन इस भाव से उबर नहीं पाई कि सत्ता तो उसी की है, बस किसी ने छीन ली है। एक उस सरकार से लड़ती रही जो जा चुकी थी। दूसरी यह मानने को तैयार नहीं हुई कि उसकी सरकार जा चुकी है। सो बार-बार चुनाव हुए। पूरी ताकत से हुए। टेलीविजन पर घमासान लगातार रहा। आरोप लगे, जवाब आए। लेकिन देश की राजनीतिक बहस कितनी आगे बढ़ी? सरकार के पास अपनी कमियों के लिए कांग्रेस थी। कांग्रेस के पास अपनी दुर्दशा के लिए भाजपा। दोनों को एक-दूसरे की जरूरत थी। दोनों इस इंतजाम में सहज भी हो गए।

मैं हाल में कश्मीर और लद्दाख की यात्रा में बार-बार यही बात सोचती हुई थी। दिल्ली से दूर थी। उसके रोज के राजनीतिक शोर से भी। सोचा था, कुछ दिन उससे छुट्टी मिलेगी। लेकिन वहाँ लोगों की बातचीत में राजनीति को लेकर ऐसी उत्सुकता मिली जो दिल्ली में लंबे समय से महसूस नहीं हुई थी। लोग सवाल पूछ रहे थे। केवल नाराजगी में नहीं। जानने की इच्छा से। इस संभावना के उत्साह में कि आगे कुछ बदल भी सकता है। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का क्या होगा? सीजेपी में कितना दम है? उसका आंदोलन क्या सचमुच सत्ता प्रतिष्ठान को परेशान कर सकता है? जेन ज़ी का विरोध कुछ दिनों का उबाल है या नौजवानों के भीतर कुछ ज्यादा गहरा पक रहा है? और इन सबके बीच घूमता वह सवाल— क्या भाजपा वाकई उतनी अजेय है जितनी दिखाई देती है? सवालों से अधिक मुझे उन्हें पूछने की सहजता ने चौंकाया। ऐसा नहीं कि सब भाजपा के खिलाफ थे। या सबकी उम्मीद कांग्रेस से थी। किसी को शक था, किसी को उम्मीद। कुछ को शायद इसी संभावना में मजा आ रहा था कि राजनीति का अगला पन्ना अभी लिखा नहीं गया है।

वर्षों से दिल्ली कश्मीर की चर्चा करती आई है। कश्मीर एक समस्या है। उसे समझना है, संभालना है, उसका समाधान करना है। और अब कश्मीर में बैठी मैं सुन रही थी कि लोग दिल्ली को समझने की कोशिश कर रहे हैं। वहाँ क्या चल रहा है? आगे क्या होगा? किसकी कितनी ताकत है? मानो इस बार पहेली दिल्ली हो गई हो। इसे भारतीयों का राजनीतिक गपशप का पुराना शौक मान सकते हैं। लेकिन क्या बात इतनी ही है? कहीं ऐसा तो नहीं कि हम राजनीति के तयशुदा नतीजों के इतने आदी हो गए हैं कि अनिश्चितता की थोड़ी-सी गुंजाइश भी उत्साह पैदा करने लगी है? जब रोज बताया जाए कि कौन जीतेगा, कौन हार चुका है और किसका कोई भविष्य नहीं है, तब इस धारणा में छोटी-सी दरार भी देखने लायक हो जाती है। एलन मस्क के हवाले से एक सवाल चला कि क्या भारत के असली बॉस मुकेश अंबानी हैं? न कोई प्रमाण, न इससे कोई निष्कर्ष निकाला जा सकता है। लेकिन ऐसे सवाल का चल पड़ना और उसमें लोगों की दिलचस्पी भी कुछ बताती है। लोग पैसे और सत्ता के रिश्ते पर बात करना चाहते हैं। किसकी कहाँ तक पहुँच है? सरकार के फैसलों में किसका कितना असर है? सार्वजनिक सत्ता और निजी संपत्ति के बीच की दूरी आखिर बची कितनी है?

फिर सोनिया गांधी की आने वाली आत्मकथा 'बिलॉन्गिंग: ए जर्नी ऑफ लव' की चर्चा है। सोचें, एक व्यक्ति का जीवन कितने वर्षों तक भाजपा की राजनीति की सामग्री बना रहा। इटली में जन्मी महिला। भारत के सबसे ताकतवर राजनीतिक परिवार में विवाह। फिर कांग्रेस की अध्यक्षता। प्रधानमंत्री पद स्वीकार नहीं करना। बावजूद इसके पार्टी और सरकार में प्रभाव बनाए रखना। उनके विदेशी मूल पर कितने चुनाव लड़े गए, कितने भाषण हुए! मेरी उत्सुकता केवल यह नहीं है कि वे क्या बताएँगी। यह भी है कि देश फिर उसी पुरानी बहस में लौटेगा या उनके जीवन को कुछ अलग ढंग से पढ़ पाएगा? कांग्रेस अपने अतीत से बाहर नहीं निकल पाई। भाजपा ने भी उसे बाहर निकलने देने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। गांधी परिवार कांग्रेस के लिए विरासत रहा तो भाजपा के लिए निशाना। दोनों के लिए अतीत काम का रहा। उधर फारूक अब्दुल्ला हैं। उन्होंने फिर कुछ ऐसा कह दिया जिससे दिल्ली में नाराजगी का परिचित दौर शुरू हो जाए। बारामूला में पाकिस्तान पर उनकी टिप्पणी आई और अपेक्षित प्रतिक्रियाएँ भी आ गईं। मैं सोच रही थी, क्या उमर अब्दुल्ला की सरकार के दौरान अपेक्षाकृत शांति से पुराने योद्धा ऊबने लगे हैं? या दिल्ली को याद दिलाना चाहते हैं कि वे अभी हैं। केवल सम्मानित बुजुर्ग बनकर बैठ जाने का उनका इरादा नहीं है। लेकिन यहाँ भी फर्क देखिए। फारूक अब्दुल्ला पाकिस्तान को चर्चा में वापस ला रहे थे। और जिन कश्मीरियों से मेरी बात हो रही थी, वे भारत की अंदरूनी राजनीति में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे थे। उन्हें दिल्ली की सत्ता के भीतर और उसके सामने बनती चुनौतियाँ जाननी थीं। इसी बीच सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश संजय किशन कौल की आने वाली आत्मकथा 'विदाउट फियर ऑर फेवर' की चर्चा है। न्यायिक मतभेदों की यादें। संस्थाओं के भीतर काम करने के अनुभव। सत्ता और अधिकार के उन गलियारों का विवरण जिन्हें बाहर बैठा नागरिक पूरी तरह देख नहीं पाता। न्यायाधीशों से कहा जाता है कि उनके फैसले बोलने चाहिए। वे अपने संस्मरणों में बोलें तो लोग यह भी जानना चाहेंगे कि फैसलों के पीछे का अनुभव क्या था। ऊपर से देखें तो इन बातों का आपस में संबंध नहीं है। एक अरबपति की कथित टिप्पणी। एक राजनीतिक परिवार की कहानी। एक पुराने नेता का विवाद। एक पूर्व न्यायाधीश की यादें। लेकिन मुझे इनमें एक बात साझा लगी। इन्हें चर्चा का विषय बनने के लिए भाजपा और कांग्रेस की बहुत कम जरूरत पड़ रही है। लोगों की अपनी उत्सुकता है। वे जानना चाहते हैं कि जो बताया जा रहा है, उसके पीछे क्या है? ताकत वास्तव में कहाँ है? और जो आज स्थायी दिखाई देता है, वह कितना स्थायी है? शायद राजनीति के जरूरत से ज्यादा अनुमान योग्य हो जाने पर ऐसा होता है। लोग उसमें कुछ अनसोचा तलाशने लगते हैं। कोई संभावना, जिस पर अभी पार्टियों की मुहर न लगी हो। भाजपा की पिछले वर्षों की बड़ी ताकत यही रही कि देश किस बात पर बहस करेगा, यह वह तय करती थी। कांग्रेस विरोध भी करती थी तो प्राय: उसी के चुने विषयों पर। इतिहास हो, राष्ट्रवाद हो, गांधी परिवार हो या असहमत व्यक्ति की देशभक्ति—सवाल भाजपा बनाती थी। कांग्रेस उत्तर देने में जुट जाती थी। वह सफाई देती थी, प्रतिवाद करती थी और अगले सवाल का इंतजार करती थी।

चुनावी लिहाज से भाजपा को इसका खूब लाभ मिला। लेकिन क्या आज भी लोगों की राजनीतिक जिज्ञासा उसी घेरे में बँधी हुई है? क्या वे अब भी वही सुनना चाहते हैं जो उन्हें वर्षों से सुनाया जा रहा है? इससे कांग्रेस अपने आप प्रासंगिक नहीं हो जाती। उसकी अपनी परीक्षा है। मतदाता सूचियों और चुनाव आयोग पर आरोपों को लेकर एक नवंबर को रामलीला मैदान में उसकी प्रस्तावित रैली को ही लें। यही वह मैदान है जहाँ कभी कांग्रेस सरकार के खिलाफ गुस्सा जमा हुआ था। तब उससे जवाब माँगा जा रहा था। अब वह चाहती है कि लोग उसके साथ खड़े होकर सरकार से जवाब माँगें। लेकिन मैदान भर जाने से आंदोलन नहीं बनता। और आंदोलन से जनादेश तक का रास्ता तो और लंबा है। कांग्रेस को समझना होगा कि भाजपा से नाराज हर व्यक्ति राहुल गांधी का समर्थक नहीं है। सरकार के खिलाफ उठी हर आवाज उसकी वापसी की पुकार नहीं है। जनता का गुस्सा किसी पार्टी की जमा पूँजी नहीं होता कि जरूरत पड़ी और निकाल लिया। उसे सुनना पड़ता है। उसका भरोसा कमाना पड़ता है। अपने आचरण से बताना पड़ता है कि सत्ता मिलने पर उसके सवालों का क्या होगा। जो पार्टी अब भी कभी-कभी ऐसे व्यवहार करती है मानो अपनी सत्ता कहीं रखकर भूल गई हो, उसके लिए यह आसान सबक नहीं है। लेकिन मेरी ज्यादा उत्सुकता भाजपा को लेकर है। सवाल पूछने की इस भूख का वह क्या करेगी? लोगों को बोलने क्यों नहीं दिया जाए? प्रदर्शनकारी प्रदर्शन करें। कांग्रेस नारे लगाए। मीम बनें। नौजवान अपनी भाषा में अपनी नाराजगी कहें। बारह वर्षों से देश चला रही पार्टी, इतने बड़े संगठन और इतनी चुनावी सफलताओं के बाद भी हर नई आवाज से परेशान क्यों हो? भीड़ में कोई नया चेहरा दिखे तो उसे तत्काल खतरा क्यों मान लिया जाए? उलटे हर सवाल के पीछे विरोधी तलाशने की आदत बनी हुई है। किसने उकसाया? कौन पीछे है? किसका एजेंडा है? मानो नागरिक अपने अनुभव से नाराज हो ही नहीं सकता। उसे किसी न किसी ने भेजा होगा। इतनी शक्तिशाली सरकार का लगभग हर आलोचना का जवाब देना जरूरी समझना अपने आप में विचारने की बात है। कुछ सवालों को सुनकर भी छोड़ा जा सकता है। कुछ नाराजगियों को अपनी जगह रहने दिया जा सकता है। भाजपा ने कभी कांग्रेस सरकार को ऐसा बना दिया था कि वह अपनी ही सत्ता में अपने भविष्य से डरी हुई लगने लगी थी। उसे ध्यान रखना चाहिए कि कहीं वही बेचैनी अब उसके अपने व्यवहार में न उतर आए। और उन लोगों पर भी ध्यान देना चाहिए जो अपना राजनीतिक मंच खुद खड़ा कर रहे हैं। नेहा बोरा और अभिजीत दीपके जैसे चेहरे कुछ समय बाद ओझल हो सकते हैं। आगे अपने दम पर नेता भी बन सकते हैं। अभी कौन जानता है? लेकिन उनकी उपस्थिति को केवल इस आधार पर खारिज नहीं किया जा सकता कि वे किसी स्थापित पार्टी के नेता नहीं हैं। राजनीति में खाली जगह पड़ी नहीं रहती। पार्टियाँ उसे न पहचानें तो कोई और उसमें खड़ा हो जाता है। और सरकार से सवाल पूछने वाले हर व्यक्ति की मंजिल कांग्रेस नहीं होती। इसीलिए मुझे आज की अनिश्चितता दिलचस्प लगती है। इसमें 2029 की कोई भविष्यवाणी तलाशना जल्दबाजी होगी। लेकिन यह देखना जरूरी है कि लोग क्या पूछ रहे हैं। किन जवाबों से उनका मन भर गया है। किन संभावनाओं पर वे अब अपने ढंग से बात करने लगे हैं।

मैं छुट्टी पर गई थी। कुछ शांति मिलेगी, ऐसा सोचा था। वहाँ दिल्ली की राजनीति पर लोगों की अटकलें सुनती रही। लेकिन इस बातचीत में दिल्ली के रोज के शोर से अलग एक उत्साह था। लोग केवल सुनी हुई बात दोहरा नहीं रहे थे। अपनी तरफ से पूछ रहे थे—अच्छा, अब आगे क्या? हो सकता है यह हमारे राजनीतिक गपशप के पुराने शौक का ही एक और दौर हो। हो सकता है, भीतर कुछ हलचल भी हो। अभी इसका दावा नहीं करूँगी। लेकिन लौटते हुए एक सवाल साथ आया। बारह वर्ष सत्ता वाले विपक्ष की तरह लड़ते रहे। विपक्ष वाले सत्ता से बेदखल शासकों की तरह इंतजार करते रहे। इस बीच लोगों के अपने सवाल जमा होते गए। अब यदि वे खुद तय करने लगें कि देश में किस बात पर बहस होनी चाहिए, तो दोनों पार्टियाँ क्या करेंगी?

पहले डर लगा कि क्या हम वाकई इस लायक हैं...

अभिनेता रणबीर कपूर और साई पल्लवी इन दिनों फिल्म रामायण को लेकर चर्चा में हैं। रणबीर फिल्म में जहां भगवान राम का किरदार निभा रहे हैं, वहीं साई पल्लवी माता सीता की भूमिका में हैं। दोनों फिल्म के प्रोमोशन के लिए अमिताभ बच्चन के क्विज शो कौन बनेगा करोड़पति के दीपावली स्पेशल एपिसोड में शामिल हुए। इस दौरान अपने किरदार को लेकर दोनों कलाकारों ने बताया कि यह उनके लिए बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

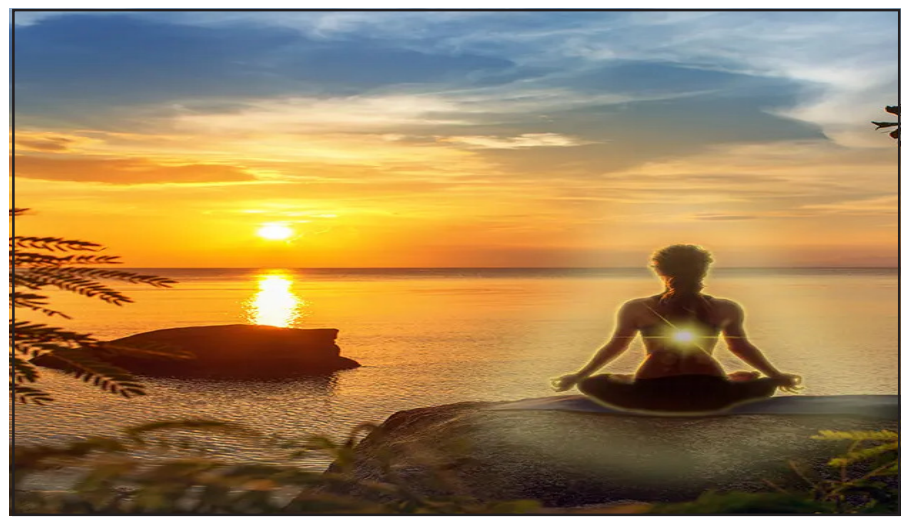
शो के दौरान रणबीर ने भगवान राम का किरदार मिलने के बाद अपने मन में चल रहे विचारों और इस भूमिका की तैयारी के सफर के बारे में बात की। उन्होंने अमिताभ बच्चन को बताया, जब मुझे यह रोल ऑफर हुआ, तो मैं जानता था कि यह सिर्फ एक रोल नहीं है, बल्कि बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मेरा पहला रिएक्शन डर था। मुझे लगा कि क्या मैं इस किरदार के लायक हूँ, क्या मैं इसे निभा पाऊँगा? भगवान श्रीराम से करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी हुई है। रणबीर ने कहा, धीरे-धीरे मेरा यह डर आभार में बदल गया। मुझे महसूस हुआ कि जिंदगी के इस पड़ाव पर मुझे ऐसा किरदार निभाने का मौका मिल रहा है, जो मुझे एक बेहतर कलाकार बनने के साथ-साथ एक बेहतर इंसान बनने में भी मदद कर सकता है।

उन्होंने आगे कहा, इसी दौरान, मैं पहली बार पिता बना और मेरी बेटी राहा का जन्म हुआ। इसलिए मैं इसे भगवान का दिया हुआ तोहफा मानता हूं कि मुझे एक बेहतर इंसान बनने का मौका मिला। मुझे गहराई से रामायण को समझने और इतने अच्छे लोगों के साथ काम करने का अवसर मिला। अपनी बात खत्म करते हुए रणबीर ने कहा, सर, हमारे लिए भगवान श्रीराम जैसा बनना संभव नहीं है, लेकिन उनके आदर्शों से कुछ सीखना हम सभी के लिए बहुत बड़ी बात है। वहीं साई पल्लवी ने बताया कि मां सीता का किरदार निभाते समय वह अपने दिमाग से ज्यादा सोचने के बजाय खुद को इस अनुभव के लिए खुला रखना चाहती थीं। उन्होंने कहा, इस बार मैं ज्यादा दिमाग नहीं लगाना चाहती थी। आमतौर पर जब भी मैं कोई किरदार निभाती हूं, तो सोचती हूं कि मैं उस किरदार के लिए क्या कर सकती हूं। लेकिन पहली बार माँ सीता का किरदार निभाते हुए मेरे मन में यह सवाल आया कि मुझे इस किरदार से क्या मिलेगा? मुझे क्या ज्ञान मिलेगा और मैं इससे क्या सीख पाऊंगी?

मणिपुर चक्र को जागृत करती है रुद्र मुद्रा, जानें करने का सही तरीका

योग और आयुर्वेद में मुद्राओं का विशेष महत्व बताया गया है। हाथों की उंगलियों से बनने वाली ये मुद्राएं शरीर में मौजूद पांच तत्वों को संतुलित करने का काम करती हैं। ऐसी ही एक शक्तिशाली और प्रभावशाली मुद्रा है, रुद्रा मुद्रा। मान्यता है कि इसके नियमित अभ्यास से न सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक असर पड़ता है। रुद्र मुद्रा योग विज्ञान की एक अत्यंत शक्तिशाली हस्त मुद्रा है, जो शरीर में ऊर्जा, मानसिक स्पष्टता और शारीरिक शक्ति को बढ़ाने के लिए जानी जाती है। आयुष मंत्रालय के अनुसार, यह मुद्रा शरीर के मणिपुर चक्र (मानव शरीर के सात मुख्य चक्रों में तीसरा चक्र) को सक्रिय करती है, जो हमारे शरीर में अग्नि और जीवन शक्ति का केंद्र है। रुद्र मुद्रा को आयुर्वेद में पाचन की अग्नि को ठीक करने वाली मुद्रा कहा गया है। इसके अभ्यास से पेट से जुड़ी एसिडिटी, पेट फूलना (गैस) और कब्ज जैसी समस्याओं में काफी राहत मिलती है।

भगवान शिव के एक रूप रुद्र के नाम पर रखी गई इस मुद्रा को अग्नि तत्व की मुद्रा भी कहा जाता है। इस मुद्रा को बनाने के लिए हाथ की तर्जनी (इंडेक्स फिंगर) और अनामिका (रिंग फिंगर) के सिरों को अंगूठे के सिरों से मिलाया जाता है जबकि बीच की और छोटी उंगली सीधी रखी जाती है। योग विशेषज्ञों के अनुसार, रुद्र मुद्रा उन लोगों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है, जो निम्न रक्तचाप की समस्या से जूझ रहे हैं क्योंकि यह रक्त परिसंचरण में सुधार करती



है। दरअसल, हमारा ब्लड प्रेशर सीधे तौर पर रक्त परिसंचरण और अग्नि तत्व से जुड़ा होता है। जब शरीर में अग्नि तत्व कमजोर हो जाता है, तो दिल को पूरे शरीर तक खून पहुंचाने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है और खून की गति धीमी पड़ जाती है, जिसे हम लो बीपी कहते हैं। अंगूठे से मिलने वाली अग्नि की गर्मी से खून की नलियों में सिकुड़न कम होती है और खून का बहाव तेज होता है। रुद्र मुद्रा एक पूरक प्राकृतिक चिकित्सा है। इसे गंभीर चिकित्सीय स्थितियों में आधुनिक दवाओं के विकल्प के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

2027 विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा की बढ़ी मुश्किलें! यूपी से उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर तक सत्ता पर मंडराया खतरा

आंकड़ों का अंकगणित कुछ भी हो, बीजगणित खुल कर संकेत दे रहा है कि इन सभी प्रदेशों की मौजूदा हुकूमतों के लिए अगले चुनावों में अपनी वापसी दर्ज़ कराना मुश्क़िल है। 2022 के विधानसभा चुनावों और 2024 के लोकसभा चुनाव नतीज़ों के मद्देनज़र अंकों के पीछे छिपे उस बीजमंत्र को समझिए, जिस की वज़ह से पांचों प्रदेशों में 2027 की शुरुआत वहां के वर्तमान शासकों के लिए मुसीबतों की गठरी और विपक्ष के लिए सौगातों का संदूक ले कर आ रही है।

अगले साल फरवरी-मार्च में पांच राज्यों उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर ङ्क में विधानसभा के चुनाव होंगे। इन में से पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार है और बाक़ी चारों में भारतीय जनता पार्टी की। आंकड़ों का अंकगणित कुछ भी हो, बीजगणित खुल कर संकेत दे रहा है कि इन सभी प्रदेशों की मौजूदा हुकूमतों के लिए अगले चुनावों में अपनी वापसी दर्ज़ कराना मुश्क़िल है। उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में भाजपा की सरकारें दोबारा नहीं बनेंगी। उत्तर प्रदेश में उसे सरकार बनाने लायक़ स्पष्ट बहुमत हासिल नहीं होगा। पंजाब में 'आप' की सरकार का लौटना भी मुमकिन नहीं लगता है।

2022 के विधानसभा चुनावों और 2024 के लोकसभा चुनाव नतीज़ों के मद्देनज़र अंकों के पीछे छिपे उस बीजमंत्र को समझिए, जिस की वज़ह से पांचों प्रदेशों में 2027 की शुरुआत वहां के वर्तमान शासकों के लिए मुसीबतों की गठरी और विपक्ष के लिए सौगातों का संदूक ले कर आ रही है। सब से पहले उत्तर प्रदेष। वहां 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा 403 में से 255 सीटें जीती थी। मगर इस जीत के गलीचे के नीचे छिपे इस अपशिष्ट पर ज़रा नज़र डालिए कि जीती गई सीटों में से 23 पर भाजपा पांच हज़ार से कम वोट से, 3 सीटें वह तीन हज़ार से कम वोट के अंतर से, 11 सीटें दो हज़ार से कम वोट से, 11 ही सीटें एक हज़ार से कम वोट से और 7 सीटें पांच सौ से भी कम वोट के अंतर से जीती थी। यानी 55 सीटें ऐसी हैं, जो अगले चुनाव में ढाई सौ से ढाई हज़ार वोट इधर-उधर होते ही भाजपा की झोली से नीचे गिर सकती हैं। स्पष्ट बहुमत 202 सीटों का है। 255 में से 55 खिसक गईं तो योगी आदित्यनाथ को सरकार बनाने लायक़ बहुमत अकेले भाजपा के भरोसे तो मिलेगा नहीं।

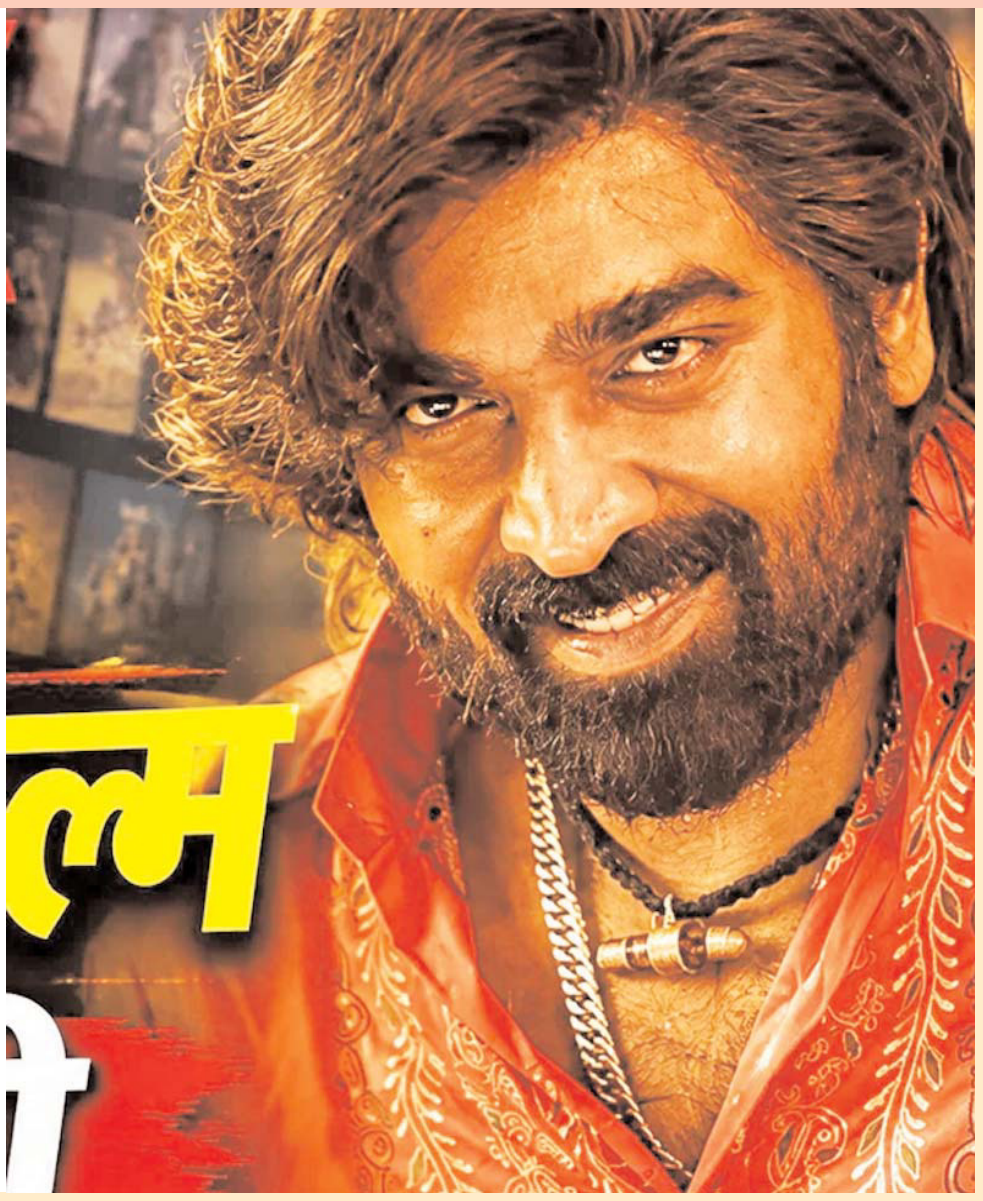
समाजवादी पार्टी और कांग्रेस इस बार पहले से बहुत ज़्यादा अच्छी स्थिति में हैं। इसे समझने के लिए इन तथ्यों पर ध्यान दीजिए। पिछले चुनाव में सपा ने 111 सीटें जीती थीं। 38 और सीटें ऐसी थीं, जो वह बहुत कम वोट के अंतर से हारी थी। 13 सीटों पर उस की हार का फ़र्क़ पांच हज़ार वोट से कम था, 14 पर वह तीन हज़ार से भी कम वोट से, 7 पर एक हज़ार से कम वोट से और 4 पर पांच सौ से भी कम वोट के फ़र्क़ से हारी थी। 2022 का विधानसभा चुनाव सपा और कांग्रेस ने अलग-अलग लड़ा था। सपा ने 347 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे और 32 प्रतिशत की सफलता-दर हासिल की थी। सपा-गठबंधन को पिछले विधानसभा चुनाव में 125 सीटों पर जीत मिली थी। 2024 के लोकसभा चुनाव में सपा विधानसभा के 184 क्षेत्रों में आगे रही है। कांग्रेस विधानसभा के 39 क्षेत्रों में पहले क्रम पर रही। यानी दोनों मिल कर 223 सीटों पर भाजपा से आगे रहे हैं। भाजपा के अभी 255 विधायक हैं, मगर लोकसभा के चुनाव में उन में से सिर्फ़ 162 की सीटों पर भाजपा को बढ़त मिल पाई है। अगर एनडीए के बाक़ी दलों को भी शामिल कर लें तो भी यह आंकड़ा 174 पर पहुंचता है।

यानी 93 सीटों का नुक़सान तो भाजपा को सीधे-सीधे हो रहा है और एनडीए को मिला कर भी योगी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने के लिए 28 विधायकों की ज़रूरत और होगी। युवाओं के देशव्यापी आंदोलन के चलते भाजपा की हालत दिनोंदिन और खराब ही हो रही है। सो, मान कर चलिए कि उत्तर प्रदेश से इस बार भाजपा की विदाई हो रही है।

अब आइए उत्तराखंड पर। वहां भाजपा 70 में से 47 सीटें जीती थी। इन में से 8 सीटें उसे पांच हज़ार से कम वोट के अंतर सें, 4 सीटें तीन हज़ार वोट से कम से और 2 सीटें पर एक हज़ार वोट से कम के अंतर से मिली थीं। यानी 14 सीटें ऐसी हैं, जो इस बार उस के हाथ से खिसक सकती हैं। स्पष्ट बहुमत का आंकड़ा 36 है। भाजपा उस से 3 अंक पीछे रह सकती है। कांग्रेस को पिछले चुनाव में 19 सीटें मिली थीं। मगर 22 विधानसभा क्षेत्रों में उस की हार का अंतर पांच हज़ार वोट से कम रहा था। 7 सीटें वह तीन हज़ार वोट से कम के अंतर से हारी थी और 2 सीटों पर तो उस की हार का फ़र्क़ एक हज़ार से भी कम वोट का था। अगर इन सभी सीटों पर इस बार कांग्रेस अपनी मजबूती बरकरार रख पाती है तो उसे 41 सीटों पर जीत मिल सकती है। ज़ाहिर है कि उत्तराखंड की सरकार के ख़िलाफ़ स्थानीय क्षोभ के चलते वहां से भी भाजपा की विदाई के बहुत ठोस आसार नज़र आ रहे हैं।

पंजाब में भाजपा की ज़मीनी मौजूदगी न पिछले विधानसभा चुनाव में थी और न इस बार दिखाई दे रही है। आम आदमी पार्टी ने 2022 में 117 में से 92 सीटें जीती थीं इन में से 7 सीटें वह पांच हज़ार वोट से कम के अंतर से, 4 सीटें तीन हज़ार वोट से कम से, 1 सीट एक हज़ार वोट से कम से और 1 सीट पांच सौ वोट से भी कम से जीती थी। ये 13 सीटें इस बार उस के पल्लू से छिटक भी जाएं तो भी उसे 59 सीटों के सपष्ट बहुमत से पीछे जाने के लिए 21 और सीटें हारनी होंगी। क्या ऐसा हो पाएगा? हां, ऐसा होने की संभावना लगातार बढ़ती जा रही हैं। 2022 में कांग्रेस सिर्फ़ 18 सीटों पर सिमट गई थी। मगर बीजगणित यह है कि हारी गई सीटों में से 11 वह पांच हज़ार से कम वोटों से, 5 सीटें तीन हज़ार से कम वोट से, 1 सीट एक हज़ार से कम वोट से और 1 पांच सौ से भी कम वोट से हारी थी। यानी ये 18 सीट ऐसी हैं, जिन्हें वह इस बार जीत सकती है। अगर ऐसा हुआ तो कांग्रेस का आंकड़ा न्यूनतम 36 पर तो पहुंच जाएगा। 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को विधानसभा के 37 क्षेत्रों में बढ़त मिली है, जब कि 'आप' सिर्फ़33 विधानसभा क्षेत्रों में ही आगे रह पाई है। यानी उस के मौजूदा विधायकों में से 59 खतरे में हैं। शिरोमणि अकाली दल भी लोकसभा चुनाव के दौरान महज़ 9 विधानसभा क्षेत्रों में ही आगे रह पाई। गोवा में भाजपा पिछली बार 40 में से 20 सीटें जीती थी। इन में से 10 पर वह पांच हज़ार से कम वोट से, 7 पर तीन हज़ार से कम वोट से, 4 पर एक हज़ार से कम वोट से और 2 पर पांच सौ से भी कम वोट से जीती थी। तो ये 23 सीटें ऐसी हैं, जो वह इस बार खो सकती है। मतलब साफ़ है कि 2027 में गोवा में भाजपा की सरकार नहीं बन पाएगी। कांग्रेस वहां पिछले चुनाव में 5 सीटें पांच हज़ार से कम वोट से, 4 सीटें तीन हज़ार से कम वोट से और 1 सीट एक हज़ार से कम वोट के अंतर से हारी थी। इन 10 सीटों को वह इस बार अपने दामन में समेट सकती है। पिछली बार कांग्रेस 11 सीटें जीती थी। ये 10 और मिला कर इस बार वह गोवा में सरकार बनाने की स्थिति में आ सकती है। मणिपुर में 2022 के चुनाव में भाजपा को 60 में से 32 सीटें मिली थीं। इन में से 16 सीटें वह पांच हज़ार से कम वोट से, 10 सीटें तीन हज़ार से कम वोट से, 5 सीटें एक हज़ार से कम वोट से और 2 सीटें पांच सौ से कम वोट से जीती थी। यानी 33 सीटें ऐसी हैं, जो उस के लिए इस बार सुनिष्चित नहीं हैं।

नेटफ्लिक्स की नंबर 1 फिल्म 'बत्ता' की कहानी दिमाग पर छाप छोड़ देगी



नेटफ्लिक्स पर छाई फिल्म

नेटफ्लिक्स की नंबर 1 फिल्म 'बत्ता' की कहानी दिमाग पर छाप छोड़ देगी, ड्रुस्ष्क्र पर शानदार 8.8 की रेटिंग नेटफ्लिक्स की नंबर 1 फिल्म बत्ता की कहानी आप पर एक अलग प्रभाव छोड़ेगी। विजय सेतुपति 'महाराजा' के बाद एक और शानदार फिल्म ले आए हैं। इसलिए इस फिल्म को ड्रुस्ष्क्र पर शानदार 8 ।8 की रेटिंग मिली हुई है। साउथ एक्टर विजय सेतुपति अपनी पिछली कई फिल्मों से ऑडियंस पर गहरी छाप छोड़ चुके हैं। अब नेटफ्लिक्स पर उनकी एक और शानदार फिल्म और शानदार फिल्म आई है जिसका नाम है 'बत्ता'। इस फिल्म की कहानी एक ऐसे किरदार के इर्दगिर्द घूमती है जिसकी जिंदगी एक मासूम बच्चे की वजह से पूरी तरह बदल जाती है। कैसे एक खूंखार डॉन अचानक एक नेक दिल इंसान बन जाता है। फिल्म की कहानी इतनी जबरदस्त है कि इस ड्रुस्ष्क्र पर शानदार 8 ।8 की रेटिंग मिली हुई है।

बत्ता के नाम से डर जाता है साबरी

तमिल फिल्म बत्ता की शुरुआत एक बढ़ई से होती है। वो बड़ी मेहनत से एक दरवाजा तैयार करता है। इस फिल्म में दरवाजे का अहम रोल है जो कहानी में आगे पता चलेगा। फिल्म की कहानी 1986 पर आती है जब साबरी नाम का बच्चा अपने पिता के साथ घूमने जाता है और उसे एक प्यारा सा खिलौना मिलता है। अब साबरी उसी खिलौने के साथ खेलता है। वो अपने स्कूल से घर की तरफ आ रहा होता है जब उसे एक बत्ता नाम का गुंडा कुछ लोगों की पिटाई करता दिखता है। बत्ता ने लोगों की भीड़ में ज्योति नाम के आदमी को बुरी तरह पीटा और उसका हाथ तोड़ दिया। साबरी के मन में बत्ता का खौफ बस जाता है। स्कूल में भी उसे दूसरे बच्चों से बत्ता की बुरी कहानियों के बारे में पता चलता है। वो अब बत्ता के नाम से भी डर जाता है।

स्कूल की बाथरूम एम् बंद हो जाता है बत्ता

फिर एक दिन साबरी स्कूल में अपने उसी खिलौने के सतह खेल रहा होता है। तभी टीचर वो खिलौना उससे छीन कर स्टाफ रूम की अलमारी में बंद कर देती है। उसी दिन से स्कूल की दो महीने की छुट्टियां शुरू हो जाती है। साबरी अपने उस खिलौने के बिना रह नहीं पता और अगले दिन चुपके से स्कूल पहुंच जाता है। वो खिलौना उठाता है घर जाने लगता है। इसी दौरान वो स्कूल का बाथरूम इस्तेमाल करता है। उसे अचानक याद आता है कि वो स्टाफ रूम की अलमारी खुली छोड़ आया है। वो अलमारी बंद करके आता है और बाथरूम का दरवाजा बंद करता है। तभी बाथरूम से आवाज आती है। साबरी डर जाता है वो दरवाजा खोलने जाता है तभी अचानक अंदर से आवाज आती है कि मैं बत्ता बोल रहा हूं। साबरी अपने कदम पीछे खींच लेता है। उसे बत्ता का वो डरावना चेहरा याद आता है। वो दरवाजे पर ताला लगाकर भाग जाता है।

बदल जाता है बत्ता का व्यवहार

बत्ता सोचता है कि काम उसके किसी दुश्मन ने किया है। वो जोर-जोर से दरवाजा तोड़ने की कोशिश करता है। लेकिन वो इस मजबूत दरवाजे को खोल नहीं पाता। ये वही दरवाजा था तो कहानी के शुरू में दिखाया गया था। बत्ता को चिंता होती है तो वो हर रोज बत्ता को खाना देने स्कूल जाता। दरवाजे के नीचे से खाना दे कर आ जाता। बत्ता पहले चिल्लाता है, गुस्सा करता है। लेकिन समय के साथ वो बदलने लगता है। हफ्ते भर तक वो वो उस बाथरूम में बंद होता है। एक दिन बत्ता प्यार से साबरी को आवाज लगाता है और कहता है कि उसे जाने दे। उसकी बेटी है, उसका फंक्शन है। साबरी को उस पर दया आ जाती है। वो कुछ ऐसी प्लानिं करके दरवाजा खोलने की कोशिश करता है जिससे बत्ता उसे नहीं देखे। लेकिन जब वो कुंडी खोलता है तो बत्ता बाहर नहीं निकलता।

बत्ता और साबरी की दोस्ती

साबरी डर जाता है। वो देखता है कि बत्ता बेहोश पड़ा हुआ है। वो लोगों को बुलाता है। होस्पिटल ले जाता जाता है। बाद में पता चलता है कि उस बाथरूम में बत्ता को जहरीले सांप ने काट लिया था। अगर थोड़ी और देरी होती तो शायद बत्ता का बचना मुश्किल था। वो अपनी बीवी और बेटी से मिलकर खूब रोता है। उस बाथरूम में बंध होने के दौरान बत्ता को परिवार की अहमियत समझ आई और वो एक गुंडे से अच्छा इंसान बन गया। लेकिन वो जानना चाहता था कि उसे बाथरूम में किसने बंद किया था। उसे एक दिन पता चलता है कि जिसने उसकी जान बचाई थी वो साबरी था। साबरी और उसके परिवार के साथ उसकी दोस्ती बढ़ जाती है।

बत्ता को आखिर में पता चलता है साबरी का सच

एक दिन वो साबरी को बाइक पर बैठाए कहीं जा रहा होता है। इस दौरान एक जगह बाइक रुकती है। पास की दूकान वाला बताता है कि साबरी ही वो बच्चा है जो हर रोज उनसे खाना ले जाया करता था। इसके बाद बत्ता को बहुत कुछ समझ आने लगता है और साबरी भी सच बता देता है कि कैसे उसके मन में बत्ता को लेकर डर था। इसी डर की वजह से उसने बंद कर दिया था। इसके बाद वो उसके लिए खाना भी लाता था। बत्ता को नन्हें साबरी की बात सुनकर गुस्सा नहीं आता। बल्कि उसे प्यार आता है और उसे समझ आता है कि उसने एक बच्चे के मन में कितना डर पैदा किया हुआ है। बत्ता और साबरी में एक अलग तरह का रिश्ता बन जाता है।

जाह्नवी कपूर ने रीक्रिएट किया मां श्रीदेवी का 'नगीना' वाला लुक



बॉलीवुड एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर कई मौकों पर अपनी मां एक्ट्रेस श्रीदेवी के लुक को रीक्रिएट कर चुकी हैं। लेकिन इस बार जाह्नवी ने एक ऐसा लुक रीक्रिएट किया है जिसे देखने के बाद सोशल मीडिया यूजर्स हैरान हो गए हैं। साथ ही कुछ ने जाह्नवी को मां श्रीदेवी की हमशक्ल बता दिया। आज हेलोवीन सेलिब्रेशन के लिए जाह्नवी ने अपनी मां श्रीदेवी की फिल्म नगीना का आइकॉनिक लुक रीक्रिएट किया है। इन तस्वीरों में जाह्नवी भी मां की तरह इच्छाधारी नागिन की तरह लुक देती नजर आ रही हैं। जाह्नवी ने अपने हेलोवीन सेलिब्रेशन से कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। पहली तस्वीर फिल्म नागिना के पोस्टर के साथ एडिट की गई है। लेकिन अन्य तस्वीरों में जाह्नवी एकदम अपनी मां श्रीदेवी की तरह नागिन बनी हुई दिख रही हैं। साथ में श्रीदेवी, ऋषि कपूर और अमरीश पुरी की भी शूटिंग के दौरान की असली तस्वीरें शेयर की गई हैं। जाह्नवी ने श्रीदेवी का लुक रीक्रिएट करने के लिए कुछ वैसा ही आउटफिट, लुक और ज्वेलरी कैरी की है। उनकी आंखों में भी नागिन जैसा तेज है। इन तस्वीरों में ओरी भी हैं जो ऋषि कपूर बने हैं और सपेरा अमरीश पुरी के किरदार में एक अन्य शख्स को देखा जा सकता है। तस्वीरें शेयर करते हुए जाह्नवी ने कैप्शन में लिखा, 'हैपी हेलोवीन, मुझे इस आइकॉनिक मूवी का ये पल रीक्रिएट करना ही था।

सलमान ने लगाई गुल्लू-स्काउट की क्लास

रियलिटी शो 'बिग बॉस 20' का दर्शकों के बीच अच्छा खासा बज देखने को मिल रहा है। शनिवार को वीकएंड का वार में होस्ट सलमान खान बीते हफ्ते की बातों को लेकर घरवालों की क्लास लेते नजर आए। जानिए किन कंटेस्टेंट्स को मिली सलमान की ओर से हिदायत। बीते हफ्ते स्काउट की गर्लफ्रेंड काश्वी शो में पहुंचीं थीं, जहां उन्होंने स्काउट और लव को उनके रिश्ते को लेकर खरी-खोटी सुनाई थी और लव से दूरी बनाने को कहा था। अब आज सलमान ने स्काउट से उस दिन को लेकर बात की। पिछले हफ्ते काश्वी ने लव को लेकर कई सवाल खड़े किए थे। इस पर बात करते हुए सलमान ने स्काउट से पूछा, 'अगर आप सचमें लव को बहन मानते थे, तो उस समय आपको बोलना चाहिए था। आपको लव के लिए स्टैंड लेना चाहिए था। आपने क्यों कुछ नहीं बोला? दरअसल, पिछले हफ्ते काश्वी ने आकर लव पर स्काउट को फंसाने के आरोप लगाए थे। सलमान ने इस मामले पर लव को भी अपनी ओर से बात रखने का मौका दिया। लव ने काश्वी से कहा, 'मेरी ओर से शुरू से ही इंटेंशन्स सही थे। अगर आपको कुछ भी क्लैरिटी चाहिए, तो वो आप स्काउट से लो। मैं आपको पर्सनली नहीं जानती हूं, तो मैंने आपको ये अधिकार भी नहीं दिया कि आप मेरे बारे में बात करो।



'एक फिल्म काफी नहीं थी' 'काबिल' के निर्देशक को याद करके भावुक हुए



अमिताभ ने लिखी यह बात

शनिवार को निर्देशक संजय गुप्ता का निधन हो गया। उनके निधन से इंडस्ट्री में गम की लहर दौड़ गई। कई सेलेब्स ने निर्देशक को श्रद्धांजलि दी है। इस कड़ी में अब ऋतिक रोशन और अमिताभ का भी नाम जुड़ गया है। ऋतिक ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट लिखकर निर्देशक को श्रद्धांजलि दी है। अभिनेता ने निर्देशक के साथ हिट फिल्म 'काबिल' में एक साथ काम किया था। उन्होंने फिल्म में संजय के योगदान के लिए आभार जताय है। वहीं अमिताभ बच्चन ने निर्देशक की याद में कविता लिखी है।

ऋतिक की पोस्ट में क्या है?

अभिनेता ने अपने इंस्टाग्राम पर संजय गुप्ता की एक तस्वीर शेयर की। इसके साथ उन्होंने पोस्ट में लिखा, 'संजय, मैं तुम्हें बहुत याद करूंगा। तुम्हारे साथ सिर्फ एक फिल्म काफी नहीं थी। मैं हमारे साथ बिताए समय को हमेशा बहुत प्यार से याद रखूंगा। तुम्हारी हंसी, तुम्हारा जुनून और तुम्हारे अंदर का वो बच्चा जो किसी अच्छे विचार के आते ही खिल उठता था। हमें अभी और भी बहुत कुछ साथ करना था। यह बहुत जल्दी हो गया।

जताया निर्देशक का आभार

ऋतिक ने आगे लिखा 'दोस्त, मैं तुम्हें हमेशा बहुत आभार के साथ याद रखूंगा। काश मैंने तुम्हें और कसकर गले लगाया होता और 'काबिल' के जरिए मुझे जिंदगी का सबसे बेहतरीन अनुभव देने के लिए तुम्हारा शुक्रिया अदा किया होता। कोई कभी पूरी तरह नहीं जान पाएगा कि तुमने उस फिल्म को अपना कितना कुछ दिया था। मेरा दिल टूट गया है, यह बहुत जल्दी हो गया।

संजय गुप्ता को याद कर भावुक हुए अमिताभ

अमिताभ बच्चन ने भी निर्देशक संजय गुप्ता को याद किया है। उन्होंने अपने ब्लॉग पर लिखा 'एक मित्र, एक सहपाठी, एक कलाकार और कला का पुजारी इतनी कम उम्र में चला गया! समझ में ही नहीं आ रहा कि यह सब कैसे हो रहा है।

इस एक्ट्रेस को परवेज मुशर्रफ ने दिया था पाकिस्तान आने का न्योता

अपने किरदार से छोड़ी थी छाप

हिंदी सिनेमा में कई ऐसी फिल्में बनीं है जिन्हें पड़ोसी देश पाकिस्तान से भी खूब प्यार मिला है। पाकिस्तान में भी हिंदी फिल्मों और एक्टर्स को पंसद करने वालों की बड़ी संख्या रही है। सोशल मीडिया के दौर से पहले चिट्ठियों के जरिए एक्टर्स के लिए दूसरे देश से प्यार आया करता था। लेकिन क्या आप जानते हैं बॉलीवुड की एक ऐसी भी एक्ट्रेस है जिन्हें पड़ोसी देश पाकिस्तान से प्यार के साथ देश आने का बुलावा मिला था। पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने बॉलीवुड एक्ट्रेस रानी मुखर्जी को पाकिस्तान आने का न्योता दिया था। इसके पीछे की वजह भी बहुत खास है।

रानी मुखर्जी के इस किरदार ने पाकिस्तान में भी छोड़ी थी छाप

बात 16 अप्रैल, 2005 की है। इस दिन दिल्ली के अशोका होटल में देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह ने एक ऑफिसियल डिनर आयोजित किया था। मौका था पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ, उनकी पत्नी बेगम सहबा मेहमान नवाजी करने का। इस खास मौके पर बॉलीवुड की एक्ट्रेस रानी मुखर्जी भी मौजूद थीं। एक्ट्रेस को पीएम की तरफ से डिनर में शामिल होने का न्योता भेजा गया था। दरअसल, कुछ समय पहले रानी मुखर्जी की फिल्म 'वीर जारा' रिलीज हुई थी। इस फिल्म में रानी मुखर्जी ने एक पाकिस्तानी ह्युमन राइट्स एक्टिविस्ट सामिया सिद्दीकी का किरदार निभाया था। फिल्म के लीड रोल में शाहरुख खान और प्रीति जिंटा थे। लेकिन रानी मुखर्जी के किरदार ने एक अलग छाप छोड़ी थी।

पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति की पत्नी की फेवरेट बन चुकी थीं रानी

रानी के इसी किरदार से परवेज मुशर्रफ की पत्नी बेगम सेहबा मुशर्रफ बहुत प्रभावित थीं। उनकी ही वजह से रानी मुखर्जी इस ऑफिसियल डिनर का हिस्सा बनीं थीं। इस दौरान एक्ट्रेस ने पूर्व पीएम डॉक्टर मनमोहन सिंह से हाथ मिलाने के बाद परवेज मुशर्रफ और उनकी पत्नी से मुलाकात की थी। इस मुलाकात के दौरान दोनों ने एक्ट्रेस को पाकिस्तान आने का न्योता दिया था।



रानी मुखर्जी को नहीं हुआ था विश्वास

पाकिस्तान से मिले इस न्योते के बारे में फिल्म क्रिटिक्स सुभाष के झा से बातचीत की थी। एक्ट्रेस ने कहा था, 'यह मेरे लिए किसी सपने के सच होने जैसा था। मैंने वहां बहुत अच्छा समय बिताया। इस प्रोग्राम का हिस्सा बनकर मुझे लगा कि हां, मैंने कुछ तो कमाया है। बॉर्डर के दोनों तरफ की हस्तियां बहुत ही सभ्य और जमीन से जुड़ी हुई थीं ।जब मुझे न्योता मिला, यो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ और मैं खुशी से झूम उठी। आगे एक्ट्रेस ने कहा कि उनकी फिल्म 'ब्लैक' और 'वीर जारा' का सरहद पार बहुत ज्यादा गहरा असर पड़ा था। डिनर गेस्ट लिस्ट में शामिल होना उनके लिए बहुत गर्व और सम्मान की बात थी। एक्ट्रेस ने बताया था कि पाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल के सभी लोग बहुत अच्छे थे और उनकी तस्वीरें ले रहे थे। रानी ने आगे बताया था कि उस मुलाकात के दौरान परवेज मुशर्रफ ने उन्हें बताया था कि वो पाकिस्तान में कितनी पॉपुलर हैं। पाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल ने उन्हें किसी भी समय पाकिस्तान आने का न्योता दिया था। ये खास समय एक्ट्रेस को हमेशा याद रहेगा।

बॉबी देओल की पीठ पर चढ़ने से हिचकिचाईं एश्वर्या, निर्देशक को दिया ऐसा जवाब,अपनी छवि को लेकर चिंतित थीं



1994 में ऐश्वर्या राय बच्चन मिस वर्ल्ड बन चुकी थीं। चारों तरफ उनकी खूबसूरती के चर्चे थे और दुनिया उन्हें एक खास नजर से देख रही थी। इसके तीन साल बाद 1997 में जब उन्होंने फिल्म 'और प्यार हो गया' से हिंदी सिनेमा में कदम रखा, तो उनके सामने चुनौती सिर्फ अभिनय करने की नहीं, बल्कि मिस वर्ल्ड की छवि से बाहर निकलकर किरदार में ढलने की भी थी। ऐश की डेब्यू फिल्म के निर्देशक राहुल रवैल को आज भी वह किस्सा याद है, जब बॉबी देओल की पीठ पर चढ़ने वाले एक सीन को लेकर ऐश्वर्या झिझक गई थीं। अमर उजाला से खास बातचीत में राहुल ने ऐश से जुड़े ऐसे ही कई दिलचस्प किस्से साझा किए। पढ़ें उनकी जुबानी... 'सच बात तो यह है कि इस फिल्म की कहानी का आइडिया मुझे रोमा मीरचंदानी ने दिया था और वहीं से इस प्रोजेक्ट की गाड़ी आगे बढ़ी। अगर आज कोई यह कहे कि मैं पहले से ही जानता था कि ऐश्वर्या बहुत बड़ी स्टार बनेगी, तो यह सरासर झूठ होगा। फिल्म इंडस्ट्री में आप किसी से मिलकर सिर्फ यह अंदाज लगा सकते हैं कि उसमें कितना दम है। कभी आपका वह आंकलन सही बैठता है, कभी गलत साबित हो जाता है। मैं ऐश्वर्या से तब मिला था जब वह मिस वर्ल्ड का ताज अपने नाम कर चुकी थीं। उनसे मिलकर मुझे इतना जरूर समझ आ गया था कि इस लड़की में गजब का आत्मविश्वास है और यह एक्टिंग भी शानदार कर लेगी। बस फिर क्या था? तभी यह पक्का हो गया था कि इस फिल्म में बॉबी देओल के साथ लीड रोल में ऐश्वर्या ही होंगी।'

'ऐश्वर्या जब सेट पर आईं, तो उनके सिर पर दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला यानी 'मिस वर्ल्ड' का ताज था। वह अपनी इस छवि को लेकर बेहद गंभीर थीं। मुझे सिंगापुर एयरपोर्ट वाला वो वाकया आज भी अच्छे से याद है। हम वहां एक रोमांटिक सीन शूट कर रहे थे, जिसमें उनके किरदार 'आशी' को एकदम बचकाने और नटखट अंदाज में भागकर बॉबी देओल की पीठ पर चढ़ना था।

सीन को समझाते ही ऐश्वर्या ने मना कर दिया

सीन को समझाते ही ऐश्वर्या ने साफ मना कर दिया और मुझसे बोलीं - 'सर, मैं यह सीन नहीं कर सकती! लोग क्या कहेंगे? एक पूर्व मिस वर्ल्ड से कोई ऐसी बचकानी हरकत की उम्मीद थोड़ी करेगा।' लेकिन बात बस इतनी सी थी कि वो नई थीं और उस इमेज को लेकर थोड़ी कॉन्शियस थीं। आज ऐश्वर्या की पहचान उनकी खूबसूरती और ग्लोबल स्टारडम से भी जुड़ी है। लेकिन जब वह आपके साथ अपनी पहली हिंदी फिल्म कर रही थीं, तब क्या आपको कभी लगा था कि उनकी खूबसूरती के चर्चे इतने होंगे कि अभिनय की बात पीछे छूट जाएगी? इस पर राहुल रवैल कहते हैं, 'देखिए, यह बात मन में आई तो जरूर थी कि लोग उनकी खूबसूरती में ही उलझकर रह जाएंगे। लेकिन इसका असली अहसास मुझे तब हुआ, जब फिल्म रिलीज हुई और मैं लंदन में था।

अर्णव चक्रवात ने किसानों की सालभर की मेहनत पर फेरा पानी, खेतों में बिछी तैयार धान की फसल; बजरंगी मिश्रा ने सरकार से तत्काल मुआवजा, निष्पक्ष सर्वे और विशेष राहत पैकेज देने की उठाई मांग

बक्सर (संवाददाता)।



अर्णव चक्रवात के प्रभाव से हुई तेज हवाओं और मूसलाधार बारिश ने बक्सर जिले के किसानों की महीनों की कड़ी मेहनत पर पानी फेर दिया है। प्राकृतिक आपदा के कारण खेतों में पककर तैयार हो चुकी धान की फसल बड़े पैमाने पर जमीन पर बिछ गई है। कई स्थानों पर तेज हवाओं के चलते धान की बालियां खेतों में गिर गई हैं, वहीं लगातार हुई बारिश के कारण खेतों में जलजमाव की स्थिति उत्पन्न हो गई है। फसल बर्बादी के इस दृश्य ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। जिन खेतों में कुछ दिन पहले तक लहलहाती धान की फसल देखकर किसान अच्छी पैदावार और बेहतर आमदनी की उम्मीद लगाए बैठे थे, उन्हीं खेतों में अब गिरी हुई फसल और जमा पानी उनकी आर्थिक परेशानियों की कहानी बयां कर रहे हैं। किसानों के लिए यह नुकसान केवल अनाज की पैदावार कम होने तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे उनके पूरे साल का आर्थिक बजट प्रभावित होने की आशंका है।

दरअसल, धान की खेती किसानों के लिए पूरे वर्ष की आजीविका का एक महत्वपूर्ण आधार होती है। किसान खरीफ सीजन की शुरुआत से ही खेतों की तैयारी, जुताई, बुआई, रोपाई, खाद, बीज, कीटनाशक, डीजल और सिंचाई पर लगातार पैसा खर्च करते हैं। इसके साथ ही खेती के विभिन्न कार्यों में परिवार के सदस्यों की मेहनत और समय भी लगता है। कई किसान अपनी जमा पूंजी लगाकर खेती करते हैं, जबकि बड़ी संख्या में छोटे और सीमांत किसान कर्ज लेकर फसल तैयार करते हैं। ऐसे में जब फसल पककर तैयार होने के बाद कटाई के समय प्राकृतिक आपदा की चपेट में आ जाती है, तो किसानों के सामने आर्थिक संकट गहरा जाता है। अर्णव चक्रवात के कारण धान की फसल के जमीन पर गिरने और खेतों में पानी भरने से किसानों की उम्मीदों को बड़ा झटका लगा है।

किसानों को इस फसल से परिवार की सालभर की जरूरतें पूरी करने की उम्मीद थी। धान की उपज बेचकर उन्हें बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठाना था, बेटियों की शादी के लिए जरूरी धन जुटाना था और बैंक व साहूकारों से लिए गए कर्ज की अदायगी करनी थी। इसके अलावा अगली फसल की तैयारी के लिए बीज, खाद और अन्य कृषि संसाधनों की व्यवस्था भी इसी आमदनी से होनी थी। लेकिन प्राकृतिक आपदा ने किसानों के सामने इन सभी जिम्मेदारियों को पूरा करने की चुनौती खड़ी कर दी है। खेतों में गिरी हुई धान की फसल और जलजमाव के कारण किसान यह समझ नहीं पा रहे हैं कि उनकी मेहनत और खेती में लगाई गई पूंजी की भरपाई कैसे होगी। जिन किसानों ने बेहतर उत्पादन की उम्मीद में खेती पर अधिक खर्च किया था, उनके लिए यह नुकसान और भी गंभीर स्थिति पैदा कर सकता है।

किसानों की इस परेशानी को देखते हुए जनसुराज पार्टी के जिला अध्यक्ष बजरंगी मिश्रा ने राज्य सरकार से प्रभावित किसानों को तत्काल राहत उपलब्ध कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि अर्णव चक्रवात के प्रभाव से हुई तेज हवाओं और मूसलाधार बारिश ने किसानों को भारी नुकसान पहुंचाया है। खेतों में तैयार धान की फसल गिर जाने से किसानों की महीनों की मेहनत प्रभावित हुई है। ऐसे समय में सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी है कि प्रभावित किसानों की वास्तविक स्थिति का आकलन कर उन्हें शीघ्र आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने कहा कि किसान के लिए उसकी फसल केवल अनाज नहीं होती, बल्कि उसके पूरे परिवार की सालभर की आजीविका, आर्थिक सुरक्षा और भविष्य की उम्मीदों से जुड़ी होती है। इसलिए फसल बर्बादी को केवल सरकारी आंकड़ों और कागजी रिपोर्ट तक सीमित रखकर नहीं देखा जाना चाहिए।

बजरंगी मिश्रा ने मांग की कि प्रभावित इलाकों में तत्काल प्रशासनिक टीमें भेजी जाएं और गांव-गांव जाकर खेतों में हुई फसल क्षति का निष्पक्ष एवं पारदर्शी सर्वे कराया जाए। उन्होंने कहा कि सर्वे की प्रक्रिया केवल औपचारिकता बनकर नहीं रहनी चाहिए, बल्कि अधिकारियों को वास्तविक स्थिति का जायजा लेने के लिए खेतों तक पहुंचना चाहिए। जिन किसानों की धान की फसल तेज हवाओं के कारण जमीन पर गिर गई है और जिनके खेतों में बारिश का पानी जमा हो गया है, उनके नुकसान का सही तरीके से आकलन किया जाना चाहिए। इससे यह स्पष्ट हो सकेगा कि किस क्षेत्र में कितनी फसल प्रभावित हुई है और किन किसानों को कितनी सहायता की आवश्यकता है।

उन्होंने विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों को राहत प्रक्रिया में प्राथमिकता देने की मांग की। बजरंगी मिश्रा का कहना है कि छोटे किसानों के पास खेती के अलावा आमदनी के सीमित साधन होते हैं। वे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अक्सर कर्ज लेकर खेती करते हैं। ऐसे में फसल खराब होने पर उनके सामने आर्थिक संकट सबसे अधिक गंभीर हो जाता है। इसलिए सर्वे के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि वास्तविक नुकसान झेलने वाला कोई भी पात्र किसान सरकारी सहायता से वंचित न रह जाए। उन्होंने कहा कि फसल क्षति का आकलन वास्तविक नुकसान के आधार पर होना चाहिए और उसी अनुपात में मुआवजे की राशि निर्धारित की जानी चाहिए, ताकि प्रभावित किसानों को उचित राहत मिल सके।

जनसुराज जिलाध्यक्ष ने यह भी स्पष्ट किया कि केवल फसल क्षति का सर्वे करा देना किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं है। सर्वे पूरा होने के बाद मुआवजे की राशि समय पर किसानों तक पहुंचाना भी उतना ही जरूरी है। यदि सर्वे की प्रक्रिया पूरी होने के बावजूद आर्थिक सहायता मिलने में लंबा समय लगता है, तो इसका सीधा असर किसानों की रोजमर्रा की जरूरतों और अगली खेती की तैयारी पर पड़ेगा। उन्होंने सरकार से मांग की कि प्रभावित और पात्र किसानों को फसल बीमा योजना तथा अन्य कृषि सहायता का लाभ भी उपलब्ध कराया जाए। किसानों को मिलने वाली सहायता प्रक्रिया सरल और समयबद्ध होनी चाहिए, ताकि प्राकृतिक आपदा से प्रभावित परिवारों को जल्द राहत मिल सके।

बजरंगी मिश्रा ने जलजमाव की समस्या पर भी तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि जिन खेतों में बारिश का पानी जमा है, वहां से पानी निकालने की व्यवस्था प्रशासन की ओर से जल्द की जानी चाहिए। खेतों में लंबे समय तक पानी जमा रहने से बची हुई फसल को भी नुकसान पहुंचने की आशंका बनी रहती है। इसलिए प्रभावित क्षेत्रों में जलनिकासी की व्यवस्था करना जरूरी है, जिससे खेतों में बची फसल को और अधिक नुकसान से बचाया जा सके। उन्होंने प्रशासन से अपील की कि इस दिशा में भी आवश्यक कदम उठाए जाएं, ताकि किसानों की बची हुई उपज को सुरक्षित रखने की संभावना बनी रहे।

उन्होंने बड़े पैमाने पर फसल क्षति वाले क्षेत्रों के लिए विशेष राहत पैकेज घोषित करने की भी मांग की। उनका कहना है कि जहां प्राकृतिक आपदा के कारण धान की फसल को व्यापक नुकसान पहुंचा है, वहां सामान्य सहायता के साथ विशेष आर्थिक राहत की व्यवस्था की जानी चाहिए। इससे उन किसानों को मदद मिल सकेगी, जिनकी खेती की लागत डूब गई है और जिनके सामने परिवार का भरण-पोषण करने के साथ-साथ कर्ज चुकाने तथा अगली फसल की तैयारी करने की चुनौती है। उन्होंने कहा कि किसानों को मिलने वाली सहायता केवल घोषणा तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उसका लाभ वास्तविक रूप से प्रभावित परिवारों तक पहुंचना चाहिए।

बजरंगी मिश्रा ने कहा कि किसान की पीड़ा को केवल आंकड़ों में नहीं समझा जा सकता। खेत में खड़ी फसल के साथ किसान के परिवार की उम्मीदें, बच्चों का भविष्य, घरेलू जिम्मेदारियां और वर्षों की मेहनत जुड़ी होती है। किसान पूरे मौसम अपनी फसल को तैयार करने में लगा रहता है और कटाई के समय उसे अपनी मेहनत का परिणाम मिलने की उम्मीद होती है। लेकिन जब प्राकृतिक आपदा के कारण तैयार फसल खेतों में बिछ जाती है, तो उसकी आर्थिक स्थिति अचानक कमजोर हो जाती है। ऐसे समय में किसानों को केवल सांत्वना और आश्वासन देने के बजाय ठोस सहायता उपलब्ध कराना आवश्यक है।

उन्होंने राज्य सरकार से अपील की कि अर्णव चक्रवात से प्रभावित किसानों की स्थिति को गंभीरता से लेते हुए राहत और मुआवजे की प्रक्रिया में किसी तरह की अनावश्यक देरी नहीं की जाए। प्रशासनिक अधिकारियों को प्रभावित गांवों में भेजकर तत्काल सर्वे कराया जाए, नुकसान के अनुरूप मुआवजा निर्धारित किया जाए, पात्र किसानों को फसल बीमा और कृषि सहायता का लाभ मिले तथा जलजमाव वाले खेतों से पानी निकालने की व्यवस्था की जाए। साथ ही, जहां फसल का नुकसान अधिक हुआ है, वहां विशेष राहत पैकेज की व्यवस्था की जाए।

कुल मिलाकर, अर्णव चक्रवात के प्रभाव से धान की फसल को पहुंचे नुकसान ने किसानों के सामने गंभीर आर्थिक चुनौती खड़ी कर दी है। खेती में लगाई गई पूंजी, परिवार की जरूरतों और अगली फसल की तैयारी को लेकर किसानों की चिंता बढ़ गई है। ऐसे में जनसुराज पार्टी के जिला अध्यक्ष बजरंगी मिश्रा ने सरकार से तत्काल हस्तक्षेप कर प्रभावित किसानों को उचित मुआवजा और आर्थिक सहायता देने की मांग उठाई है। अब किसानों की उम्मीद प्रशासनिक सर्वे, समयबद्ध राहत और नुकसान के अनुरूप मुआवजे पर टिकी है। किसानों को राहत पहुंचाने के लिए जल्द और प्रभावी कदम उठाना जरूरी है, ताकि प्राकृतिक आपदा से प्रभावित अन्नदाताओं को इस कठिन परिस्थिति से उबरने में मदद मिल सके।

कल सिमरी के आशा पड़री में मनाई जाएगी कैलाशपति मिश्र की 14 वीं पुण्यतिथि

ब्रह्मपुर (संवाददाता)।

भाजपा के भीष्म पितामह माने जाने वाले श्रद्धेय कैलाशपति मिश्रा की 14वीं पुण्यतिथि तीन नवंबर को ब्रह्मपुर विधानसभा क्षेत्र के सिमरी प्रखंड के आशा पड़री में श्रद्धापूर्वक मनाई जाएगी। कार्यक्रम की तैयारी को लेकर कैलाशपति मिश्रा स्मृति सेवा संस्थान की एक महत्वपूर्ण बैठक रविवार को यहां आयोजित की गई।

बैठक की अध्यक्षता भाजपा डुमरी मंडल अध्यक्ष बंशीधर पांडेय ने की। बैठक में चक्की मंडल अध्यक्ष विनोद कुमार उपाध्याय ने कहा कि श्रद्धेय कैलाशपति मिश्रा केवल भाजपा के नेता ही नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति में सादगी, ईमानदारी, त्याग और संगठनात्मक समर्पण के अद्वितीय उदाहरण थे।

जनसंघ के दौर से लेकर भारतीय जनता पार्टी के गठन और उसके विस्तार तक उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन संगठन को मजबूत बनाने में समर्पित कर दिया। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं व क्षेत्रवासियों से 3 नवंबर को आशा पड़री पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित करने की अपील की।

बैठक में नियाजीपुर मंडल अध्यक्ष आतिश लाल, बगेन मंडल अध्यक्ष उदय उज्जैन, चक्की मंडल अध्यक्ष विनोद कुमार उपाध्याय, मनजी पासवान, सोनू पांडेय, राहुल कुमार, मोहन दुबे, राज कुमार, लक्ष्मण श्रीवास्तव सहित दर्जनों पार्टी कार्यकर्ता व गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

उर्दू प्राथमिक विद्यालय खीरी में हुआ अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी

(संवाददाता)। राजपुर प्रखंड स्थित खीरी उर्दू प्राथमिक विद्यालय में अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी हुई। थीम रखा गया था स्वच्छता : हमारी संस्कृति। जिसके माध्यम से अभिभावकों एवं बच्चों को स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया गया। साथ ही साफ-सफाई की आदतों व स्वच्छ वातावरण के प्रति जागरूक किया गया। इस दौरान शिक्षकों ने अभिभावकों से बच्चों में व्यक्तिगत स्वच्छता पर जोर देने की बात बतायी गई। साथ ही यह भी बताया गया कि घर एवं विद्यालय की साफ-सफाई रखना है। अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने की आदत विकसित करने की अपील की। बच्चों को यह बताया गया कि स्वच्छता केवल एक आदत नहीं है बल्कि हमारी संस्कृति, संस्कार और सामाजिक जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस अवसर पर बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों को बताया गया। अभिभावकों की विद्यालय के प्रति सहभागिता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पैरेंट्स ऑफ द मंथ मरियम खातून रही। वहीं स्टूडेंट ऑफ द मंथ के लिए आदिश अंसारी को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रधान शिक्षक धनंजय मिश्र, वरीय शिक्षक सौलत महमूद खान, शिक्षक जमशेद आलम, शमशाद आलम, शाइस्ता परवीन, जावेद खान व गौरव यदुवंशी उपस्थित रहे।

चौसा बाजार घाट पर 358वें रविवार को भी जारी रहा स्वच्छता अभियान

निर्मल गंगा स्वच्छता अभियान के तहत कई वर्षों से लगातार चल रही मुहिम, संयोजक भरत पाण्डेय के नेतृत्व में जुटे समिति के सदस्यों ने संभाली सफाई की जिम्मेदारी; मंगल देव पासवान, राधेश्याम चौधरी, राजेन्द्र सिंह, मो. आंखू और प्रकाश कुमार सहित अन्य लोगों ने लिया हिस्सा, गंगा घाटों को स्वच्छ और सुंदर बनाए रखने का दिया संदेश

न्यूज। चौसा (बक्सर)। गंगा नदी और उसके घाटों को स्वच्छ बनाए रखने के उद्देश्य से चलाया जा रहा निर्मल गंगा स्वच्छता अभियान लगातार जारी है। इसी अभियान के तहत रविवार, 1 नवंबर 2026 को बक्सर जिले के चौसा बाजार घाट पर 358वें रविवार को स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्थानीय गंगा युवा समिति के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में समिति के सदस्यों ने श्रमदान कर घाट की सफाई की। अभियान का नेतृत्व समिति के संयोजक भरत पाण्डेय ने किया। लगातार कई वर्षों से प्रत्येक रविवार को चलाए जा रहे इस स्वच्छता अभियान के माध्यम से गंगा घाटों की साफ-सफाई के साथ लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है।

रविवार को आयोजित 358वें साप्ताहिक श्रमदान कार्यक्रम में गंगा युवा समिति के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान चौसा बाजार घाट परिसर में सफाई का कार्य किया गया। अभियान में शामिल सदस्यों ने सामूहिक रूप से श्रमदान करते हुए घाट को स्वच्छ बनाए रखने की जिम्मेदारी निभाई। समिति की ओर से लगातार चलाए जा रहे इस प्रयास का उद्देश्य केवल एक दिन सफाई करना नहीं, बल्कि स्थानीय लोगों में स्वच्छता को लेकर स्थायी जागरूकता पैदा करना भी है। प्रत्येक रविवार को आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम सामूहिक भागीदारी और सामाजिक जिम्मेदारी का उदाहरण बन रहा है। स्वच्छता अभियान के संयोजक भरत पाण्डेय के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में मंगल देव पासवान, राधेश्याम चौधरी, राजेन्द्र सिंह, मो. आंखू, प्रकाश कुमार सहित समिति के अन्य सदस्य शामिल हुए। सभी सदस्यों ने मिलकर घाट की साफ-सफाई में योगदान दिया। श्रमदान के दौरान सदस्यों ने गंगा घाटों को स्वच्छ रखने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया।

महादलित टोले में छापेमारी कर 45 लीटर शराब बरामद

बक्सर (संवाददाता)। बिहार में अवैध शराब के कारोबार पर रोक लगाने के लिए पुलिस की ओर से लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में बक्सर जिले के डुमरांव अनुमंडल अंतर्गत कोरानसराय थाना पुलिस ने अवैध देसी शराब के कारोबार के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक महादलित टोले में छापेमारी की। पुलिस की इस कार्रवाई के दौरान मौके से कुल 45 लीटर देसी शराब बरामद की गई। साथ ही शराब के अवैध कारोबार में संलिप्त होने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपितों की पहचान लखमुनिया देवी और बीगन मुसहर के रूप में हुई है। दोनों उसी मोहल्ले के रहने वाले बताए गए हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, कोरानसराय थाना क्षेत्र के एक महादलित टोले में देसी शराब के अवैध कारोबार की सूचना पुलिस को मिली थी। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए छापेमारी की योजना बनाई। इसके बाद थानाध्यक्ष प्रमोद कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम संबंधित इलाके में पहुंची और तलाशी अभियान चलाया। पुलिस की टीम ने टोले में पहुंचकर संदिग्ध ठिकानों की जांच की। इस दौरान तलाशी में 45 लीटर देसी शराब बरामद हुई। मौके पर मौजूद लखमुनिया देवी और बीगन मुसहर को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। पुलिस की इस कार्रवाई को क्षेत्र में अवैध शराब के कारोबार के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान का हिस्सा माना जा रहा है। छापेमारी के दौरान इतनी बड़ी मात्रा में देसी शराब की बरामदगी के बाद इलाके में अवैध शराब के धंधे से जुड़े लोगों के बीच हड़कंप मच गया। पुलिस ने बरामद शराब को अपने कब्जे में लेकर दोनों गिरफ्तार आरोपितों के खिलाफ आवश्यक कानूनी कार्रवाई शुरू की। बताया जाता है कि कोरानसराय थाना क्षेत्र में अवैध शराब के कारोबार को लेकर पुलिस लगातार निगरानी रख रही है। शराब के अवैध निर्माण, भंडारण और बिक्री पर रोक लगाने के उद्देश्य से पुलिस की ओर से समय-समय पर छापेमारी और जांच अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में मिली सूचना के आधार पर महादलित टोले में यह कार्रवाई की गई। पुलिस की सक्रियता से अवैध शराब के कारोबार में संलिप्त लोगों को स्पष्ट संदेश देने का प्रयास किया जा रहा है कि इस तरह की गतिविधियों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा चलाने की तैयारी

पद से हटाने के लिए इंडिया गठबंधन ने पारित किया जन-महाभियोग प्रस्ताव; कांग्रेस नेता टीएन चौबे ने लगाए गंभीर आरोप

बक्सर में बिहार प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता टीएन चौबे का बड़ा बयान, मुख्य निर्वाचन आयुक्त पर भाजपा के पक्ष में साजिश रचने और 13 करोड़ मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटाने का लगाया आरोप; कहा- केवल पद से हटाना पर्याप्त नहीं, ज्ञानेश कुमार के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा चलाना भी जरूरी

बक्सर। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ विपक्षी इंडिया गठबंधन ने अपना विरोध तेज कर दिया है। बिहार प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता टीएन चौबे ने दावा किया है कि इंडिया गठबंधन ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार को पद से हटाने के लिए जन-महाभियोग प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया है। उन्होंने ज्ञानेश कुमार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि उनके खिलाफ केवल पद से हटाने की कार्रवाई पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि उन पर देशद्रोह का मुकदमा भी चलाया जाना चाहिए। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में कथित साजिश में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और चुनावी प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास किया है।

रविवार, 1 नवंबर 2026 को बक्सर में प्रेस बयान जारी कर टीएन चौबे ने कहा कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ विपक्षी इंडिया गठबंधन का रुख बेहद गंभीर है। उन्होंने दावा किया कि गठबंधन के नेताओं ने उन्हें पद से हटाने के लिए जन-महाभियोग प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से सहमति जताई है। चौबे के मुताबिक, इस प्रस्ताव के माध्यम से मुख्य निर्वाचन आयुक्त की भूमिका और उनके कामकाज पर सवाल उठाए गए हैं। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में निर्वाचन आयोग की जिम्मेदारी निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित करने की होती है। ऐसे संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह किसी भी राजनीतिक दल के प्रभाव से मुक्त रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन करे।

टीएन चौबे ने आरोप लगाया कि ज्ञानेश कुमार ने भाजपा की ओर से रची गई कथित साजिश में मुख्य भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग जैसे महत्वपूर्ण संवैधानिक संस्थान की निष्पक्षता पर सवाल उठना लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर विषय है। उनके अनुसार, चुनाव प्रक्रिया में मतदाता सूची की शुद्धता और प्रत्येक पात्र नागरिक के मतदान के अधिकार की सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में शामिल है। यदि किसी भी स्तर पर मतदाताओं के नाम हटाए जाने को लेकर सवाल उठते हैं, तो उसकी निष्पक्ष जांच और जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए।

कांग्रेस नेता ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त पर आरोप लगाते हुए कहा कि चुनाव हराने की कथित साजिश के तहत लगभग 13 करोड़ मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए। उन्होंने इस कार्रवाई को गंभीर बताते हुए कहा कि इतनी बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम हटाए जाने का मामला लोकतांत्रिक अधिकारों से जुड़ा हुआ है। चौबे ने आरोप लगाया कि इस पूरी प्रक्रिया में ज्ञानेश कुमार की भूमिका की जांच होनी चाहिए और इसके लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। हालांकि, 13 करोड़ मतदाताओं के नाम हटाए जाने और कथित साजिश से जुड़े ये आरोप टीएन चौबे के बयान पर आधारित हैं।

टीएन चौबे ने कहा कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त को केवल पद से हटाने की मांग तक मामला सीमित नहीं रहना चाहिए। उनके खिलाफ लगाए गए आरोपों की गंभीरता को देखते हुए कानूनी कार्रवाई भी होनी चाहिए। उन्होंने देशद्रोह का मुकदमा चलाने की मांग करते हुए कहा कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया और मतदाताओं के अधिकारों से जुड़े किसी भी कथित खिलवाड़ को सामान्य मामला नहीं माना जा सकता। उनके अनुसार, यदि निर्वाचन प्रक्रिया की निष्पक्षता प्रभावित करने की कोशिश हुई है, तो इसके लिए जिम्मेदारी तय करना आवश्यक है।

उन्होंने यह भी कहा कि लोकतंत्र की मजबूती निष्पक्ष चुनाव और स्वतंत्र निर्वाचन व्यवस्था पर निर्भर करती है। मतदाता को अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार तभी सुरक्षित रह सकता है, जब मतदाता सूची तैयार करने से लेकर मतदान और मतगणना तक की पूरी प्रक्रिया पारदर्शी हो। ऐसे में निर्वाचन आयोग की कार्यप्रणाली को लेकर उठने वाले सवालों का जवाब देना जरूरी है। कांग्रेस नेता ने अपने बयान के माध्यम से विपक्षी इंडिया गठबंधन की ओर से मुख्य निर्वाचन आयुक्त के खिलाफ उठाए गए विरोध को सामने रखा और उनके पद पर बने रहने को लेकर गंभीर आपत्ति जताई। बक्सर में दिए गए इस बयान के बाद मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ विपक्षी गठबंधन की ओर से लगाए जा रहे आरोपों और उन्हें पद से हटाने की मांग का मुद्दा एक बार फिर चर्चा में आ गया है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मतिउर्रहमान द्वारा अजीमाबाद प्रिंटर्स, आर. सी. एफ./105, ग्राउण्ड फ्लोर, बी. एच. कॉलोनी, भूतनाथ रोड, कंकड़बाग, पटना- 800026 बिहार से मुद्रित एवं अमला टोली, मेन रोड़, बक्सर -802101, बिहार से प्रकाशित, संपादक- मतिउर्रहमान, E-mail:- qalamlok@gmail.com, Regn. No. BIHHIN/2017/72480